सोन्हगर गन्धक अन्वेषी

डा. प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन'



सोन्हगर गन्धक अन्वेषी

डा. प्रफुल्ल कुमार सिंह मौन

(व्यक्ति/व्यक्तित्व)

संपादक

राम भरोस कापड़ि भ्रमर



प्रकाशक

जनकपुर ललित कला प्रतिष्ठान

प्रकाशकीय

डा. प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन' मैथिली संसारक हेतु नव नाम नहि थिक। हुनक नेपाल प्रवासक दश वर्ष रातुक्कका माटि–पानिक सैयत देबामे बीतल अछि। जे एखनो धारि जारी अछि। एहि अक्षर पुरुषक अभ्यर्थना जं अक्षर पुष्पसं कएल जाए तं ओ सार्थक प्रारंभ हएत। नेपालक मैथिली साहित्य एहि माने मे कनेक बेसीए एकांची रहल अछि।

एहनमे ई प्रतिष्ठान पहिल बेर किछु हटि कऽ एहि संग्रहक प्रकाशनक जिम्मा लेलक अछि। अपन दू दर्जनसं उपर प्रकाशनक परंपरासं फूट डा. मौनक व्यक्तित्व, कृतित्वपर संग्रहित विभिन्न विद्वान लोकनि आलेखक ई संग्रह ई प्रतिष्ठानक संरक्षक राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर'क सम्पादनमे प्रकाशित करबाक हमरा सभक सौभाग्य अछि। हुनक योगदानकें एहिसँ किछुओ मात्रमे आकलन भ* सकतैक त हम सभी अपन प्रयासकें सफल मानब।

नेपालक मैथिली साहित्य निरन्तर लिखाइत रहल अछि– रचना सभक आपूर्ति द्वारा ओकरा समेटि कऽ पाठकक सोझां राखि देबाक छैक। से काज डा. 'मौन' निरन्तर करैत आबि रहल छथि। हुनक लेखनी ताजन्म एहि चलैत रहओ एहि संग्रह नामे जकां सोन्हिगर माटिक गन्धाकें अन्वेषण होइत रहैक– हुनकासं इएह कामना अछि।

एहि संग्रह प्रकाशनक अभिभारा देबाक हेतु पुनः सहयोगी लोकनि प्रति आभार व्यक्त करैत छी।

जनकपुर ललित कला प्रतिष्ठान
जनकपुरधाम
(नेपाल)

अनुक्रमणिका

कथा सृजन आ कलात्मक बोध

चन्द्रेश

'विदापत'क अन्वेषी

विजय कुमार, शोधाथी

प्रो.'मौन'क संग विताओल किछु क्षण

अयोध्यानाथ चौधरी

'बहुआयामिक प्रतिभाक भण्डार : मिथिलाक डाँ. फ्रुल्लकुमार'

डाॅ. गंङ्गा प्रसाद अकेला

ज्ञानवृद्ध आचार्य मौन

डाॅ. अयुब राईन

'मिथिलाक सीमा झासँ वागमतीधारि होएवाक चाही'

भाषा तथा संस्कृतिविद् डा.मौन

श्यामसुन्दर शशि

महनारक सन्तक संग किछुक्षण

राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर'



<u>आत्म कथ्य</u>

हमर संगी, हमर गुरू : डा. प्रफुल्ल कुमार सिंह मौन

– राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर'

हमरा मोन नहि अछि ठीक, ठीक। प्राय: 1960 ई.क कोनो मास आ दिन छल हएतैक। डा. धीरेन्द्रक वासा पर एकटा मोटका फ्रेमक चशमावला भद्र व्यक्तिसं हमरा परिचय कराओल गेल रहए– 'ई छथि प्रो. मौन। विराटनगरसं आएल छथि।' हम नम्रता प्रणाम कएने रहियनि। विराटनगरसं 'मैथिली' नामक पत्रिका निकालैत छलाह ताही क्रममे इतिहास इंकक हेतु सामग्री संकलनक उद्देश्ये यात्रामे छलाह। संक्षिप्त परिचय भेल। ओ हमर साहित्यिक रूचि आ लेखनसं परिचित रहथि तएँ कनेक बेसीए आप्त देखौलनि। हुनका घुरलाक किछुए दिनक बाद 'मैथिली'क नवका अंक (पांचम् अंक) आएल जाहिमे नेपालक नव लेखनपर विशेष आलेख छपल छल आ तीन गोटेकें खास कऽ प्रस्तुत कसदल गेल छल' राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर', रामनारायण सुधाकर आ अयोध्यानाथ चौधरी जकरा इतिहास पुस्तक (1962ई.)मे यथावत् राखि देल गेल छल।

विराटनगर प्रवावक अन्तिम घड़ी आबि रहल छलैक। विगत सात–आठ वर्षमे अपन अध्यापनक अतिरिक्त ओ अध्ययन, अनुसन्धान बेसी कएलनि। झापा, मोरंग, सुनसरि, सप्तरी, सिराहा, धनुषाक ग्रामीण क्षेत्र पुरातात्विक आ सांस्कृतिक भूत, अकूत सम्पदा सभकें खोजि खोजि कऽ समेटलनि। एही क्रममे मल्लेकाल, सेनकाल, शाहकाल आ आधुनिक कालक बहुतो सामग्री आ प्रसंग ज्ञात होइत गेलनि। थारू संस्कृतिपर खास नजरि रहलनि आ ब्रह्मगाममे तकर नीक चर्च अछि। इतिहास पुरा करबाक लेल आधुनिक काल रचना संकलनक क्रममे आएल 'मौन'जीसं हमर नमहर भेंट घांट भेल छल आ सरिपहुँ हम सभ औपचारिकतासं आगां नीकलि गेलहुँ। माने भरि ठेहुन खुजल सम्वादक स्तर धरि पहुँचि गेलहुँ। ई. 2060–69 ई.क अनौपचारिक सम्बन्ध हुनका विराटनगरसं गेलाक बाद आर निखरल आ जहिया कहियो ओ जनकपुर आबथि, हमरे ओत रह' लगलाह–

एकटा संगी जकां हमरा सभक बीच बातचीत होब' लागल। उमेर हमरा सभक सम्वाद आ सम्मानमे कोनो बाधा नहि दैत छल आ ने एखनो दैत अछि। ई पैतालिस वर्षक कड़्गर आत्मियता भरल सम्बन्धक निरन्तरता हमरा सभक विच अद्भूत सम्बन्धक विकास कएने अछि, जाहि कोनो किन्तु परन्तुक गुंजायश नहि होइछ। जहिया-जहिया हम अपन कार्यक्रममे बजौलियनि स्वास्थ्यकें कोनो परबाह बिन कएनहि दौगल अएब ने सुतबाक कोनो आग्रह, ने खान-पीनक फरमाइश। आन दिना घरेमे साग कण खा खूब गप शप होइत रहैक। औपचारिक कार्यक्रममे यथास्थान प्रश्न पूर्वक रहि अपन दायित्वके पुरा कएलनि।

डा. प्रफुल्ले कुमार सिंह 'मौन' मैथिली साहित्यमे की लिखलनि, हुनक मूल्यांकन कएल गेल कि नहि, ओ आन भाषा सेवीसं किए पाछां राखल गेलाह एहि पर बहस करबाक हेतु एहि ठाम उपयुक्त नहि हएत। मुदा एक बात धरि बरोबरि कतौ ने कतौ सुइयाक नोकपर नचैत-नचैत चुभसं ओ कोमल तन्तुकें विस विसा जाइत अछि जे ओ दश प्रतिशत बला जमात आबद्ध छथि तएँ प्राय: कतौ ने कतौ अवडेरल गेलाह। जाहि उंचाई पर लेखन कार्यकें पहुंचौलनि, जो विषय हुनक लेखनक विषय बनल ओ मैथिलीमे कम्मे लोकक पहुंचमे एखनो अछि। टेबुल वा पुस्तकालयक कोठरीमे रचि बसि कऽ किछु लिखैत रहब, आ माटिकें कोरिकऽ नीक नीक फलक स्वाद 'लोक'कें करबैत रहब- दुनूमे बहुतक फरक पड़ैत छैक। निरन्तर किछु नव कएलनि, नव देखलन्हि।

यद्यपि हुनक आयावरी रूप हुनका बौद्ध साहित्य दिश सेहो लऽ गेलनि कतेको रचना ओहि दिश केन्द्रित छन्हि। बाज्जिकाक इतिहास लिखलाह, जो मैथिली साहित्यक मनिषी लोकनिक कोपभाजन सेहो बनलाह। मुदा मूल रूप गाथा अन्वेषक रहलाह, लोक संस्कृतिक दिवाना रहलाह। लोकक विचसं लो तत्त्वक खोलीमे अपस्यांत बनल रहलाह। आ जे सभ बस्तु आएल ओएह मैथिली साहित्यक अमूल्य निधि सभ अछि।

ई त समग्रमे मौनजीक परिचय भेल। हमरा लेखे हुनक परिचय एहिंसा अछि। चाहे ओ हसनपुर रहथि, चाहे महनार हमरा सम्पर्कमे एखनो बरोबर रहैत छथि। कुशल क्षेमक बाद भाषा, साहित्यपर विचार विमर्श होइते हमर निरन्तर 'अर्चना', 'आंजुर', 'गामघर'क प्रकाशन करैत रहलाह अछि। हमरा लगैत अछि एहि पत्रिका सभमे हुनक छपल दर्जनों रीपोर्ताज, निबन्ध आ अन्तरवार्ता सभ नेपालीय मैथिली साहित्यक हेतु उपलब्धिक सामग्री सभ रहल अछि। नेपालीय मैथिलीकें समृद्ध करबाक हेतु हुनक महत्वपूर्ण खोज सभ ऐतिहासिक आ संग्रहणीय रहल अछि। बहुतो लोक बहुत ठाम काम विशेष सं जाइत अछि,

पांच-दश वर्ष रहैत अछि। फेर अपन वतन लौटि अबैत अछि। ओहो दश वर्ष विराटनगर (नेपाल) बैसलाह। भारतीय छलाह, अपन वतन घूरि गेलाह। बस। नहि, हुनकामे 'वस' नहि लागल। ओ 'लाली देखन मैं गयी, मै भी हो गये लाल'त...भ) गेलाह। अर्थात तनसं भारतीय रहलाह, मनसं नेपाली भऽ गेल एतुक्का माटि-पानिमे एनाने डुबलाह जे आइ धरि बाहर निकलबाक मोन नहि होइत छन्हि। एखनो निरन्तर लिखैत छथि- नेपालक लोक सांस्कृतिक आयाम पर। नेपालक भाषा पर, साहित्यपर। कला-प्रवृतिपर। लोकगाथा आ लोक परम्परा पर।

भारतीय क्षेत्रमे जखन साहित्य अकादमीक गोष्ठीमे मैथिली साहित्यक बात होइछ, आलेख पढ़ल जाइछ तं नेपालक साहित्यकें अछोप मानि कऽ देल जाइत अछि। मुदा ओत्तहु जं मौन जी नेपालक मैथिली साहित्यक कोनो ने कोनो पक्ष पर लिखते छथि। आ तखन ओम्हर नेपालक साहित्य जाइत अछि। आइ ओ नेपालक मैथिली साहित्यक जानकारक रूपमें मानल जाइत छथि, जकर दायित्व ओ बखूबी निर्वाह करैत आबि रहल छथि।

नेपालमे प्राथमिक कक्षासं एम.ए./पी-एच.डी. धरि मैथिलीक पढ़ाई होइ छैक। मुदा इतिहासक कोनो समुति पोथी नहि रहने विद्यार्थीक कठिनाइ होइत छलैक। 1962ई.मे प्रो. मौनक लिखल इतिहास अप्राप्त छल आ तकरा फोटो कऽ विद्यार्थीमे बांटल जाइत छलैक। तीस-चालिस वितलो पर कोनो नेप मैथिलीक इतिहासकार आगां नहि अएलाह। पठन-पाठनमे होइत कठिनाइ सं बूझल छलनि।

हम जखन साझा प्रकाशन, नेपालक अध्यक्ष भेलहुँ मैथिलीमे प्रकाशन शुभारंभ कएल आ तखने दूटा निर्णय कएल। पहिल नेपालक मैथिलीक सहित इतिहासक प्रकाशन कएल जाए आ दोसर नेपालक मैथिली कथा सभक संग छपल जाए। दुनू विश्वविद्यालयक हु उपयोगी होइक। निर्णयक किछु दिनक बाद हमरा नेपालक सरकारक आदेश सं दोसर पदपर नियुक्ति कएल गेल। साझामे दोसर अध्यक्ष कएलाह। मुदा ओ हमरे सभक विचक लोक रहथि। इतिहास आ कथा संग्रहक प्रसंगकें पुन: उठाओल गेल आ दुनू पुस्तकक हेतु लेखक/सम्पादक लोकनिकें पत्र पठाओल गेल। दुनू ठामसं लगभग दू वर्ष पर पाण्डुलिपि प्राप्त भेलैक। एक महनार (वैशाली बिहार) दोसर पटना (बिहार)सं। बहत्तरि-तिहत्तरि वर्षक डा. मौनकें पुन: ई भार देल गेल रहनि जकरा ओ सहर्ष स्वीकार कऽ जे जतेक भऽ सकलनि करैत पाण्डुलिपि पठा देलखिन्ह। दोसर छलाह डा. रमानन्द झा 'रमण' जे उच्च कोटिक सम्पादन कऽ 'मैथिली : कथा नेपाल' नामसं पाण्डुलिपि पठौलनि। इतिहास छपल।

ओकर नेपाली अनुवाद नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठान छापलक। एहि विच किछु

उत्पासही साहित्यकार लोकनि विड़रो उठा देलखिन्हि- एकटा भारतीय लेखक नेपालक इतिहास लिखि द्वारिका देलखिन्ह। आग्रह-पूर्वाग्रह भेल। कीदन-कहांदन। जे से एहिसं इतिहासक दुनू संस्करण पर कोनो प्रभाव त नहि पड़ल कथा संग्रह लिखल गेल, जकरा बादमे लेखककेक प्रयाससं भव्यताक संग प्रकाशन भेल छैक।

जिनगी भरि नेपालक माटि-पानिक सुगन्धिकें नाकक पुरामे भरने देश-विदेश भगैत रहलाह, ओकरे गीत गबैत रहलाह मुदा किछु गोटेके नाम छुटि गने ओ अनागरिक, अनुपयुक्त आ वागर बना देल गेलक। मुदा तैयो डा. मौन एहि माने मे पूर्ण मौने रहलाह बरु तकरा बादो कएक गोट कार्यक्रम इएह पांगु लेखकक आयोजनमे भेल, ओ अबैत रहलाह, अपन विचार व्यक्त करैत रहलाह अछि। ई उदारता आ मौनजीमे संभव भऽ सकैछ। ओ एखनो अपनाकें एहि धरतीसं अलग नहि मानैत छथि। अस्वस्थ रहथु कोनो खबरि जाइत छन्हि, अएबा लेल छटपटा उठैत छथि।

डा. धीरेन्द्र बनौली भ्रमण पर एकटा रिपोर्ताज लिखने छथि- 'उषा' नेपाल पत्रिकाक हेतु। हमर पहिल परिचय रहए एहि विधासं। उत्सुकता जगौलक। मुदा हमरा प्रेरित कऽ एकटा शिल्प देलक डा. मौनक रिपोर्ताज मात्र। हुनक अनेकों रिपोर्ताज अर्चना, 'आंजुर' आदिमे छपलैक। 'मिहिर' लगाम तक पत्रमे छपैक। हिन्दीक धर्मयुग, साप्ताहिक हिन्दुस्तानमे छपैक। हम एतेक प्रभावित भेलहुँ जे हम अनेकों रिपोर्ताज लिखलहुँ आ ओ विभिन्न पत्र-पत्रिकामे छपल। लोक संस्कृति दिशक झुकाव आ रिपोर्ताज लेखनक रूचि डा. मौनक सान्निध्य आ लेखनेसं हमरामे आएल अछि। तएँ ओ हमर गुरु भेलाह। हमर निरन्तर एकटा संगी, मित्रक संगहि गुरुक रूपमे हुनका मानैत रहाब पाछां इएह मान्यता रहल अछि।

संभवत: इहो कारण भऽ सकैछ जखन हम अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन 2067 साल (2071 ई.)मे काठमाण्डूमे आयोजन कएलहुँ तं डा. 'मौन'कें राष्ट्रपति डा. रामवरण यादव हाथें 'मिथिला श्री' सम्मान प्रदान कराए अतिप्रसन्नता भेल रहए। सत्तहत्तरि वर्षक उमेर होइतो लेखन रूकल नहि अछि। किछु मास पूर्व एकाएक अस्वस्थ्य भऽ जखन पटना उपचारमे छलाह तखन सभतरि चिंताक लहरि पसरि गेल रहैक। फेर स्वस्थ भऽ पुन: लेखनमे आबि गेल छथि आर ओहो उएह माटि-पानिक गन्ध बला समग्रं अर्थात् लोक साहित्यक भुलल-भटकल भेओ सभकें तकैत।

नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानमे रहैत हम लोक साहित्यपर किछु महत्वपूर्ण काज कएलहुँ। जट-जटिनक गीत सभकें व्यवस्थित कऽ रेकर्ड करौलहुँ आ तकार कलाकार सभ द्वारा मंचपर उपस्थित करौलहुँ। अत्यन्त सफल प्रदर्शन रहल तकरा बाद सलहेस लोकगाथाक संकलन कएल। सलहेस नावकें रेकर्ड कऽ तकरा संरक्षित कएलहुँ आ लहेसक जीवन सन्दर्भक अनेकों भ्रान्तिकें समाप्त करबाक हेतु विशेष रूपें सलहेस पर आलेख लिखा गोष्ठीक आयोजन लहान आ सिरहामे कएलहुँ। ओही गोष्ठीसं सलहेसक चित्र पहिल बेर अनुमोदित भेल आ प्रतिष्ठान सं दू खण्डमे लोक नायक सलहेस'क प्रकाशन भेल। तकरा बाद दीनाभद्री पर केन्द्रित गोष्ठीक आयोजन भेल आ दीनाभद्रीक चित्र सार्वजनिक कएल गेल। पुस्तको प्रकाशन भेल। एहि सम्पूर्ण काजमे डा. 'मौन' हमर सलाहकार रहलाह। हम लोक सासहित्य दिश आकृष्ट भऽ किछु करैत रहलहुँ अछि तकरो श्रेय हुनके जाइत छन्हि। निरन्तर उत्साह आ सृजनात्मक सहयोग समे उपलब्ध करैत रहलाह अछि।

अपन दश वर्षक नेपाल प्रवासक क्रममे आ तकरा बादो आइ धरि नेपालक लोक साहित्य आ आनो विधाकें जानबाक, परखबाक एहन नशा लगलन्हि जे आइ धरि हुनका मदहोश कएने छन्हि। ओ सुतैत, जगैत नेपालक मैथिली साहित्यकें जिबैत छथि। सम्भवत: तएँ ओ नेपालक मैथिली साहित्यक इतिहास लिख सकलाह।

एहि ठाम कनेक हुनक लिखल इतिहास मादे फेरसं किछु कह' चाहब। ओ एहु दुआरे जे कछु मित्र सभकें इतिहाससं शिकायत रहलनि अछि जे एहिमे बहुत गोटेक कृति आ नाम समेटि नहि सकल अछि। सभसं पहिने 2062ई ( ) मे एकर प्रकाशन 'मैथिली' पत्रिकाक एक अंकक रूपमे भेल। फेर तकरा पुस्तकाकार प्रकाशन कएल गेल जे नेपालक पहिल इतिहास छल। ओहुमे बहुत रास त्रुटि छलैक। मुदा जं कि तहिया पुस्तकक अभाव रहैक, लेखक गनि-चुनिकऽ सक्रिय छलाह ओहनमे इतिहास लिखबाक चुनौती ओ स्वीकारलनि आ तकरा कोनहुना पुरा कएलनि आ उएह इतिहास विद्यार्थी सभक हेतु संजबनीक काज करैत रहल।

फेर 2068 सालमे 'नेपाल मैथिली साहित्यक इतिहास'क संशोधित, परिबर्द्धित स्वरूप साझा प्रकाशन छपलक। ओहो दू वर्ष धरि बाजारमे आबि विद्यार्थी, जिज्ञाशु सभकें नीक ज्ञान वृद्धि कएलक। बरु भारतमे एहि इतिहासक मांग काफी भेलैक- विभिन्न प्रतियोगिता आ परीक्षाक हेतु सहायक ग्रन्थक रूपमे। जखन एकर अनुवाद दू वर्षक बाद नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानक अनुवाद विभाग करौलक आ प्रकाशनक तैयारी कऽ रहल छल, एकटा समूह एकर उपयोगिता पर प्रश्न चिन्ह लगौलक अनेक तरहक आरोपक संग। नेपाली अनुवाद प्रकाशित भऽ गेल। मुदा एकटा कसक दुनू दिश रहि गेल- आखिर ई भेल की।

इतिहास कहियो पूर्ण नहि होइछ। ई प्रवाहमान नही छैक, जकर ठहराव अर्थ थिक नदीक मृत्यु। से लेखन, प्रकाशनक निरन्तरताकें डिजिटल प्रणाली मे

मात्र निरन्तर अपडेट कएल जा सकैत छैक। हस्तलिखितमे नहि। वास्तवमे ई पाण्डुलिपि साझामे 2066के अन्तमे देल गेल रहैक। ओ सं पूर्व डेढ़ वर्ष धरि एकर तैयारी चललैक। तखन एहिमे समेटल गेल आधुनिक कालक रचना निश्चय 2066 सालसं उपरक छल हएत। एहन मे तकरा बाद प्रकाशन भेल सामग्रीक उपस्थितिक दावी कतेक उचित मानल जा सकैछ। एहि तथ्यकें बिनु बुझने जे वातावरण बनल ओ कोनो तरहें उचित नहि छल। मुदा 'मौन' एहु अपमानकें 'मौन' भऽ पीलनि। आ एखनो ओहि समस्त महानुभावसं ओतबे स्नेह, प्रेम करैत छथि जे तकरा बादो जनकपुरमे भेल कतेको कार्यक्रममे आबि उएह आत्मियता आ प्रेमसं भेटैत रहलाह अछि।

हमरो लगैत अछि- हुनक लिखल इतिहास जं त्रुटिपूर्ण छैक तं दोसरे इतिहास लिखल जएबाक चाही। साढ़े चारि दशक धरि डा. मौनेक प्रतिक्षा करबाक की कारण भऽ सकैछ। जं 2068 सालक इतिहास अपूर्ण अछि तं फेरसं नयां-नयां तथ्यक संग नव इतिहास लिखल जाए आ तखन परखल जाए जे ओ कतेक निष्पक्षपूर्ण आ इमानदार इतिहासकार भऽ सकलाह अछि। अवस्था ई छैक कोनो संग्रहक हेतु अनंरोध कऽ लेल गेल रना जखन संग्रह छपैत छैक तं छोड़ि देल जाइछ आ निष्पदाताक दाबा कएल जाइत छैक। एकटा सामान्य संग्रहमे ई त्रुटि भऽ सकैछ ओ इतिहासकें मात्र दोषी देब कहां धरि उचित अछि।

एखन बहुतो संस्था सभ अछि- लेखक लोकनिक विविध विषयक रचनाक प्रकाशन कऽ रहल अछि। किनको इतिहास लेखनक अभिभारा दऽ तकरा प्रकाशन किए ने कएल जा रहल अछि।

सत्यकें स्वीकार करबाक उदारता देखाएब जरूरी। नेपालक मैथिली साहित्यक इतिहास जय मानेमे एकटा दस्तावेज अछि जे दशक अनवरत सेवा कएनिहार कोनो साधकक साधना थिक। 32 पृष्टमे सोलह उपशिर्षकमे छपल इतिहास लगभग सभ पक्षकें समेटने अछि। डा. 'मौन' ब्रह्मगाम (1972ई.) लिखलनि, थारू लोकगीत (2068 साल), वाल्मिकीक देशमे (1560-63) विदापद (2014ई.)क प्रणयन कएलनि। ई सभ नेपालेक माटिक सुगन्धि सभ अछि। मुदा 'इतिहास' हुनका सरिपहुँ नेपालीय साहित्यक इतिहासमे स्थापित कऽ देलकनि अछि।

एहनो अवस्थामे हुनक निरन्तर चलैत लेखनी आर कतेक सामग्री विछत एहि धरतीसं कहब कठिन, मुदा जे किछु विछाएत ताहिसं एकटा आर नव आयामक स्थापना हएत एहिमे कोनो सन्देह नहि।



<u>आत्म कथ्य</u>

की बिसरी की यादि करी

– डा. प्रफुल्ल कुमार सिंह मौन

हमर जन्म 20 जनवरी 1938 ई. केँ समस्तीपुर जिलाक हसनपुर गाम मे भेल छल। हम बचपनमे दादाश्री हृदय नारायण सिंहक जमींदारी ठाठ-बाठ, पिताश्री वीरेन्द्र नारायण सिंहक आंदोलनकारी भूमिका एवं मातुश्री रामकली देवीक अंतसमे लहराइत वात्सल्यक अलावा माँटिक मूरुत, कपड़ा-लतासँ बनल गुड़िया ओ अरिपनक परंपरित कलाक साक्षात कएने छलहुँ। ओ आइ धरि जड़ीभूत भए विभिन्न संदर्भमे शोध-खोजक लेल अनुप्राणित कएने अछि। प्रकृतित: हम पृथ्वी पुत्र छी, भूमिक संतान छी मुदा हम भूमिक भौतिक स्वरूपक अपेक्षा ओकर संस्कृतिक पक्ष केँ उजागर करबाक संकल्प लेने छलहुँ। उच्च शिक्षाक प्राप्तिक क्रमे ई सांस्कृतिक चेतना विकसित भेल। फलत: बचपनेसँ घुमक्कड़ीक शौक लागि गेल आर देश-देशांतरक यायावरीसँ प्राप्त ज्ञान अपने धरि सीमित नहि राखि ओकरा राष्ट्रभाषा हिन्दीक माध्यमे प्रकाश मे आनबाक उपक्रम आरंभ भऽ गेल।

एखन धरिक जीवन यात्रा (1938-2014) मे प्रसंगक अन्तर्गत शास्त्र-पुराण, इतिहास-पुरातत्त्व, नृतत्त्वविज्ञान-समाजशास्त्र, कला-संस्कृति आदिक संदर्भ सभक संगबाहि लगैत गेल। तखन लागल जे ज्ञान एकटा अनंत सागर थिक। जीवन-जगत ओकरा मंथनमे लागल अछि। विज्ञान ओकरा विश्लेषित कए रहल अछि। आब ई हमरा-अहाँक सामर्थ्य ओ बुद्धि चातुर्यकेँ बलेँ ओकरा उजागर करबमे लागि स्थापित परम्पराक पुनरावलोकन करैत आजुक संदर्भमे ओकर सदुपयोग कए निरंतर आगाँ बढ़ब अपन कर्त्तव्य बुझबाक चाही। किएक तँ समुद्र मंथनसँ बहुत रास रतन ओ नवनीत बहराइत अछि। अहि क्रमे ई ज्ञान भेल जे आइ हम जाहि वैदिक ज्ञान पर गर्व-गुमान कए रहल छी ओकर मूल 'लोक' मे निहित अछि। तैं ओ 'लोकवेद' कहाओल। वैदिक ज्ञान सँ प्राय: सर्वज्ञात अछि मुदा 'लोकज्ञान' उपेक्षित प्राय अछि। आब एहि दिस मनीषी लोकनि केँ विश्व स्तर पर उद्वेलित छथि।

वर्त्तमान सजग पीढ़ीकेँ हमर ई संदेश अछि जे 'पढ़ू बेसी आ लिखू कम'। जतबे लिखि खूब सोचि-विचारि कए। आर अपन लेखनकेँ अंतिम नहि मानू। शब्द ओ अक्षर ब्रह्म थिक, ओ तखने शिलालेखक अर्हता प्राप्त करत, जखन ओ सर्वमान्य होए। सत्यक स्वरूप शाश्वत होइत अछि। यद्यपि देश-काल ओ परिस्थिति-परिवेशक अनुसारे ओकर वाहयावरण किंचित परिवर्तितो होइत रहैत अछि। मुदा सत्यक अहमस्वरूप शाश्वत बनल रहैत अछि जेना जन्म ओ मृत्यु शाश्वत थिक। ओकर प्रभाव ओ दुष्प्रभावक प्रति सावधान रही। साहित्य जीवन-जगतक अहि शाश्वसतासँ परिचित करएवाक एकटा माध्यम थिक।

हमर जीवन यात्रा ओ लेखनक क्रम दू भागमे विभाजित अछि। ओकर भाव ओ विवेच्य भूमि मिथिला ओ मैथिली, नेपाल एवं भारतक अंतर्राष्ट्रीय सीमाक आर-पार मधेस (उत्तर मिथिला) ओ मिथिला (दक्षिण मिथिला) मे विभक्त रहितो अपन समग्रता बनौने अछि। समग्रतामे एकरा साझा साहित्य, साझा संस्कृति ओ साझा इतिहास कहल जा सकैत अछि। तकर विश्वसनीय उदाहरण अछि—कर्णाटकालीन तिरहुत, जकर केन्द्रीय राजधानी सिमरौनागढ़ (वारा, नेपाल) छल। फलतः नान्यदेव सँ हरिसिंह देव, धूर्तसमागम, वर्णरत्नाकर, सप्तरत्नाकर, तलेजू भवानी, कीर्तनियाँ नाटक, विद्यापति, विदापत नाच, सलहेस ओ दीनाभद्री आदि साझा संस्कृतिकेँ प्रत्यक्ष करैत अछि। तिरहुता लिपि, तिरहुताराग, लक्ष्मण संवत, शैव-शाक्त ओ वैष्णव भूमि, बौद्ध प्रभाव, कर्णाटकालीन मूर्तिकला शैली, लोकचित्रकला ओ गायिकी। जाहि संदर्भे हमर पुस्तकाकार प्रकाशित अछि—थारू लोकगीत (विराटनगर, नेपाल, 1968 ई.) नेपालक मैथिली साहित्यक इतिहास (विराटनगर, नेपाल, 1972 ई. काठमांडू, नेपाल, 2011 ई., नेपाली संस्करण, 2013 ई.) सुनसरी (हिन्दी रिपोर्ताज महनार, 1977 ई.) विरचना (हिन्दी नेपाली कथा, विराटनगर, 1969 ई.) नेपालक आधुनिक मैथिली साहित्य (पटना, 1998 ई.), राजा सलहेस, साहित्य और संस्कृति (संपादित, हिन्दी, मुजफ्फरपुर, 2002 ई.) वाल्मीकिक देशमे (मैथिली रिपोर्ताज, महनार 2005 ई.) लोरिकः साहित्य और संस्कृति (संपादित, हिन्दी, दिल्ली, 2011 ई.) मिथिलाक लोकसंस्कृति संदर्भ (निबंध, कोलकाता, 2011 ई.) एवं विदापत (पटना, 2014 ई.)।

हिन्दी ओ मैथिली मे ग्रंथाकार लेखन ओ प्रकाशनक अतिरिक्त प्रकाशित बहुत रास शोधालेखमे किछु विशिष्ट अछि—थरुहट की लोकचित्र शैलियाँ (रंगायन, उदयपुर, राजस्थान, जनवरी, 1970 ई.) रमखेलिया (लोकरंग, उदयपुर, राज. 70 ई, मोरंग का इतिहासबद्ध मैथिली साहित्य (परिषद पत्रिका, पटना अगस्त, 1969 ई.) थरुहट की लोककथाएं (परिषद पत्रिका, पटना जुलाई

1981 ई.), थरुहट का लोक साहित्य (भारतीय लोक साहित्य कोश, दिल्ली खंड-6) नेपाल का वज्रयानी चर्या नृत्य (बोधिचक्र, पटना, 1996 ई.) नेपाल के बौद्धिशिल्प के आयाम (हिमालिनी, काठमांडू, सं. 7, 1998 ई.) आदिक अलावा नेपालक लोकदेवता राजा धनपाल, उत्तरक दिक्पाल भीमसेन, राजा सलहेस, दीनाभद्री, किसनाराम आदि विषप मैथिली निबंध सभ यथा समय संकलित ओ प्रकाशित अछि। नेपालीमे सेहो लिखलहुँ। किछु प्रकाशित निबंध एवं प्रकारक अछि—मोरंग का मैथिली मंत्र : एक विवेचना (हिमालचुली, विराटनगर) नेपाल की आधुनिक मैथिली साहित्य (मधुपर्क काठमांडू) राजवंशी क्षेत्र को सर्वेक्षण यात्रा (प्रज्ञा काठमांडौ), मैथिली लोकगाथाहरुका नेपाली संदर्भ (सिंहावलोकण, जनकपुर) आदि।

हमर सृजन यात्रा कालांतरमे बहुमुखी बनैत गेल—1. लोकसाहित्य, लोकसंस्कृति, लोककला, 2. इतिहास-पुरातत्त्व, 3. प्रचीन नाषायी साहित्य जीर्णोद्धार, 4. यायावरी ओ 5. विविधा। लोकसाहित्यक मंथनसँ लोकगीत ओ गाथागीतक गायिकी, गाथानाच ओ गाथाधारित साहित्य-सृजनक संधानमे हम लेखनक लेल वाध्य भेलहुँ—1. मैथिली लोकगीत (प्रो. हरिमोहन झा अभिनन्दनग्रंथ, पटना, 1983 ई.) 2. मैथिली गाथागीत सभक सामाजिक संदर्भ (अमर अर्चना, लहेरियासराय, ई. , 3. मैथिली लोकसाहित्यक भूमिका (मैथिली प्रकाश, कलकत्ता, जनवरी-फरवरी, 1976), 4. कीर्तनियाँ नाटक : शिल्प एवं अभिनय शैली (पूर्वोत्तर मैथिल, गुआहाटी, सितंबर 2002 ई.), 5. मैथिला लोककला पद्धति (वैदेही, दरभंगा, जून 1958 ई.), 6. मिथिलांचल मे नागसंस्कृतिक पदचिन्ह (अर्पण-10, दरभंगा, 2004 ई), मैथिली गाथानाचक प्रासंगिकता (कर्णामृत, शारदीय 2009 ई.), 8. सीमांत संस्कृति का केन्द्र सिमनौनगढ़ (आर्यावर्त, पटना 19 जून 1996 ई.), 9. बुद्धकालीन परिस्थितिकी (परिषद् पत्रिका, पटना, 10) चापाल चैत्यकी खोज (मुजफ्फरपुर, 1999 ई.), 11. नेपालक इतिहास मे हरिसिंह देव (मैथिला मिहिर, पटना 8.4.1979), 12. सुमसरीक मैथिली लोकगाथा (मैथिली-5 विराट नगर), 13. जातक कालीन मिथिला, (बुद्ध स्मारिका, महनार, 1985 ई.), 14. मिथिलाक धरोहर बलिराजगढ़, (पं गोविन्द झा अभिनन्दन ग्रंथ, पटना, 01997 ई.) 15 नेपाल मे विद्यापति (आंगन-3, काठमांडौ, 2067 वि.), 16. तांत्रिक ओ आनुष्ठानिक नृत्य झिझिया (विश्वज्योति-9, 2012 ई.)क अलावे राजवंशी ओ महाकाली अंचलक सर्वेक्षण यात्रादि प्रकाशित अछि।

अपन सर्वेक्षणक क्रममे बहुत रास पुरावशेष, कलात्मक वस्तु ओ पाण्डुलिपि सभक संकलन कएने छलहुँ, जे हमर जन्मग्राम हसनपुर (समस्तीपुर)

मे संग्रहित अछि। साहित्यक संदर्भमे मंगनीराम झाक 'द्रौपदी पुकार' (धर्मायण, पटना), लक्ष्मीनाथ गुसाईक 'बन्दीमोचन' (बनगाँच महिषी), भंगरमहेश कवि कृत चौहान वंशावली (क्षत्रीय जात, पटना) एवं संत बुनियाद दास (परिषद पत्रिका पटनाक संपादित रूप) प्रकाशित अछि। अखनो बहुत रास पोथी अप्रकाशित अछि। मुदा, हमर 'मोरंग पदावली (पटना, विदापत मे संकलित, पटना 2014 ई.) सेनकालीन मैथिली अभिलेख (मैथिली विराटनगरक अंक सभ मे प्रकाशित) एवं नेपालक शिलोत्कीर्ण मैथिली गीतक भूमिका प्रकाशित अछि।

केओ-केओ कदाचित व्यंग्यमे कहैत छथि जे अहाँ मौन छी मुदा ओ मौनक ब्रह्मत्वसँ संभवत: अथवा इर्ष्यावश अपरिचित जकाँ छथि। हमर अभाग हुनक नहि दोष। हमर गुरु डा. सुरेन्द्र मोहन प्रसाद लिखने छथि— एकटा मौन जे हृदयसँ प्रफुल्ल अछि। नेपालक पूर्व प्रधानमंत्री मातृका प्रसाद कोइराला हमरा मुँखसँ मौन ओ लेखनीसँ मुखरित कहने छलाह। आब लोग हमरा मौनजी कहथु अथवा मुखरजी। हम जे छी से छी, आब उपमा जे देल जाय खाहेँ खुजि कऽ अथवा लजा कऽ।

भारतीय लोककला मंडल, उदयपुर (राजस्थान) सँ प्रकाशित 'रंगायन' ओ 'लोककला' पत्रिकाक संपादक प्रियवरश्री डा. महेन्द्र भानावतसँ प्रथम संपर्क1970-1971 ई. मे भेल छल। ओहिठामसँ हमर मिथिलांचलक गामेगाम छिड़ियाएल लोकदेवी-देवताक प्रति आकर्षण जागल, जे प्रथमत: अपन जातीय परिवेशमे पूजित छथि। हुनक दूटा रूप छनि—1. गाथानायकक एवं 2. लोकदेवताक। वस्तुत: लोकोद्‌भूत नायकहि अपन शौर्य पराक्रम ओ चमत्कारक बलेँ कालांतरमे लोकदेवत्वसँ मंडित होइत छथि। लोकगाथा तँ हिनक कीर्तिगाथा थिक। हाथी पर चढ़ल सलहेस, घोड़ा पर सवार लोरिक ओ बाघ पर सवार मधुकर बाबा, नागमुखी मनसा सभटा हुनक लोकपरिकल्पित रूप थिक।

मैथिली लोकगाथा दिस हम डा. पूर्णानंद दास (दरभंगा, 1957) एवं डा. ब्रज किशोर वर्मा 'मणिपद्म' (बहेड़ा, 1958 ई.) सँ प्रेरित भऽ एकटा विशाल गाथाभूमिमे एकाग्र मने रमि गेलहुँ। फलत: गुरुमंत्र पाबि नेपाल, तिरहुत, बज्जिकांचल ओ अंगिकांचल क्षेत्रसँ विजयमल, लवहरि-कुशहरि, नूजागढ़ (सती मांजरि), रइया रणपाल, गणीनाथ-गोविन्द, बसाओन-बखतौर, अमरसिंह-केवल बाबा, भीमसेन, राजा धनपाल आदिक गीत-गाथा एकत्र कऽ ओकर अनुशीलनक काजमे लागि गेलहुँ। आब ओ मैथिली लोकगाथा अनुशीलन'क नामसँ प्रकाशित अछि साहित्य अकादमी, दिल्लीक सहयोगें। अहि संदर्भमे एखन धरि एकाग्र चिंतन डा. मणिपद्म ओ डा. विश्वेश्वर मिश्रक प्रकाशित अछि। मुदा जाधरि मैथिलीक लोकगाथा मूल रूपें प्रकाशित नहि होएत ताधरि सभटा चिंतन-अनुशीलन बेकार। मात्र चारि पाँचटा लोकगाथाक मूल प्रकाशित अछि। महनार-प्रवासमे हमरा लागल जे किएक नहि एक एकटा गाथाक समग्र मूल्यांकन प्रकाशित कएल जाय। अहि क्रममे सलहेस, लोरिक, दुलरा दयाल ओ दीना भद्रीक अद्यतन सर्वेक्षनात्मक अनुशीलन प्रकाशित अछि। सभटा हिन्दीमे पुस्तकाकार रूपे। नेपालसँ सेहो 'सलहेस' ओ 'दीनाभद्री' प्राय: ओहि तर्ज पर मैथिलीमे प्रकाशित भेल अछि।

हम अखन धरि जे जतेक लिखलहुँ ओहि मे सर्वाधिक लोकसंस्कृति विषयक अछि। मिथिलाक संस्कृति, थरुहटक संस्कृति, कोशीक संस्कृति, महाकालीक लोकसंस्कृति ओ अंग संस्कृति। समग्रतामे एकरा पूर्वांचल भाषा-साहित्य ओ संस्कृतिमे समेकित कएल जा सकैत अछि। संस्कृतिकेँ एकटा व्यापक फलक हम मानैत छी जकर मूल संस्कार ओ संस्कृतिमे निहित अछि। जन्मसँ मृत्यु धरिक संस्कार संस्कारक परिष्कार, लोकदेवी देवता (हमारे लोकदेवी-देवता—डा. मौन, मुजफ्फरपुर, 1999 ई.), अभिजात्य ओ लोक संस्कृति, मंत्रगीत, बेटा-बेटीक विवाह गीत, नेनागीत (मैथिलीक नेनागीत, डा. मौन, मैथिली अकादमी, पटना, 1988 ई. नाच-गान, (विदापत, झूमर, रास, झिझिया, पमरिया, जट-जटिन, डोमकच, आदि) प्रकृति पूजन (सूर्य, नाग, नदी, वृक्ष आदि विषयक निबंध सभ। मिथिला लोक संस्कृतिक संदर्भ (डा. मौन कोलकाता, 2011 ई.) परंपरित लोकचित्र (मिथिला लोकचित्रकलामे राम जानकी (प्रो. उमानाथ झा अभिनन्दन ग्रंथ, दरभंगा, 2003 ई.), कोहबर (चौमासा, भोपाल, 2005 ई.) नैना जोगिन (रंगायन उदयपुर, अक्तू-दिस. 1987 ई.) लोकसंस्कृतिक खोजमे (मिथिला मिहिर, पटना, 26 अप्रैल, 31 मई, 1970 ई.) मालिन (वैदेही) चौदह देवान (मै. अका. पत्रिका), थान ओ गहबरक स्थापत्य, लोकपूजित देवी-देवता ओ गहबर गीत, लोकवाद्य, सोहरसँ समदाउन धरि जे जतेक लोक भंगिमाकेँ पकड़ि सकलहुँ, लिखवाक प्रयास कयलहुँ। ई दृष्टि हमरा राजस्थानसँ प्राप्त भेल छल, ओ रंगायन (उदयपुर), लूर (जोधपुर) चौमासा (भोपाल) मड़ई (विलासपुर) आदिमे यथा समय पृष्ठांकित भऽ गेल अछि। आब वर्तमान पीढ़ी ओहि सभक पुनरावलोकन कए विस्तार देथि।

इतिहास हमर लोकप्रिय विषय क्षेत्र रहल अछि। जनपदीय इतिहासमे 'तिरहुत' विशेष संदर्भित अछि। अपेक्षाकृत मिथिलाक। ओना तँ विदेह, तिरहुत ओ मिथिलाक इतिहास लिखल गेल मुदा मिथिला पुरीक निश्चित पहचान शेष अछि। मिथिला विदेहक राजधानी नगर छल, मुदा आइ ओ सांस्कृतिक जनपदक रूपें लोकख्यात अछि। ओहो दूटा राष्ट्र (भारत-नेपाल) मध्य विभक्त। नेपालक मिथिला केँ जनक, जानकी ओ जनकपुर भेटलनि आर भारतक मिथिला केँ

शिवसिंह, लखिमा ओ गजरथपुर भेटलनि। अहि दूनू सांस्कृतिक भूखंडकेँ विद्यापति सूत्रबद्ध करैत छथि–संस्कृत, अवहट्ठ (अपभ्रंस) ओ देसिल वयना (मैथिली)क माध्यमे। ओ बारह वर्ष धरि लखिमाक संगे बनौली (नेपाल) मे छलाह द्रोणवार राजन्य पुरादित्यक संरक्षण मे।

पर्यटन विषयक सरकारी मास्टर प्लान बनएबाक क्रम मे (2002 ई.) आर ओहिसँ पहिलहुँ हम सांस्कृतिक मिथिला ओ वैशालीक ऐतिहासिक स्थल सभक सुविधानुसार शोध-बोधक दृष्टिएँ घुमि गेल छलहुँ वाल्मीकि नगर, जनकपुर, धनुषा, राजविराज, जलेश्वर, सिमनौरगढ़, मोरंगक हिनपतगढ़, भेड़ियारी, कीचक वन, वराह क्षेत्र, कठमांडौ आदि एवं भारतक पटना (पाटलिपुत्र), नालंदा, विक्रमशिला, विहारशरीफ (ओदंतपुरी), तेलहाड़ा, राजगीर, पावापुरी, इटखोरी (हजारीबाग), बटेश्वर नाथ (पथरघट्टा) नाथनगर, अन्धराठाढ़ी, विस्फी, नौलागढ़, मंगलगढ़, जयमंसागढ़, संघौल, सेहान, बौद्ध वैशाली, इस्लामिक हाजीपुर, लौरिया नंदनगढ़, अरेराज, केसरिया आदि स्थल सभक यायावरीक उद्देश्य छल प्रत्यक्ष ज्ञानक प्राप्ति, जाहिसँ अहम विश्वास बढ़ैत अछि एवं तथ्यान्वेषणमे विष्पक्षता अबैत अछि। फलतः 'बिहार के बौद्ध संदर्भ (महनार, 1991 ई.), बिहार की जैन संस्कृति (वाराणसी 2004 ई.), स्वाधीनता संग्राम मे महनार (महनार, 1985 ई.), मैथिली साहित्यक इतिहास (विराट नगर, 1972 ई. काठमांडौ, 2011 ई.) बज्जिका साहित्य का इतिहास (मुज्जफ्फरपुर, 1995 ई.), अंगिका लोकसाहित्य (पटना 2001 ई.) आदि प्रकाशित भेल।

हम अखन धरिक जीवन यात्रामे यैह बुझलहुँ जे इतिहास ओ संस्कृतिक क्षितिज अनंत धरि विस्तारित अछि जकरा लघु मानव (वामन) कोना नापि लेत? कतेक धरि नापि सकत? अतः पीढ़ीसँ पीढ़ी धरि जँ जिज्ञासा, ओ शोध क्रमक प्रकाशन होइत रहय तँ बहुत किछु ज्ञानक संवर्धन होएत। हम गोलौसी, महंथी, वैशाखीक अपेक्षा 'एकला चलो रे'क सिद्धांते आगाँ बढ़ैत रहलहुँ आर हम कखनो अपनाकेँ एसगर ठाढ़ छदमतर नहि बुझैत छी। इतिहास सत्साहित्येकेँ जीवित राखैत अछि आर एकांत साधक कोनो ने कोनो साहित्यकारे कालजयी होइत छथि खाहें ओ हमर आदर्श मणिपद्म हो, फणीश्वरनाथ रेणु हो अथवा राहुल सांकृत्यायन हो। हम मणिपद्मकेँ 'मिथिलाक राहुल' कहने छलहुँ। हमर 'राहुल सांकृत्यायन के पत्र' (पटना 1998 ई.) एवं 'मणिपद्मक पत्र' (कोलकाता, 2006 ई.) हुनका सभकेँ श्रद्धांजलि स्वरूप अर्पित अछि।

सम्पादक 'सुरसरि', प्रोफेसर कालनी, महनार
(वैशाली) 844506, मो. 09801587972



चरैवेति-चरैवेति

मैथिली लोकगाथा क्षेत्रे

– डा. प्रफुल्ल कुमार सिंह मौन

हमरा लोकनिक वन-उपवन, खेत-खरिहान, नदी, पोखरि-बथान आदिसँ प्राकृतिक आच्छादित जीवन शौर्य पराक्रम ओ शृंगार रससँ आप्लायित गीत-गाथा, रोचक-रोमांचक ओ उपदेशप्रद लोककथा, शाश्वत जीवन मूल्यक संदेशवाही लोकोक्ति आदिसँ भरल ज्ञान विज्ञानक अथाह समुंद्र बनि गेल अछि। अहि ज्ञान सागरमे जतेक गोताखोरी कयल जाय, ओतेक रत्न बहराओत। अहिना मिथिलांचलक गामघर, आंगनक गोसाउन घर-गहबर एवं घूर-बथान, चौपड़ि सभटा कथा गीतादिसँ अनुरंजित, पारंपरिक रीति-रिवाज ओ अनुष्ठानिक आचारसँ कलात्मक भंगिमासँ विन्यसत होइत अछि। वाल्यावस्थामे अपन परिवेशकेँ देखि-सुनि-जानि एकटा कौतुहल भेल, जिज्ञासा जागल तँ घर आंगनक नानी-दादीक कोराकेँ त्यागि गामक गहबर ओ चौपाड़ि दिस घुमय लगलहुँ।

दरभंगा प्रवास (1954-55 ई.) मे हम चंद्रधारि मिथिला कालेजक शिक्षार्थी छलहुँ हिन्दी प्रतिष्ठाक। डा. रामदेव झा सहपाठी छलथि। भारत-भ्रमण प्रो. कृष्णकांत मिश्रक नेतृत्वमे (1956 ई.) कएने छलहुँ। म. म. उमेश मिश्र एवं डा. जयकांत मिश्रक सानिध्य प्रयागमे भेल छल। ग्राम्य परिवेश (हसनपुर, समस्तीपुर) सँ निकलि नागर परिवेशमे हिन्दीक ज्ञानवृद्ध प्राध्यापक प्रो. पूर्णानंद दास एक दिन वर्ग व्याखान मे प्रसंगवश मैथिली लोकगीत ओ लोकगाथादिक विषयमे हमर ग्राम्य चेतनाकेँ जगौलनि। हिनक शोधक विषय छल मैथिली लोककाव्य। फलतः ग्रीष्मावकाशमे गाम आबि चौपाड़िमे गबैत अकलू साहु ओ नथुनी ठाकुरसँ मैथिली लोकगाथा 'विजयमाल' केँ लिपिबद्ध कऽ प्रो. दासक आगाँ राखि देलहुँ। ओ बड़ आह्लादित भऽ हमरा विशेष प्रेरित कयलन्हि। एक दू बैसारमे 'विजयमल'क जतबे संकलनकऽ सकलहुँ ओ हिनक शोध प्रबंध मे (1962 ई.) संकलित एवं मैथिली अकादमी पत्रिका (पटना)क जून-जुलाइ 1982 ई.क अंकमे प्रकाशित अछि। एकटा 'अपूर्ण लोकगाथा विजयमल।' मैथिली लोकगाथाक संदर्भमे गाथा विषयक अध्ययन-अनुशीलनक ई हमर

प्रस्थान विन्दु छल। आइ बिहार राष्ट्रभाषा परिषदक लोक भाषा अनुसंधान प्रशाखामे बिहारक जनपदीय लोकगाथा सभ संरक्षित अछि। आचार्य नलिन विलोचन शर्मा द्वारा प्रकाशित 'लोकगाथा परिचय' (पटना, 1969 ई.) मे विजयमल'क आठटा मैथिली एवं अंगिकाक कंठ प्रति सभ संरक्षित अछि। अहिसँ पहिने डा. ग्रियर्सनक दी सौंग विजयमल (1884 ई.) एवं कुँवर विजई प्रकाशित भऽ गेल छल। एवं प्रकारें विजयमल'क लोकगाथा बहुजनपदीय प्रमाणित भेल। अहिमे वीर ओ श्रृंगार रसक गांगी-यमुनी अंत: सलिलाक रूपें प्रवाहित अछि। कालांतरमे डा. जयकांत मिश्र (इंट्रोडक्शन टू दी फोक लिटरेचर आफ मिथिला इलाहबाद, 1950 ई.) डा. विश्वेश्वर मिश्र (मैथिली लोकगाथा विवेचन, पटना 2002 ई.) डा. रामदेव झा आदि लोकनि आलोच्य लोकगाथाकेँ विवेचित कयलनि। अत: विजयमल'क प्रासंगिकता बढ़ि गेने हम उत्साहित भेलहुँ।

दरभंगा प्रवासमे ज्ञात भेल जे डा. ब्रजकिशोर वर्मा मणिपद्म, (1918-1986 ई.) मैथिली लोकगाथा रत्न सभकेँ बटोरि रहल छथि। एक दिन साहस कऽ डा. मणिपद्मक ओहिठाम बहेड़ा (दरभंगा) असगरे पहुँचि गेलहुँ। ओ हमरा सन अजोह जिज्ञासुकेँ देखि चकित छलाह, मुदा परिचय एवं उद्देश्यकेँ जानि अपन बांहिमे भरि स्नेहिल सत्कार कयलनि। ओ राति भरि जाहि आत्मीयताक संग मैथिली लोकगाथाक संदर्भ सभकेँ विवेचित कयलनि तँ अभिज्ञात भेल जे हम लोकगाथा सागरमे बैसि समुद्र मंथनमे लागल छी। हिनक आवास ऋृषि कुलक आश्रम लागल आर हम अन्तेवासी छलहुँ। विदाकालमे ओ कहलनि जे अहि जनपदीय कण्ठहार सभकेँ ज्ञानक पृष्ठाधार बनाओल जाय। हुनक अहि संदेशकेँ आइ धरि जीवन सूत्र बना लेने छी।

मैथिली लोकगाथाक इतिहास (कर्णगोष्ठी, कोलकाता, 2006 ई.) कार डा. मणिपद्मसँ यथासमय साक्षात ओ संपर्क होइत छल। जखन हम नेपाल प्रवास (1963-1973 ई.) मे गीत ओ गाथाक सर्वेक्षण करैत छलहुँ हिनक एकटा संस्मरणात्मक आलेख 'ओ तीनू' (त्रैमासिक मैथिली, विराटनगर, नेपाल (मे भारतक तीनटा मैथिली सेवीक विषयमे लिखने छलाह—अनंत नारायण लाल दास इंदु (वीरगंज), प्रो. धीरेन्द्र (जनकपुर) एवं प्रो. मौन (विराटनगर) जे आइ सामयिक इतिहासक दस्तावेज बनि गेल अछि। फलत: मणिपद्म कृत महाकाव्य 'अनंग कुसमा' (कोलकाता, 1999 ई.)क भूमिका एवं 'मणिपद्मक पत्र' (कोलकाता, 2006 ई.)क संपादनक सौभाग्य भेटल। साहित्य अकादमी नई दिल्लीक सलाहकार समितिक बैसारमे हिनक साहचर्य मुखसँ लाभान्वित होइत रहलहुँ, मैथिली लोकगाथाक सर्वेक्षणात्मक अध्ययन-अनुशीलनक क्षेत्रमे आइ हम जाहि रूपेँ चर्चित छी ओकर श्रेय डा. पूर्णानन्द दास एवं डा. मणिपद्मकेँ छनि।

नेपाल प्रवास मे पूर्वी नेपालसँ राजा धनपाल, राजा भीमसेनक गाथा एवं सीमावर्ती पूर्णिया क्षेत्रसँ 'मीरायन' लोकगाथाक 'नूजागढ़ प्रसंग' खोजि निकालने छलहुँ। नेपालक मोरंग क्षेत्रमे मैथिली गाथा नायक 'नैका बनजारा'क वणिक क्षेत्र, मेलाचक्र (हा-बाजार), बरदी बनजारा, नैकाक खुनाओल पोखरि, पड़ाव (चानवेला) आदि केँ देखने छलहुँ। 'राजा धनपाल' मोरंग (नेपाल) ओ मोगलान (भारत) केँ सूत्रबद्ध कयने छलाह। 'राजा भीमसेन 'मिथिलांचलक पूर्वी सीमाक दिग्पति एवं राजा सलहेस'क आश्रयक बनल छथि। मैथिली लोकगाथा राजनीतिक सीमाकेँ नहि मानैत अछि। संस्कृतिक कोनो सीमा नहि होइत अछि। आइ आलोच्य मैथिलीक कतेको लोकगाथा अवशिष्ट अछि। 'दोहाय राजा धनपाल' (धर्मयुग, बंबई, 29 मई 1966 ई.) 2. उत्तर के दिकपाल भीमसेन (रंगायन, उदयपुर, सितम्बर, 1982 ई.) 3. जूनागढ़ (मिथिला मिहिर, पटना, 14 मार्च, 1975 ई.), 4. नैका बनजारा (मिथिला मिहिर, 4 मार्च 1684 ई.), 5 आहो राघोनाथ (मिथिला मिहिर, 18 अप्रैल 1971 ई.) 6. फेकु दयाराम (प्रणेता परिवेश, मुजफ्फरपुर, अगस्त, 1983 ई.), 7. रेशमा ओ चूहर (देशकोस, कलकत्ता वर्ष-2, अंक-1, 1982 ई.) आदि।

नेपाल प्रवास (1963-73ई.)क पश्चात महनारक कार्यकाल (1973-1991 ई.) मे एकटा नव किंतु सांस्कृतिक मिथिलांचलक पार्श्ववर्ती जनपद बज्जिकाँचलक तीनटा मुख्य लोकगाथाक सर्वेक्षणात्मक अनुशलीनक सौभाग्य प्राप्त भेल—1. बसावन (लोकगाथाक अमर चरित बसाओन भुइयां, मिथिला मिहिर, 9 मई 1982 ई.) 2. वैशाली के लोकदेवता बखतौर (रंगायन, अप्रैल 1980 ई.) 3. पलवैयाक गनीनाथ (संकल्प लोक, लहेरियासराय, 1986 ई.), 4. कारिख पंजियार (वैशालीक लोकदेवता कारिख पंजियार, मिथिला मिहिर, 23 जनवरी, 1986 ई.)। कालांतरमे डा. महेन्द्र नारायण राम मैथिली महागाथा कारिख पंजियार (खुटौना, मधुबनी, 2002 ई.) एवं डा प्रफुल्ल कुमार सिंह मौन 'जय गरीब नाथ।! जय गोविन्द (जनकपुर, 2011 ई.) गाथायी वृतक अनुशीलन पुस्तकाकार रूप मे प्रकाशित कयलनि। बज्जिकांचल मे जँ गामेगाम लोकगाथा सभक खोज कयल जाय तँ अनेक गाथाक अपलब्धि संभव अछि। हालेमे हमरा रोसड़ा (समस्तीपुर) क्षेत्रसँ धन्नू राउत'क गाथाक विश्वसनीय सूचना प्राप्त भेल अछि। धन्नू भगत यदुवंशी गाथानायक एवं दुधारू पशु सभक संरक्षक लोकदेवता छथि। कोनो लोकगाथाक जीवंत बनल रहबाक मुख्य कारण

अछि देवोपम उज्जवल चरित्र, लोक कल्याणक भावना, लोकआस्थासँ सम्बद्धता एवं लोकानुरंजकता अर्थात गायकी, नाचगान एवं आनुष्ठानिक पूजनोत्सव।

मैथिली लोकगाथा सर्वेक्षणात्मक अनुशीलन प्रथमत: हिन्दी, मैथिली, नेपालीक विभिन्न पत्र-पत्रिका सभमे स्फुट रूपे ँ प्रकाशित अछि। पाठकीय अभिरुचि एवं शोधात्मक दृष्टिक विस्तार भेने आब ओ विस्तृत अध्ययन-अनुशीनलनक विषय बनि गेल अछि। हमर लिखित मैथिनी पुस्तक 'ब्रह्मग्राम' (बुक सेन्टर, टावर चौक दरभंगा, 1972 ई.) एवं 'वाल्मीमिक देश मे (रचनाकार प्रकाशन, महनार, वैशाली, 2005 ई.) मे अधारभूत तथ्य सभ संकलित अछि। आश्चर्य तँ तखन होइत अछि, जखन हसनपुरक लोग 'विजयमल' ओ बुधपुराक लोग 'वंशीधर वाभन'क गाथाक नामो नहि जनैत छलाह। दिल्ली सँ एकटा स्कालरक संग आएल 'माध्यम' सँ ई जनतब भेल। दोसर दिस पेरिस (फ्रांस) सँ गनीनाथक गाथायी अनुशीलनक क्रम मे हमरा ओहिठाम आएल छलीह—चैम्पियन कैथरिन। जिज्ञासा प्रबल हो तँ समुद्रक तल ओ पर्वतक शिखर धरि पहुँचव असंभव नहि। पश्चात अपन लोकगाथायी अध्ययनक एकटा विस्तृत क्षितिजक निर्माण कयलहुँ—1. मैथिली लोकगाथाक सामाजिक संदर्भ (कर्णामृत, कोलकाता, शारदीय, 1997 ई.) 2. मैथिली लोकगाथाक नेपालीय संदर्भ (वैदेही, दरभंगा, मार्च 1991 ई.) 3. गाथाधारित लोकनाच, 4. लोकगाथाधारित औपन्यासिक रचना, 5. लोक गाथानायक बनाम लोकदेवता, 6. लोकगाथाधारित जनपदीय चित्रमाला, 7. लोकगाथा विशेष : समग्र संदर्भ, 8. तुलनात्मक अध्ययन आदि।

गाथाधारित लोकनाचक परंपराक सशक्त प्रेषनीयता, लोकानुरंजकता, लोक कल्याणकारी संदेश, लोकोद्भूत चरित आदिक कारणे आब ओ नागरमंच धरि पहुँचि गेल अछि। जेना सलहेस, लोरिक, दीनाभद्री, नैकाबनजारा, सती बहुला आदिक लोकनाचक परम्परा आब आधुनिक मंचक अनुसार संशोधित ओ परिवर्धित रूपमे प्रदर्शित भऽ रहल अछि। हम स्वंय सलहेसनाचक ग्राम्य रूपमे प्रस्तुत नरहन (समस्तीपुर) मे, पारसीथियेसँ प्रभावित रूप गढ़महिसौथा (नेपाल) मे एवं नागरमंचीय प्रस्तुति बधुबनी एवं पटनामे देखने छलहुँ। तहिना सती बिहुला'क ग्राममंचीय प्रस्तुति नरहन ओ नागरमंचीय प्रस्तुति भागलपुरमे देखने छलहुँ। सरहेस एवं दीनाभद्रीक लोकगाथाक गायकी ओ नाच प्रस्तुति भारत ओ नेपालक सीमांत क्षेत्र मे बेस लोकप्रिय बनल अछि। अत: दुनू लोकगाथाक समग्र मूल्यांकन हमरा संपादनमे प्रकाशित अछि—1. राजा सलहेस : साहित्य और संस्कृति (नमिता प्रकाशन, मुज्जफ्फरपुर, 2002 ई.) तहिना नेपालसँ रामभरोस

कापड़ि 'भ्रमरक' संपादनमे 2. लोकनायक सलहेस (नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठान, काठमाण्डू, 2013 ई.) हमर मार्गदर्शनमे प्रकाशित अछि। 'दीनाभद्री : साहित्य और संस्कृति' हमर संपादनमे 'सुरसरि' त्रैमासिकीमे धारावाहिक रूपे ँ प्रकाशित अछि। 4. 'लोरिक : साहित्य और संस्कृति' हमर संपादन मे मीनाक्षी प्रकाशन, नई दिल्लीसँ प्रकाशित (2011 ई.) अछि। एवं : दुलरादयाल साहित्च और संस्कृति हमर संपादनमे दिल्लीसँ प्रकाशनाधीन अछि। आलोच्य संकलन ग्रंथ सभमे लोकगाथानायकक समस्त संदर्भित तथ्य सभ विवेचित अछि। एवं प्रकारे हमर योजना अछि जे मैथिलीक एक-एकटा गाथाक समग्र मूल्यांकनक प्रस्तुतिसँ मैथिली लोकगाथाकोशक व्यापक कैनवास बनत। अहि संदर्भमे हमर लिखल आलेख—'जनपदीय लोकगाथाओं का तुलनात्मक अध्ययन' (उत्तर प्रदेश, अगस्त, 2013 ई.) प्रकाशित अछि। तहिना हमर मार्गदर्शनमे 'दीनाभद्री' रामभरोस कापड़िक संपादनमे नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठान, काठमांडू (नेपाल सँ 2013 ई.) सँ प्रकाशित अछि। कियेक तँ सलहेस ओ दीनाभद्री साझा संस्कृतिक प्रतिनिधित्व करैत छथि।

एम्हर मैथिली भाषी नेपालक 'किसनाराम (उपहार, मनीगाछी, बधुबनी, 2012 ई.), वीर वासओन (वैशाली जिला स्थापना स्मारिका, हाजीपुर, 2012 ई.) जयसिंह (रउताही, छतीसगढ़, 2010 ई.) रइया रणपाल (नेमिकानन, जनकपुर, नेपाल अक्तू-दिस-2007 ई.) सीताचरित की उत्तर गाथा लवहरि-कुशहरि (धर्मायण, पटना), लवहरि-कुशहरि की सृजन भूमि (रामरसायन, मोतिहारी, 2014 ई.) सारंगा सदावृज (मिथिला मिहिर, प्रथम पक्ष, जून 1987 ई.) कोयला वीर (विश्व ज्योति, राँची, 2013 ई.) गोरैया वीर (लोकवाणी, पूसा, समस्तीपुर, 2014 ई.) आदिक अतिरिक्त लोकगाथामे दलित चेतना (भागलपुर, 2009 ई) प्रकाशित अछि। लोकगाथा गायन, संकलन, संपादन, अनुशीलन आदिक संदर्भमे हमर किछु क्षेत्रानुभव अछि।, जकरा साझा करब आवश्यक अछि। विजयमल'क लोकगाथा गायनसँ पहिने गाँजाक चिलम सोंटब अनिवार्य माननलि जाहिसँ हुनका स्मृतिके ँ ताजगी भेटनि। मुदा बसाओन भुइयांक गायक डाँरमे मृदंग बान्हि नाचय लागल, मृदंगक तरंग पर गाथायी पंक्ति सभ स्वत: सुशृंखलित भऽ जाइत अछि। शेष गाथा गायक 'सुमिरन (देवी देवता सभक स्मरण) ओ 'बन्हैन' (दिकपति वंदना) के ँ अपनबैत छथि, जाहिसँ गाथागान निर्विघ्न संपन्न भऽ सकय। 'भगैत' अध्यात्मिक परिवेश बनबैत अछि।

प्रत्येक लोकगाथा गायनक लेल विशेष लोकवाद्य विर्धारित अछि। उदाहरणार्थ सलहेसक लेल ओढ़नी, बसावन ओ बख्तौरक लेल मानरि (मृदंग),

दीनाभद्री लेल मृदंग, आल्हारुदलक लेल ढोल, गोपीचनक लेल सारंगी, कारिख पंजियाक लेल मानरि आदि निर्धारित अछि। डा. पुष्पम नारायण सांगीतिक दृष्टिसँ मैथिली लोकगाथा सभक अनुशीलन कयने छथि–'मैथिली लोकगाथाएं : संगीत की दृष्टिमे' (शिवालिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2009 ई.)। तहिना मैथिली लोक नाट्य अंतर्गत गाथायीनाचक विस्तृत अध्ययन महेन्द्र मंलगिया (मेलोरंग, नई दिल्ली) एवं डा. सुनील ठाकुर (मिथिला के परंपराशील नाटकों का सांगीतिक आधार–1300 से 1900 ई.) आदि प्रकाशित अछि। इतिहासक दृष्टिसँ चौदहम सदीक ज्योतिरीश्वर कृत 'वर्णरत्नाकर'मे लोरिक नाच अर्थात लोरिकाइनक गाथायी नाचक उल्लेख प्राप्त भेल अछि। एवं प्रकारे मैथिली लोकगाथाक विस्तार हंसालय ओ कमलालयसँ शंखालय धरि देखना जाइत अछि।

मैथिली लोकगाथाक तात्विक अनुशीलनक लेल ओकर स्थापत्य कथावृत, पात्र, भाषा-शैली, संदेश, कलात्मक परिवेश–गायकी, गीत-संगीत, नृत्य-अभिनय, चित्र ओ मूर्ति, वाद्य-वादन, लोकोत्सव, देवजनित प्रतिष्ठा, आधुनिक साहित्य सृजन पर प्रभाव आदिक व्यापक दृष्टि अपेक्षित अछि। उदाहरणार्थ नायिका प्रधान एकटा बहुजनपदीय मैथिली लोकगाथा 'सती बिहुला'केँ लेल जाय। 'सती बिहुलाक सृजन नागशक्तिक प्रतिष्ठापन ओ नाग पूजाक विस्तारक अलावा नारीक सतीत्व बलक महत्ताक प्रतिपादनार्थ भेल छल। अंग जनपदक राजधानी चम्पा आलोच्य लोकगाथाक केन्द्रीय भूमि थिक। प्रकारांतरसँ अहिमे शैव पर शाक्तक विजय देखाओल गेल अछि। गाथाक मानवी पात्र बिहुला, चन्दू सौदागर एवं दैवी पात्र सर्पयोगिनी विषहरी सर्वाधिक सक्रिय पात्र छथि। सर्पदंशसँ मृत अपन सद्य: विवाहित पति वाला लखेन्दरकेँ सतीत्व बल पर बिहुला बहुआयामी संघर्षकेँ झेलैत पुनर्जीवित कऽ घर घुरलथि। कश्मीरक अनंतनागसँ असम ओ बंगालक मनसा पूजन धरि पसरल अछि। अहि बहुजनपदीय लोकगाथासँ अनेक रचनात्मक ओ कलात्मक आलाप जुड़ल अछि–1. मंजूषा (झांप) कला, 2. गाथायी पात्रक पाथर, धातु एवं माँटिक लोक परिकल्पित मूर्ति, 3. आनुष्ठानिक पात्रक संरचना, 4. गाथा गायन, 5. सती बिहुलाक नाच, (नागपंचमी) एवं साहित्य सृजन (डा. मीरा झाक हिन्दी उपन्यास बिहुला विषहरि। नाग संस्कृतिक पृष्ठभूमि ओ परंपरा मे सती बिहुलाक हमर गाथायी मूल्यांकन प्रकाशित अछि–1. कोशी अंचल मे नाग पूजाक परंपरा (कोशी संस्कृति, डा. रेणु सिंह, भारती प्रकाशन, वाराणसी, 2009 ई.), 2. 'मिथिला मे नाग संस्कृति के परिदृश्य' (मड़ई, रायपुर, छत्तीसगढ़, 2007 ई.) आदि। मैथिली मे लोकगाथाधारित उपन्यास लेखनक प्रवर्त्तन डा. मणिपद्म कयलनि, जकर विस्तार अंग जनपद (भागलपुर)क हिन्दी गाथाधारित उपन्यास मे देखना जाइत अछि–सलेस भगत (डा. अमरेन्द्र), बिहुला-विषहरि (डा. मीरा झा), नटवर दयाल (रंजन), रेसमा-चौहरमल (दिनेश तपन), विशु राउत (अंजनी कुमार वर्मा) आदि।

धर्म ओ दर्शनक उद्देश्य अछि–मनुष्यक सांस्कृतिक परिष्कार। अर्थात पश्वाचारसँ मनुष्याचार एवं मनुष्याचारसँ दिव्याचार। दिव्याचारसँ मनुष्य देवत्व मंडित भऽ जन सामान्यसँ उपर उठि जाइत अछि। दोसर शब्दावलीमे जनपदीय गाथानायक 'मनुखदेवा' (मैन गॉड)क रूपेँ जनपदीय जीवनमे प्रतिष्ठित भऽ जाइत अछि। सलहेस, दीनाभद्री, मनसाराम, किसनाराम, बसावन, बखतौर, कारिख पंजियार, विशु राउत, गनीनाथ आदि मनुष्यक रूपेँ अवतरित भऽ अपन शौर्य-पराक्रम ओ बुद्धि चातुर्यसँ लोककल्याणक मार्ग प्रशस्त कयलनि। अहि दिव्यालोकित एवं देवत्वमंडित लोकगाथानायक सभक सामाजिक ओ सांस्कृतिक पृष्ठभूमिमे हमर मूल्यांकन प्रकाशित अछि–1. 'हमारे लोक देवी-देवता' (समीक्षा प्रकाशन, मुजफ्फपुर, 1999 ई.) एवं 2. मिथिलाक लोक संस्कृतिसंदर्भ (कर्णगोष्ठी प्रकाशन, कोलकाता, 2011 ई.)। लोक गाथानायकक देवत्वमंडित आकलनक प्रेरणा भारतीय लोककला मंडल, उदयपुर (राजस्थान) द्वारा प्रकाशित 'रमायन' सँ 1970क दशकमे प्राप्त भेल छल।

सम्प्रति साहित्य अकादमी, नई दिल्लीक 'स्कालर एट रेजिडेंस' परियोजनाक अंतर्गत 'मैथिली लोकगाथा–अनुशीलन'क काज कऽ रहल छी, जे आब पूर्णताक स्थितिमे अछि। मैथिलीक लोकगाथा सभक संख्या डा. रामदेव झा बहत्तर मानैत छथि मुदा चन्द्रेश सक सयसँ अधिक मानैत छथि। 'मैथिली लोकगाथा अनुशीलन'मे चयनित बाइसटा लोक गाथाक आकलन पुस्तुत कयने छी–सलहेस (चूहरसहित), दीनाभद्री, नैका बनजारा, दुलरा दयाल (कमला सहित), कारिख पजियार (ज्योति पंजियार सहिता), लोरिकाइन, लवहरि-कुशहरि, सती बिहुला, बसावन (बखतौर सहित), बाबा उमर सिंह (केवल बाबा सहित), मीरायन मंजरि सहित), राजा भीमसेन, रइया रणपाल (घुघली घटमा सहित), गनीनाथ गोविन्द, किसनाराम, ढोला मरुअनि, जया सिंह, कोयलावीर, गोरैया वीर, राजाधनपाल, गरीबन भुइयां, विजयमल। यद्यपि किछु मैथिली लोकगाथा मूल रूपें प्रकाशित अछि मुदा अधिकांश अप्रकाशिते अछि। शेष शोध प्रबंधमे मुद्रित रूपें संकलित अछि। एखन धरि जतेक अध्ययन-अनुशीलन प्रस्तुत कएल गेल अछि, ओकरा प्रामाणिक मानव उचित नहि किएक तँ अधिकांश लोकगाथा मूल रूपें अप्रकाशिते अछि।

अहि तरहें 'मैथिली लोकगाथा क्षेत्रे' जे कार्यारंभ विजयमालसँ कएने छलहुँ ओ आइ 'मैथिली लोकगाथा अनुशीलन' धरि पहुँचि गेल अछि। शक्ति सामर्थ्य ओ संसाधनक अभाव अखरैत अछि तथापि किछु आर करबाक अभिलाषा शेष अछि। यद्यपि लोक साहित्य ओ संस्कृति क्षेत्र दिस जिज्ञासु लोकनिक अभिरुचि बढ़ल अछि मुदा जमीनीस्तर पर काज करबाक विशेष आवश्यकता अछि किएक तँ लोकगाथा गायनक परंपरा ह्रासोन्मुख अछि। अत: गाथायी सर्वेक्षण ओ संकलन अनिवार्य अछि।

प्रोफेसर कालनी, महनार (वैशाली) 844506
मो. 9801587972



<u>संकलित</u>

प्रो. मौनक-मैथिली कृतित्व

1. ब्रह्मग्राम (मैथिलीक आंचलिक रिपोर्ताज), बुक सेन्टर, टावर चौक, दरभंगा, 1972 ई.।
2. नेपालक मैथिली साहित्यक इतिहास (साहित्येतिहास), मैथिली साहित्य परिषद्, विराटनगर, नेपाल 1972 ई.।
3. मैथिली (त्रैमासिकक संपादन) मैथिली साहित्य परिषद्, विराटनगर, नेपाल 1970-73 ई.। एहिमे नेपालक शिलोत्कीर्ण मैथिली गीत (डा. दामदेव झा) एवं धर्मराज युधिष्ठिर (प्रो. लक्ष्मण शास्त्री) सेहो विशेषांक रूपमे प्रकाशित अछि।
4. नेपालक आधुनिक मैथिली साहित्य, जेनरल बुक एजेंसी, अशोक राजपथ, पटना, 1999 ई.।
5. प्रेमचंद : चयनिक कथा, भाग-1 एवं भाग-2, (मैथिली अनुवाद), साहित्य अकादमी, दिल्ली 1998 ई.। साहित्य अकादमी द्वारा 2004 ई.क लेल अनुवाद पुरस्कर, 2005 ई. मे हैदराबाद।
6. वाल्मीकि देश मे (मैथिली रिपोर्ताज) रचनाकार प्रकाशन, महनार (वैशाली) 2005 ई.।
7. मिथिलाक लोक संस्कृति संदर्भ (चयनित मैथिली निबंध) कर्णगोष्ठी, कोलकाता, 2011 ई.।
8. नेपालक मैथिली साहित्य इतिहास (साहित्येतिहास) साझा प्रकाशन काठमांडो, नेपाल 2011 ई.।
9. विदापत (लोक नाट्य विवेचन, मोरंग पदावली सहित), मैथिली अकादमी, पटना, 2014 ई.।
10. मैथिली लोकगाथा अनुशीलन, रचनकार प्रकाशन, महनार (वैशाली), 2014 ई. मे प्रकाशित।

एकर अतिरिक्त भारत ओ नेपालक स्तरीय पत्र-पत्रिका, स्मारिका अभिनन्दन ग्रंथ, संकलन ग्रंथादिमे शताधिक शोध आलेख प्रकाशित। नेपालक मैथिली साहित्य ओ इतिहास (नेपाली मे अनुदित सेहो पंकाशित अछि। नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठान, काठमाडौ, नेपाल, 2013 ई.।



प्रो. मौन : किछु विशिष्ट सम्मान (मैथिला-मैथिली)

1. मिथिला विभूति (विद्यापति सेवा संस्थान, दरभंगा), 2002 ई.
2. संस्कृति सम्मान (जनकपुर, नेपाल) 2002 ई.
3. साहित्य अकादमी (अनुवाद पुरस्कार, हैदावाद) 2005 ई.
4. मैथिली रत्न (अंत.मै.सम्मे. तिरुपति) 2009 ई.
5. मैथिला श्री (अतं.मै.सम्मेलन, काठमांडौ, नेपाल) 2010 ई.
6. ताम्रपत्र सम्मान (मैथिला महोत्सव, लहेरियासराय) 2012 ई.

<u>संस्मरण</u>

प्रो. मौनजीक संग किछु पल

श्री मान्! अहाँ दिन भरि की लिखि रहल छी? पूर्वाह्न हो वा अपराहन! सीढ़ी चढ़ि मेज धरि अबिते हम एकटा प्रश्न दागि देलियनि। ओ आकांक्ष छलाह।

–'हम अपन जीवन जगतक देखल-भोगल ओ सुनल अनुभव के ँ लिखि रहल छी।' ओ कहलनि।

–अहि सँ की होयत?

–एकटा समकालीन इतिहास बनत। जीवनानुमूतिक एकटा दस्तावेज होइत अछि, ओ कहलनि।'

–'मुदा एकटा लघुमानवक आगाँ विशाल दानव तँ प्रतिरोधक बनि ठाढ़ अछि। अर्थात वामनक आगाँ बलि सन दानवराज।' दोसर कनेक तीक्षण वाणघात कएलहुँ।

–जीवनक सत्यक पटके ँ खोलनिहारक आगाँ प्रतिरोधी दानव पराइत रहल अछि। ओ आत्मविश्वासक संग कहलनि।

–'अहाँ कतेक सक्षम ओ समर्थ छी? हम कहलियनि।

–'आत्मदीपो भवक मंत्र हमरा लग अछि। स्वयं इजोत बनि अज्ञानाधांकार के ँ मेटाऊ। शाश्वत सत्यक दर्शन होयत। हम अपन सामर्थ्यक सदुपयोग कऽ रहल छी। जँ एक एकटा प्रबुद्ध सर्जक ओ चिंतक निष्ठाक संग सक्रिय रहताह तँ जीवन-जगतजन्य सभटा विसंगति दूर भऽ जायत।' हम हुनक व्यक्तित्वक आभाक संग अभिभूत भऽ गेलहुँ।

– 'सतत नमन।'

–सुधांशु कुमार चक्रवर्ती
07739584426



<u>पदचिह्न</u>

नेपाल प्रवास

–डा. रेवतीरमण लाल

डा. प्रफुल्ल कुमार सिंह मौन लगभग दस वर्ष नेपालमे रहल छलाह। ओ विराटनगरक महेन्द्र मोरंग कॉलेजमे हिन्दीक प्रध्यापक रूपमे आएल छलाह। नेपाल प्रवासमे ओ जतेक नेपालक मैथिली साहित्य, संस्कृतिक अध्ययन-अनुसंध ान कएलनि ओतेक काज एहि क्षेत्रमे हमरा जनैत एखन धरि आन केओ नहि कए सकलाह अछि। विशेष रूपें नेपालक पूर्वीय मिथिला क्षेत्रक (नेपालक मोरंग सुनसरी जिलाक) त विपुल संस्कृतिक सामाग्रीक संकलन एवं अध्ययन कएलनि।

ओ ई स्वीकार करै छथि जे ओ नेपाली, हिन्दी, मैथिली वा अंग्रेजी कोनो भाषामे जतेक लिखलनि सभक आधार छल नेपाल (साक्षात्कार-रेवतीरमण लाल)। ओ इहो स्वीकार करै छथि जे साहित्य जगतमे ओ नेपाल विषयक रचनहिसँ स्थापित भेलाह। (ओतहि)।

एहि क्रम मे ओ नेपालक विद्वान साहित्यकार एवं संस्कृति कर्मी सभसँ संपर्क कएलनि जाहि बलें एहन काज संभव भऽ सकल। एहि तरहक नेपालक विद्वान, साहित्यकार एवं संस्कृतिविद् सभ छलाह प्रमुख रूपें डा. डी. आर. रेग्की, सूर्यविक्रम ज्ञवाली, इसान सिंह, चेमसूजोंग, काजीमान, रमेशजंग थापा, जनक लाल शर्मा, तारानंद मिश्र, बालकृष्ण सम, सुन्दर झा शास्त्री, डा. धीरेन्द्र, पं. जीवनाथ झा, डा. रामदयाल राकेश, मातृका प्रसाद कोइराला, यदुवंश लाल चंद्र आदि छलाह। हिनका सभक सहयोग एवं किछु भारतीय विद्वान सभक सहयोगसँ थारू सभक मैथिली लोकगीत, ओ संस्कृति, सेन कालीन मैथिली साहित्यक इतिहास, मोरंग पदावली, उपत्यकाक मैथिली नाट्य परंपरा, विदापत आदिक अध्ययन एवं अनुसंधानके आगू बढ़बैत रहलाह।

जनकपुर एवं राजविराजक मैथिली साहित्यक आधुनिक काल पर अध्ययन कए नेपालमे पहिल बेर नेपालक मैथिली साहित्यक इतिहास लिखलनि जे मैथिली साहित्य परिषद विराटनगर द्वारा प्रकाशित भेल। विराटनगरसँ प्रो. गणेश

लाल, पं. लक्ष्मण शास्त्री आ डा. प्रफुल्ल कुमार सिंह मौन 'मैथिली' नामक पत्रिका प्रकाशित करौलनि। चेकर प्रकाशन विराटनगर मैथिली साहित्य परिषद करैत रहल। एहि पत्रिकामे डा. मौनक अनेक अनुसंधान मूलक रचना प्रकाशित होइत रहल। एहि मे मोरंगक मैथिली लोक साहित्य, मोरंग पदावली, थारू लोकगीत एवं थारू संस्कृतिक अन्य पक्ष सभक अध्ययन प्रस्तुत कएलनि। डा. मौन मोरंगक मैथिली कहबीक सेहो अध्ययन कएलनि संगहि राजवंशी लोकनाट्य रमखेलियाक प्रकाशन सेहो कएलनि।

नेपाल प्रवासमे रहैत डा. मौन नदीक देवी कमला पर सेहो लिखलनि। सुनसरी पर सेहो कथा रिपोर्ताज लिखलनि। सुनसरीक अर्थ होइछ सोन सन। मोरंग मधेशक देवता राजा धनपाल एवं भीम सेन पर सेहो अध्ययन पुस्तुत कएलनि।

एतेक भारी अध्ययन एवं अनुसंधान करब सामान्य गप नहि भऽ सकैछ। जेकर मूलमे छलैक यायावरी प्रवृति। एहि प्रवृतिक लोक जतेक भ्रमण करैछ आ देखैछ-जनैछ ओतेक आओर देखबाक-जानबाक भूख-जिज्ञासा बढ़ैत जाइ छैक। मनक पियास मेटाएब कठिन भऽ जाइ छैक। लोक संस्कृतिक जानबाक पियास हुनका प्रारंभहिसँ रहलनि जहिया ओ गाममे छलाह। ओ कहै छथि ''गामक गहबरमे ढ़ोल पिपही ओ झालिक ताल पर नचैत भगता, थान-बथान पर ऊँच आवाजमे विजयमल गाथा गबैत गायकके ँ गली-गली त्रांत्रिक नाच नचैत झिझियाके एवं घर आंगनक एकांत परिवेशमे नचैत गबैत ओ अभिनय करैत स्त्रीगणके देखि आनंदित होइत छलाह।'' नेपाल अएलाक पश्चात हिनका आगू मिथिला (नेपाल भागक) विशाल अहत्या संस्कृति क्षेत्र छल जकर उद्‌घाटन करब आवश्यक छलैक। जकर साहित्य के प्रकाशन नहि भेल छलैक। नेपालक आधुनिक मैथिली साहित्यक इतिहास एखनो लिखब बाकी छलैक। डा. मौन घुमि-घुमि अध्ययन कएलनि आ जे किछु भेटलनि तकरा पेपाली, हिन्दी, मैथिली, अंग्रेजी सब भाषामे प्रकाशित करैत रहलाह। ओ नेपाली मैथिली परिवेशक लोकगाथा सलहेस, दीनाभद्री एवं अन्य लोकदेवी देवता सभक विशेष अध्ययन कएलनि।

डा. मौन कमला खोंझक दोनवारी संस्कृति होय चाहे कमलाक संस्कृति होय, चाहे मोरंगक राजवंशी संस्कृति होय चाहे सुनसरीक थारू संस्कृति होय ओ लग सँ देखलनि आ सभक विपुल सामग्री संकलन कए अध्ययन कएलनि। ओ अध्ययने नहि कएलनि अध्ययन कए ओकरा विभिन्न भाषामे प्रकाशितो कएलनि। एम्हर आबि किछु वर्ष पूर्व नेपालक मैथिली साहित्यक इतिहास सेहो नेपालक साझा प्रकाशन नामक संस्था काठमांडूसँ साहित्यकार रामभरोस कापड़ि भ्रमरक

सहयोगसँ प्रकाशित भेल अछि।

हिनक नेपाल प्रवासक अवस्थाक नेपालीय मैथिली साहित्य भाषा-संस्कृति मे जे योगदान अछि से अतुलनीय अछि। आब साहित्य संस्कृतिमे एहन रुचि राखएबला जे नेपालक प्रति उदार होय तेहन व्यक्तिक नजरि नहि अबैत अछि।

सं. 'नेमिकाणन', जनकपुरधाम, नेपाल

☐

संस्मरणक छाहरि मे प्रो. मौन

–डा. रामदयाल राकेश

हम स्थानीय पद्म कन्या कॉलेजमे प्राध्यापन कार्यमे नियुक्त भेलाक उपरान्त अध्ययन लेखनक यात्रा प्रारंभ कएलौं। ओइसँ पहिने गोरखापत्र दैनिकक शनिवासरीय परिशिष्टमे मैथिली लोकगीत सम्बन्धमे हमर एकटा लेख प्रकाशित भेल छल। ओहि समयमे प्रफुल्ल कुमार सिंह मौनक नाम कतहुँ पढ़बाक मौका भेटल छल। ओहिमे मैथिली भाषा लिखनिहार सभक संख्या नगण्य छल। गोरखापत्र संस्थानसँ प्रकाशित मधुपर्क मासिकमे मौनजीक थारु लोकगीत सस्वन्ध ी पढ़बाक मौका भेटल छल। इहो सूचना भेटल जे मौन जी बिराटनगर कॉलेजमे प्राध्यापनक काजमे नियुक्त छथि। बड खुशी भेल जे ओ थारु लोकसंस्कृतिमे सेहो अभिरुचिक साथ अनवरत लिख रहल छथि। मैथिली भाषा–संस्कृतिमे हिनका कोनो पोथी पढ़बाक मौका नहि भेटल छल। हमरो कोनो पुस्तक प्रकाशित नहि भेल छल। फुटकर रचना सभ गोरखापत्र दैनिकमे नेपाली भाषामे लिखबाक मात्र अवसर भेटल छल। आओर उहो शनिवारक अंकमे मात्र प्रकाशित होइत छल। हमर उद्देश्य रहल जे मैथिली लोक संस्कृतिक विभिन्न विधाक बारेमे गोरखापत्रमे लिखी किएक तँ मैथिली लोक संस्कृतिक बारेमे नेपाली भाषामे बहुत कम सामग्री प्रकाशित भेल छल। यद्यपि मैथिली भाषा मल्ल कालमे राजभाषाक रूपमे मान्याता प्राप्त कऽ चुकल छल। पंचायत कालमे 'एउटै भाषा एउटै भेष' के नारा सम्पूर्ण अधिराजमे व्याप्त भेल छल। अन्य भाषा सभक बारेमे कोनो अध्ययन अनुसंधान तऽ कोनो पत्र पत्रिकामे साधारण लेख सभक प्रकाशनक बहुत कम अवसर छल। मात्र एकटा गोरखापत्र आ एक दशक बाद मधुपर्क मासिकमे फाटफुट रचना सब प्रकाशित होइत छल। मौनजी मैथिली, थारु आ राजवंशी भाषा संस्कृतिक बारेमे लिखैत छलाह जे स्वागत योग्य बात छलैक। पं. सुन्दर झा शास्त्री काठमाण्डूसँ फूलपात पत्रिका मैथिली भाषामे प्रकाशित करऽमे संलग्न छलाह। फूलपात पत्रिका सेहो स्मारिका के रूप मे प्रकाशित होइत छल। वर्षे एकटा अंक प्रकाशित होइत छल सेहो अंचलाधीश कार्यालयसँ सेन्सर सेहो करबाक नियम छल। तखनो जुझारु मैथिली भाषा सेवी सुन्दर झा शास्त्रीक सेवा सराहनीय मानल जा सकैत छैक। एकटा भाषाक वर्चस्व कालमे मैथिली भाषामे फूलपात प्रकाशित करब लोहाक चना चबाबे वाला कार्य छल। एकाध धोखाधोखीसँ फूलपातमे प्रकाशित भेल मुदा मैथिली भाषा प्रधान कोनो पत्रिका काठमाण्डूसँ प्रकाशित भेल होए एहन कोनो रेकार्ड नहि अछि। बहुत कम लोकनि सभ लेखकक रूपमे परिचित छलाह खास कऽ मैथिलीसँ। एहन विकट परिस्थितिमे आ सरकारक कड़ा रवैयाक कारणसँ मैथिली भाषामे लिखबाक कोनो प्रेरणा नहि प्राप्त छल। तखन मौनजी लेखकक रूपमे ख्याति प्राप्त नाम छल ओहने विपरीत समयमे।

मौनजी सँ हमर प्रथम भेंट कतऽ आ कहाँ भेल एखन स्मरण नहि अछि। तखन बिहार विश्वविद्यालय मुजफ्फरपुर मे हम स्नातकोत्तर शोध के रूपमे वि. अ.आ. सँ प्राप्त छात्रवृतिमे हम पंजिकृत भेलौं। ओ विशेष कार्य पदा. (निरीक्षण) छलाह। हुनक सहयोग एवं सद्भाव हमरा सदा भेटैत छल। एक दिन ओ हमरा मुजफ्फरपुर स्थित मैथिली लेखक सभसँ परिचय करबाक लेल लए गेलाह। कोन कोन लेखकसँ परिचय करौलनि हमरा एखन स्मरण नहि अछि। मुदा हम दुनू गोटे मुजफ्फरपुरक गली गलीमे अवस्थित लेखक सभक आवास पर गेलौं। चाह पिलौं आ गपसप कएलौं से हमरा स्मरण अछि। मौनजी सभ लेखक सभसँ पूर्ण रूपमे परिचित छलाह। मौनजी नेपाल और भारतक मिथिलांचलक सभ लेखकसँ परिचित छलाह। हुनका साथे हमरो सभसँ परिचय भेल। पोस्ट डक्टरल विषय छल हिन्दी और नेपाल नयी कविता : तुलनात्मक अध्ययन। हम विश्वविद्यालयक हिन्दी विभागसँ सम्बद्ध छलौंह। हमर निर्देशक छलाह डा. आशा कुमार। मुदा हम पोस्ट डक्टरल रिसर्च पूरा नहि कऽ सकलहुँ। बीच मे छोड़क दुःख एखनो सता रहल अछि। भारत सरकार के (ण्ळ्णब्) के छात्रवृति के रकम सेहो आकर्षक छल तथापि पारिवारिक कारणसँ हम अनुसंधान काजके आगा नहि बढ़ा सकलौं। मौनजीसँ नीक सम्बन्ध स्थापित भऽ गेल छल तखनल निरन्तर सम्पर्कमे नहि रहि सकलौं। त्रिभुवन विश्वविद्यालयसँ स्वाध्ययन विदा लऽकऽ हम गेल छलौं। एतऽसँ कोनो आर्थिक सहयोग भेटबाक कोनो आशा नहि छल। हम अनुसंधान कार्यमे रहितहुँ समाप्त नहि कऽ सकलौं।

काठमाण्डू आएला के बाद हुनक लिखल पोथी 'मैथिली साहित्यक इतिहास' पढ़बाक अवसर प्राप्त भेल। हुनक एहि पोथीक ऐतिहासिक महत्व निर्विवाद रूपमे प्रमाणिक छैक किएक तऽ नेपालक मैथिली साहित्यक सविस्तार उल्लेख नहि भेटैत छल। ओ पोथी मे प्राप्त होइत छैक। ई पुस्तक एकटा प्रमाणिक पोथीक रूपमे प्रमाणित दस्तावेज छलैक। एहि पोथीमे हमरो नामोल्लेख भेलाक

कारण हम हुनक आजीवन अनुग्रहित छी। किएक तँ हम कोनो लेखक नहि भेलाक उपरान्तो हमर नामक उक्त पोथीमे समावेश भेल छल।

आब त एकटा संशोधित, परिवर्द्धित संस्करण बाजारमे आबि गेल छैक, जे साझा प्रकाशन छपलक अछि। नेपालक मैथिली साहित्यमे एकर उपयोगी अत्यन्त पैघ छैक। एकर नेपाली संस्करण नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठान छपलक अछि।

मौनजी संपूर्ण मिथिलांचलमे एकटा लोकप्रिय आ ख्यातिप्राप्त लोक संस्कृतिविद्क रूपमे विख्यात नाम अछि। मिथिला संस्कृतिक हरेक विधामे हुनक योगदान अभिनन्दनीय मानल जा सकैत अछि।

हुनक बहुत रास पोथी सब सेहो लोकसंस्कृतिमे प्रमाणित भऽकऽ प्रकाशित भऽ चुकल छैक। हुनक सहस्र सहस्र साधुवादक साथ सम्पूर्ण मिथिलांचलक मानसपुत्र स्मरण करत। एहिमे कोनो शंका उपशंका करबाक लेशमात्र संभावना नहि छैक।

हुनका मिथिलांचलक लोक संस्कृतिक प्रतिमूर्ति मानल जा सकैत छैक। बहुत रास मैथिली संस्कृतिक ज्ञात अज्ञात एवं ओझेमे ओझराएल विधाके ँ अध्ययन एवं अनुसंधान कऽ प्रकाशमे लावक श्रेय प्राप्त छैक। हुनक हिन्दी भाषामे लिखित 'हमारे लोक देवी देवता' एकटा उत्कृष्ट एवं उदाहरणीय कृतिक रूपमे स्मरणीय एवं संग्रहनीय मानल जा सकैत छैक।

मौन वास्तवमे मौन नहि भऽ कऽ प्रखर, प्रख्यात आ प्रसिद्ध रचनाकार छथि। उपनाम मौन रहितो तहन ओ बड़ पैघ वाचाल वक्ताक रूपमे सेहो विख्यात छथि। हुनक उपनाम मौन एकटा सार्थक संदेश संप्रेषित करवा मे समर्थ आ सफल छैक। मैथिलीमे अनेक साहित्यकार उपनामसँ रचना कएने छथि। हमरा जनते मैथिली साहित्यिक भंडारक पहिल रचना चरण 'मैथिला मिहिरक' योगदानसँ आरंभ होइत अछि। विभिन्न विधाक हुनकर समग्र बीस गोट मूल रचनाक पोथी प्रकाशित अछि।

अपने आपमे प्रशंशनीय आ सराहनीय मानल जा सकैत छैक। ओहि विधा सभ निबन्ध, समीक्षा संस्मरण आदि विभिन्न विधामे हुनक समान अन्य लेखक बहुत कमे मिलैत छथि। साहित्यिक रचना, लेखकक अन्तर्रात्मासँ जुड़ल अन्तर्भावक अभिव्यक्तिमे हिनक रचना सभ सफल मानल जा सकैत छैक। अपन मातृभाषाक प्रति आदर भाव बढ़ौलनि अछि। तकरे परिणाम जे एहिमे साहित्य निर्माण संतोषजनक भऽ रहल अछि।

आओर अन्य विधाक अतिरिक्त लोक संस्कृतिमे मौनक योगदान स्मरणयोग्य मानल जा सकैत छैक। मिथिलाक प्रसिद्ध लोकनायक राजा सलहेस एवं लोरिक मनियारक विषय मे हिनक योगदान स्वार्णाक्षर मे अंकित रहत। नेपालमे मैथिली साहित्य एवं संस्कृतिमे मौनक योगदान शताब्दी धरि मननीय रहत। हिनक 'मैथिली साहित्यक इतिहास' एकटा माइलस्टोन मीलक पाथर साबित भऽ गेल अछि।

नेपालक मैथिली साहित्यक समृद्ध करबामे डा. प्रफुल्ल कुमार सिंह मौनक योगदान सदैव स्मरणीय रहत।

-काडमाण्डू, नेपाल



तस्मै श्री गुरुवै नमः

–राम नारायण देव

श्रद्धेय गुरुवर डा. प्रफुल्ल कुमार सिंह मौन, मैथिली साहित्य आ सांस्कृतिक क्षेत्रक उज्जवल देदिप्यमान नक्षत्र छथि। ओ अनबरत रूपसँ बिगत साढ़े चारि दशकसँ मैथिली साहित्य आ संस्कृतिक प्रति समर्पित छथि खास कऽ नेपालक मैथिली साहित्य इतिहास एवं लोकसाहित्य क्षेत्रमे हुनकर अद्वितीय योगदान छनि। हुनक जन्म दक्षिण मिथिलांचलक बिहार समस्तीपुर जिलाक हसनपुर गाममे सन् 1938 ई. मे भेल छलनि। हुनकर शिक्षा-दीक्षा बिहारमे सम्पन्न भेल। प्रायः सन् 60क दशकमे नेपाल स्थित मोरंग कॉलेज बिराटनगरमे प्राध्यापन सेवा शुरु कयलनि। हिन्दी साहित्यक प्राध्यापक रहितो ओ मैथिली साहित्य तरफ विशेष आकर्षित भेलाह।

नेपालक मोरंग-सुनसरी क्षेत्रमे छिड़िआयल मैथिली लोकसाहित्यके जनसमक्ष आनबाक लेल भगिरथ प्रयास कयलनि। थारु समुदायमे प्रचलित मैथिली लोकगीत ओ लोकगाथाके गाम गाम घुमिकऽ संकलन करऽ लगलाह। एहि कार्यमे हम ओहि कॉलेजक विद्यार्थीक नातासँ हुनका पूर्ण रूपसँ सहयोग कयने छलियनि। सुनसरी जिलाक दुहवी क्षेत्रक थारु लोकगीत सभहक संकलन करऽ मे हम सहयोग कयने छलियनि से हमरा अखन तक स्मरण अछि।

हुनके प्रयास आ सम्पादन मे ''मैथिली'' नामक साहित्यक पत्रिकाक प्रकाशन 2027 सालमे विराटनगरसँ प्रारम्भ भेल छल। जकर विमोचन नेपालक पूर्व प्रधानमंत्री मातृका प्रसाद कोइराला द्वारा भेल छल। ''मैथिली''क प्रत्येक अंक संग्रहणीय छल खास कऽ नेपालक मैथिली साहित्यक इतिहास अंक तऽ बहुत महत्वपूर्ण अंक छल। जकर लेखन आ प्रकाशन कऽ मौनजी एक ऐतिहासिक दायित्व पूरा कयलनि। नेपालक मैथिली साहित्यक इतिहास प्रकाशित कऽ ओ अपन दायित्व मात्र पूरा नहि कऽ के नेपालीय मैथिली साहित्य संसारक एकटा नव संजीवनी प्रदान कयलनि। तकर बाद नेपालक मैथिली साधक लोकनि ओहि तरफ आकर्षित भेलाह। ततबे नहि नेपालक मल्लकालीन आ सेनाकालीन राजा महाराजा द्वारा उत्कीर्ण मैथिली भाषाक अभिलेख सभके जनसमक्ष आनलनि।

तत्कालीन राजा महाराजा लोकनि द्वारा स्थानीय जमीन्दार सभके प्रदान कयल गेल ताम्रपत्र इस्तिहार सभके 'मैथिली' पत्रिकामे प्रकाशित कऽ एहि क्षेत्रक मैथिली भाषी लोकनिके मनोबल बढ़ौलनि।

ततवे नहि थारु लोकगीत, रिर्पोताज, लोकगाथा इत्यादि पुस्तक लिखि कऽ नेपालक मैथिली भाषीके बहुत गुण लगौलनि।

नेपाल प्रवास छोड़िकऽ बिहारक आर.पी.एस. कॉलेज चकेयाज (महनार) मे प्राचार्य पद पर स्थानान्तरित भेलाह। नेपाल छोड़िकऽ गेला पर नेपालक मैथिली लोकसाहित्य पर लिखिनाइ नहि छोड़लनि। नेपालक मैथिली पत्र पत्रिका सभमे हुनकर आलेख बरोबरी प्रकाशित भेल छनि। नेपालक जनकपुर, राजविराज आ काठमाण्डू धरिक यात्रा कऽ ओ अपन नेपाल प्रति हिनक सहृदयता आ हिनकर लगाव योगदान आ शुभेच्छा के कदर करैत किछु वर्ष पूर्व नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानमे भेल कार्यक्रममे हुनका सम्मान कयलक। एहिसँ मैथिली साहित्यकार लोकनि अति प्रसन्न भेल छल।

नेपालक प्रथम राष्ट्रपति डा. रामवरण यादव द्वारा हुनका दोसल्ला ओढ़ा के सम्मान पत्र प्रदान कयने छलाह। एहि सम्मानसँ नेपालक मैथिली सेवी लोकनि बड़ खुशी भेल छलाह। हुनका जीवित कालमे सम्मान कऽ नेपाल हुनकर ऋणसँ उऋण भेल। नेपालक कोनो मैथिली सम्बन्धि कार्यक्रममे खबर पावैत अखनो वृद्धावस्था मे नेपाल आबि जाइत छथि। नेपाल प्रति हुनकर स्नह, प्रेम आ सद्भावके नहि बिसरल जार सकैत अछि।

किछु वर्ष पूर्व साझा प्रकाशन द्वारा प्रकाशित नेपालक मैथिली साहित्यक इतिहास (संशोधित) पुस्तक हुनका द्वारा पुनर्लेखन भेल अछि। ई इतिहास एकटा मीलक पाथर प्रमाणित भेल अछि। आशा अछि हिनका द्वारा नेपालक मैथिली जगत आर लाभान्वित होयत।

हुनकर दीर्घायु आ शतायु के शुभकामना व्यक्त करैत सुस्वास्थ के कामना करैत छी। भविष्यमे हुनकासँ नेपालक मैथिली साहित्य विशेष लाभान्वित होयत से आशा करैत छी।

अधिवक्ता, राजविराज (सप्तरी)



आधुनिक मैथिली साहित्य मे योगदान

–सुरेन्द्र कुमार दास, शोधार्थी

डा. प्रफुल्ल कुमार सिंह मौनक आधुनिक मैथिली साहित्यम सृजन यात्रा बहुआयामी अछि । शब्द, शिल्प ओ विषय क्षेत्र मे अद्भुत किंतु मौलिक अछि। अत: प्रो. मौनक रचना संसारक समालोचनात्मक विश्नेषण आवश्यक प्रतीत होइत अछि।

लोकक संवेदना ओहि ठाम धरि जाइत अछि जतय शास्त्रक सीमा अवरुद्ध भए जाइछ। लोकक उपजीव्य शास्त्रक संस्कार ओ मिथकीय अवधारणा सभक अनुशीलनसँ शास्त्र लोकक नजदीक आबि तेजस्वितासँ आलोकित भए जाइछ। लोकक मर्यादा भारतीय साहित्यमे पुरान तँ अछिये मुदा ओहि अवधारणाकेँ गंभीरताक संग विस्तारसँ पड़तालमे जे समय बितौलनि, ओ छथि प्रो. प्रफुल्ल कुमार सिंह मौन। मौन रहि कऽ अपन अंतसमे खुजबाक एकात्मता हुनक व्यक्तित्वक विशिष्टता अछि। हुनक अंतसमे भीतरसँ खुजबाक एकाग्र विशिष्टताक जे चेतना विकसित भेल ओहिसँ हिन्दी, मैथिली ओ नेपालीमे प्रो. मौन इतिहास-पुरातत्व एवं साहित्यिक-सांस्कृतिक अनुशीनलनक अतिरिक्त रिपोर्ताज ओ यात्रा वृतांत, संस्मरण आदिक क्षेत्रमे विपुल काज कएलनि। लोक साहित्यक संपदा संवर्द्धन ओ अनुशीलनक क्षेत्रमे ओ एखनो अग्रणी बनल छथि।

महेन्द्र मोरंग कॉलेज, विराटनगरमे (1963-1973 ई.) हिन्दीक प्राध्यापक रहितो मातृभाषी अनुरागी (मैथिली) अपन छात्र-छात्रा लोकनिमे चेतना जगौलनि एवं हुनका संग वर्नाच्छादित दुर्गम क्षेत्रमे, वासित थारू ओ राजवंशी लोकनिक संस्कृतिक जमीनी सर्वेक्षण कएलनि। अहिमे हुनका मोरंगक माँटिमे देवत्व एवं ओहि देवी-देवताकेँ संस्कृति मंडित देखलनि– सलहेस, धनपाल, भीमसेन, गहिल, बामती, धामि-धमिआनि आदि। थारू लोकनिक मैथिली लोकगीतक संग्रह (थारू लोकगीत, विराटनगर, नेपाल, 1968 ई.) परंपरित लोकनाच 'विदापत' (पटना, 2014 ई.) राजवंशी लोकनिक 'रमखेलिया' (उदयपुर, 1976 ई.) आदिक साक्षातसँ अहिठामसँ साहित्यमे सृजनशीलताक गति तेज भेल।

नेपाल प्रवासक हिनक लिखल दोहाय राजा धनपाल, मोरंग-मोरंग मैं सुन्यौ, एक नदीकी प्रणय गाथा, यात्रा थारू ग्रामांचलकी आदि क्रमश: हिन्दीक 'धर्मयुग (बंबई) साप्ताहिक, हिन्दुस्तान (दिल्ली) ओ 'ज्ञानोदय (कलकत्ता) मे प्रकाशित भेल। तहिना मैथिली (विराटनगर), मैथिली मिहिर, (पटना), फूलपात (काठमाण्डू) आदिमे मैथिलीमे प्रकाशित भेल। लोक संस्कृतिक खोज मे (धारावाहिक, मि. मि. पटना), विदापत धारावाहिक, भाखा, पटना), राजवंशी क्षेत्रक खोजयात्रा (धारावाहिक, मि.मि. पटना)क अतिरिक्त नेपालक गामघर, आँजुर, आंगन आदिक प्रकाशनसँ लेखनमे गति आओल। प्रो. मौन नेपाल प्रवासमे नेपालीमे सेहो बहुत किछु लिखलनि, जे हिमालचुली, जनवार्ता (विराटनगर), गोरखा पत्र, प्रज्ञा, मधुपर्क (काठमाण्डु), सिंहावलोकन, युगज्ञान, डम्फू, ऐंसूलू, देउसी, विरचना आदि नेपाली पत्र-पत्रिका सभ मे प्रकाशित भेल छल। ओ भाषा त्रिवेणीक तीर्थ पुरुष बनि गेल छलाह।

'थारू लोकगीत' मूल मैथिली लोकगीतक संग हिन्दीमे विवेचित पुस्तक थिक। अहि ग्रंथक प्रस्तोता छलाह नेपालक पूर्व प्रधानमंत्री मातृका प्रसाद कोइराला एवं ब्रज किशोर वर्मा मणिपद्म। मैथिली जगतकेँ जेना एकटा अहल्या भूमिक प्रसाद भेटि गेल। अतबे नहि ओ नेपाल प्रवास (1963-73 ई.) मे त्रैमासिकी 'मैथिली'क संपादन ओ प्रकाशन कएलनि जे दुनू देशक सांस्कृतिक सेतुबंधक काज कएने छल। 'मैथिली'क माध्यमे नेपालक शिलोत्कीर्ण मैथिली गीत (डा. रामदेव झा) धर्मराज युधिष्ठिर (लक्ष्मण शास्त्री) एवं 'मैथिली साहित्यक इतिहास' (प्रो. प्रफुल्ल कुमार सिंह मौन 1972 ई.) महत्वपूर्ण उपलब्धि थिक।

लोक साहित्यक उत्खनन एवं लोकायतक संग बढ़ैत अंतरंगताक क्रममे ओ जहाँ कतहु गेलाह, ओहिठामक संवेदनात्मक दृश्य-परिदृश्य हुनका संगे गेल आर ओ बनैत गेल भावप्रवण। मैथिलीक कथा रिपोर्ताज 'ब्रह्मग्राम' (दरभंगा, 1972 ई) जाहि मे शब्दांकित कतोक पात्र-पात्री आइ देवत्वक श्रेणीमे प्रतिष्ठित छथि। हुनक आंचलिक कथा रिपोर्ताजक संकलन 'सुरसरी (महनार, 1977 ई.) वस्तुत: मोरंग-सुनसरी जिलाक तत्कालीन जनजीवनक एकटा अमूल्य दस्तावेज बनि गेल अछि। 'ब्रह्मग्राम' ओ 'सुरसरी' मे फनीश्वरनाथ रेणु, संगेय राघव, मणिपद्म ओ राहुल सांकृत्यायनक मिझरायल भाषा-शैलीक तत्व सभ भेटैत अछि। मुदा हुनक तेसर रिपोर्ताज ग्रंथ 'वाल्मीकिक देशमे' (महनार, 2005 ई.) सेहो प्रकारांतर सँ नेपाल ओ भारतीय भूभागक गाथायी संस्कृतिक बजैत अलबम बनि गेल अछि। अहिमे संकलित 'वाल्मीकिक देशमे' केँ डा. रामप्रवेश सिंह उत्तम

एवं भारत-नेपालक पूर्वी सीमांतक बहू मेची सीमांत नदी केँ डा. बधुकर गंगाध र उत्तमोत्तम कहि प्रो मौनक रिपोर्ताज साहित्य के साहित्य जगतमे मर्यादा बढ़ौलनि एवं प्रकारे प्रो. मौन हिन्दी एवं मैथिलीक रिपोर्ताज साहित्यक एक प्रकारसँ अतुलनीय नचनाकार छथि। हुनका 'रिपोर्ताजक बादशाह' सेहो कहल जाइत छनि।

प्रो. मौन नेपाल प्रवास (1963-73) मे भारतक बेताजक राजदूत छलाह। ओ भाषा साहित्य, इतिहास-पुरातत्व एवं कला-संस्कृतिक क्षेत्रमे दुनू देशक बीच जाहि सांस्कृतिक सूत्रवद्धताक काज कएलनि ओकर एकटा आर उदाहरण अछि- 'विरचना'क नेपाली प्रस्तुति (1972 ई.। विरचना वस्तुत: बीसम शताब्दीक साठोत्तरी पीढ़ीक हिन्दी ओ नेपाली कथाकार सभकेँ एक मंच पर नेपालसँ एवं हिन्दी ओ नेपाली कवि लोकनिक कविता सभक 'दिनमान' (दिल्ली) क मंच पर भारतसँ प्रस्तुति। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ई प्रयोग बेस चर्चित भेल छल। आब ओ सातम दशकक जीवन- परिदृश्यक विचारोत्तेजक बानगी बनि गेल अछि। प्रायोजक छलाह प्रो. मौन।

नेपालक दस वर्ष धरि अध्यापन सेवासँ लाभान्वित भऽ प्रो. मौन 1973 ई. मे महनार (वैशाली) प्रधानाचार्य बनि आबि गेलाह। महनार मे आबि हुनक गवेषणात्मक दृष्टि परिपक्व भऽ गेल छल। महनार प्रवास मे ओ जतेक मैथिली बज्जिका ओ अंगिका केँ देलनि प्राय: ओतबे हिन्दीकेँ सेहो देलनि। स्वाधीनता संग्राममे महनार, चेयरक प्राचीन मृण्मूर्तियाँ, संत बुनियाद दास का सतरामी पंथ, बज्जिका साहित्य का इतिहास, हमारे लोक देवी-देवता, बुद्ध, विदेह और मिथिला, अंगिका लोकसाहित्य आदि ओतबे महत्वपूर्ण अवदान अछि जतेक हुनक कृति सभ-मैथिलीक नेनागीत, मिथिलाक लोकसंस्कृति संदर्भ, मणिपद्मक पत्र, विदापत, नेपालक आधुनिक मैथिली साहित्य, मैथिली लोकगाथा अनुशीलन आदि। अतबे नहि प्रो. मौन धर्मवीर भारतीक मिथक सम्बद्धता, मोहन राकेशक मंचीयता ओ भारतेन्दु हरिश्चन्द्रक सामाजिक परंपरा विषयक उद्देश्यपरकताक सम्मिश्रणसँ मैथिलीमे रेडियो नाटक सेहो लिखलनि-'सलहेस' ओ 'लोरिक' जे आकाशवाणी, पटनासँ दर्जनो बेर प्रसारित भऽ लोकप्रिय बनि गेल छल।

प्रो. मौन उत्सवधर्मी संस्कृति पुरुष छथि। महनार महोत्सवसँ लऽ कऽ कोशी महोत्सव (सहरसा), मैथिला महोत्सव (दरभंगा ओ जनकपुर) अंग महोत्सव (भागलपुर), राजगीर महोत्सव (राजगृह), बौद्ध महोत्सव (बोधगया), नालंदा महोत्सव (नालंदा) सिरहा महोत्सव, वैशाली महोत्सव आदि धरि हुनक सक्रिय सहभागितासँ प्रो. मौनक इतिहास, संस्कृति ओ कलाप्रेमकेँ दरसबैत अछि। मैथिली लोकसाहित्यक क्षेत्र मे यद्यपि मणिपद्म शीर्षस्थ छथि मुदा हुनक अध्ययन लोकगाथा धरि सीमित रहि गेल, मुदा प्रो. मौन मैथिली लोकसाहित्यकेँ संपूर्णतामे विवेचित कएलनि। मैथिली लोकगीत, गाथागीत, लोककथा, लोकनाट्य (नाच), लोकोक्ति, बुझौअलि, लोकसंगीत, अरिपन, कोहबर, भितिचित्र, गोदना आदि सँ सम्पृक्त एकटा विशाल कैनवास ओ देलनि।

नेपाल ओ भारतक विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय सम्मान ओ पुरस्कारसँ अलंकृत प्रो. मौन एकटा एहन स्थापित व्यक्तित्व छथि, जनिकामे लोकसाहित्य ओ लोक संस्कृतिक विषयक अध्ययन-अनुशीलनक गांभीर्य एवं सृजनात्मक साहित्यमे एकटा नवताक दर्शन होइछ। लोक साहित्य ओ रिपोतार्जक क्षेत्रमे जतेक काज ओ एखन धरि कएलनि, ओतबे युग-युगांत धरि हुनका अमर रहबाक लेल पर्याप्त अछि। ओ जतेक लिखैत छथि, ओतेक अध्ययनशीलो छथि। हुनक व्यक्तित्व जतेक विस्तृत अछि हुनक मौनत्व ओतबे अर्थगर्भित अछि। अत: हुनक कृति सभकेँ कालजयी कहबा मे कोनो संकोच नहि।

- राज फिल्ड, राजनगर (मधुबनी)
मो. 09931633111



एकटा विरल व्यक्तित्व

–डा. नरेन्द्र नारायण सिंह निराला

जँ एकटा व्यक्तित्वमे भाषा–साहित्य, इतिहास–पुरातत्व, कला संस्कृति, लोकविद्या आदिक आभा मंडल विकसित हो तँ ओ छथि प्रो. प्रफुल्ल कुमार सिंह मौन। एकटा अनुभव सिद्ध, ज्ञानवृद्ध तपस्वी, अहि मनीषीसँ पहिल साक्षात मध ुबनीक ललित धरती पर भेल छल। ओना तँ हुनक चर्चित पुस्तक ओ शोधलेख सभ यथा समय पढ़ि हुनक व्यक्तित्वक जे अवधारणा मन–मस्तिष्कमे बनल छल, ओहि सँ एकदम भिन्न–सहज, सरल, खुश मिजाज एवं नित्य नव–नव हेरायल–भुतिआएल ज्ञान तत्व सभ के ँ खोजैत अपस्याँत भेल। आडंबर निहीन उत्फुल्ल सौम्य मुखाकृतिक आभा मंडल देखि हम बेस उत्साहित भेल छलहुँ। अवसर छल रामकृष्ण कॉलेज मे मिथिला लोकचित्र कलाक दू दिवसीय संगोष्ठी जे 30 नवम्बरसँ 1 दिसम्बर 2003 धरि आयोजित छल। ओ विशेष आमंत्रित छलाह। अध्यक्षता डा. रत्नेश्वर मिश्र ओ 1958 ई. सँ मिथिला लोकचित्र कलाके ँ विभिन्न दृष्टिएँ खोज बीन करैत छलाह। हुनक अभिभाषण सुनि आधुनिक मिथिलाक इतिहास चिंतक रत्नेश्वर मिश्र अपन भावोद्गार अभिव्यक्त करैत कहने छलाह–जाहि ठाम प्रो. प्रफुल्ल कुमार सिंह मौनक विज्ञ उपस्थिति भेल, बुझू जे ओ पूर्णता प्राप्त कऽ गेल। मौन अहि सत्रमे मिथिला लोकचित्र कलामे राम–जानकी प्रसंग चित्र सभ भंगिमा सभके ँ विवेचित कएने छलाह। अहि संगोष्ठीमे पचाससँ बेसी देशी–विदेशी चिंतक सभक तद्विषयक आलेख सभक वाचन भेल छल।

अहिसँ पूर्व हुनक सहभागिता जे.एन. कॉलेज, मधुबनीक प्रांगणमे 'मैथिली लोकसंगीत' विषयक संगोष्ठी (11–12 जुलाई 2000 ई.) मे देखने ओ सुनने छलहुँ। ताधरि ओ मिथिला लोक संस्कृतिक विशिष्ट अध्येताक रूपमे स्थापित भऽ गेल छलाह। हुनक प्रकाशित तदविषयक निबंध संकलन 'मिथिला लोक संस्कृतिक संदर्भ (कर्णगोष्ठी कोलकाता, 2011 ई.) प्रमाण अछि। मिथिला लोक संगीत विषयक संगोष्ठी विश्व. अनु. आयोग ओ जे.एन. कॉलेजक संयुक्त तत्वावधान मे भेल छल।

प्रो. मौनके ँ जतेक पढ़लहुँ, जतेक सुनलहुँ ओ जतेक जानलहुँ ओ अथाह लगलथि आर सतत जिज्ञासु लोकनि अतृप्ते रहि गेल छलाह। फलत: हुनका बुद्धिजीवी मंच दिस सँ 9 मई 2004 ई. के ँ बिहार खादी ग्रामाद्योग भंडारक सभागार मे 'मिथिलाक सांस्कृतिक परिदृश्य' पर मुख्य वक्ताक रूपमे आमंत्रित कएल गेलनि। ओ विस्तारसँ भारत ओ नेपाल सांस्कृतिक मिथिलांचलमे परंपरित भाषा–साहित्य, गीत गाथागीत गायकी, लोक चित्रकला शैली, माँटिक मूर्तिकला ओ आनुष्ठानिक पात्र, लोकदेवी–देवता आदिक स्वरूपके ँ व्याख्यापित कयलनि। अहि क्रमे भारतीय पक्षक डा. गंगाधर झा, डा. वेदनाथ झा, इजहार अहमद ओ डा. देव नारायण यादव एवं नेपाल पक्षक डा. रामदयाल राकेश, रामभरोस कापड़ि भ्रमर, डा. परमेश्वर कापड़ि आदि साझा संस्कृतिसँ प्रबुद्ध श्रोता सभके ँ अवगत करौलनि।

सहरसाक अशोक विहारमे ओहिठामक प्रबुद्ध डी.आइ.जी उमेश कुमारक अध्यक्षतामे सम्पन्न भेल प्रो. मौनक नाग संस्कृतिक सचित्र रिपोर्ताज पढ़ि आनंदित भेल छलहुँ जे नाग एक सर्पयोनि मात्र नहि ऐतिहासिक राजवंश छल। हुनक अपन इतिहास ओ संस्कृति छल। हुनक अर्द्धमानवी ओ मानवी शिल्पाकृति सभ प्राप्त होइत अछि। मुदा आजुक जनमानसमे नागदेवी मनसा ओ विषहराक पूजा नाग पंचमी, नागमिथुन, बहुला नाच, मंजूषा कला, कथा आदिक अवधारणा सेहो परंपरित अछि, जकरा नकारव सहज नहि। ओ तिथि छल 26 सितम्बर 2004 ई. । स्थान सरहसाक मत्स्यगंधा परिसरक अशोक विहार।

'संस्कृति' मधुबनी द्वारा आयोजित व्याख्यानमालाक अंतर्गत मिथिलाक नाग संस्कृतिक आयाम मे प्रो. मौन कहलनि जे जमीनी स्तर पर नाग संस्कृतिक धरातल विश्वव्यापी अछि। मिथिलांचलमे ओ पूर्व दिससँ आयल ओ उत्तर नेपाल धरि गेल। नागदेवी विषहाराक एकटा बहिन दॉतुयक प्रभाव क्षेत्र दँतुआर एवं कर्कोटक नागक प्रभाव क्षेत्र नेपाल उपत्यका छल। आब ओ सभ शोधालेखक रूपें 'मडई (छतीसगढ़, 2004 ई.), अर्पण (दरभंगा, 2009 ई.), नेमिकानन (जनकपुर, नेपाल, 2004 ई.) कर्णामृत, 2004 ई.) आदिमे प्रकाशित अछि।

ओ मधुबनी प्रवासमे मंगरौनीक त्रैलोक्य विजयक ऐतिहासिक बौद्धमूर्तिक पहचान सुनिश्चित कयने छलाह कि हमरा मोन पड़ि गेल बसुआरा मठक एकटा मध्यकालीन पाथरक शिल्पाकृति। ओ तैयार भऽ गेलाह तुरत चलि देखबाक लेल। हमर आवास (अस्पताल रोड, मधुबनी) सँ बसुआरा मात्र चारि किलोमीटर दक्षिण पड़ैत अछि। एकटा जिज्ञासुदलक संग ओ विदा भऽ बसुआरा मठक भीतर एकटा ऐतिहासिक मूर्ति सेहो छल। एकटा जिज्ञासु ओकरा मयूरासीत सरस्वती

कहलनि तँ प्रो. मौनके ँ हँसि लागि गेलनि। ओ नीक जकाँ पुस्तर मूर्तिके ँ जाँचि कहलनि जे ई पालकालीन कार्तिकेयक मूर्ति थिक। कार्तिकेय युद्धक देवता छथि। कार्तिकेयक एकटा आर पालकालीन पुस्तर मूर्ति वैशालीक हरिकटोरा मंदिरमे सेहो संपूजितअछि। मालदह (प. बंगाल) मे ओ लोकपूजित बनल छथि। अगिला दिन बसुआरा मठक अहि कार्तिकेय मूर्तिक चित्र पहचान सहित दैनिक अखबारमे प्रकाशित भऽ बहुचर्चित भऽ गेल छल। प्रो. मौनक इतिहास ओ पुरातत्वक अहि ज्ञानसँ हम सभ अभिभूत छलहुँ। दोसर पुरातत्वान्वेषी सत्यनारायण झा सत्यार्थीक संग मधुबनीक किछु गाम सभक सर्वेक्षण यात्रामे गेल छलहुँ आर किछु सीखबाक अवसर प्राप्त भेल। पुरातत्व इतिहासक सखा ओ साक्षी बनैत अछि।

प्रो. मौनक इतिहास ओ पुरातत्व विषयक चर्चित पोथी सभ अछि—(1) चेचर की प्रचीन मृण्मूर्तियाँ (महनार, 1980 ई.) (3) बिहार के बौद्ध संदर्भ (महनार, 0997 ई.) (6) बिहार की जैन पृष्ठभूमि (वाराणसी, 2004 ई.) (5) चापाल चैत्य की खोज (मुजफ्फरपुर, (1999 ई.) (7) नेपालक मैथिली साहित्यक इतिहास (विराटनगर, 1972 ई. काठमाण्डू, 2011 ई.) (4) बज्जिका साहित्य का इतिहास (मुजफ्फरपुर, 1995 ई. (2) बुद्ध, विदेह और मिथिला (महनार, 1985 ई.)। अकर अलावा मिथिला ओ मैथिलीक सम्बन्धमे शताधि क शोधालेख मैथिली, हिन्दी ओ नेपालीमे देश-देशांतरक पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित एवं शोध संदर्भित अछि। प्रो. मौन आब हमरा एभक लेल एकटा सारस्वत धरोहर छथि। ओहि सतत प्रवहमान व्यक्तित्वके ँ अभिनन्दन दीर्घायु कामनाक संग।

स्नातकोत्तर इतिहास विभागाध्यक्ष,
रामकृष्ण कालेज मधुबनी। मो. 06276222212



मूर्धन्य आचार्य मौन

—डा. महेन्द्र नारायण राम

तीन गोट नाम हमरा जेहनमे बरोबरि अबैत रहल छल—डा. जार्ज ग्रियर्सन, डा. मणिपद्म आ डा. प्रफुल्ल कुमार सिंह मौन। एक दिन सिरहामे भेल सलहेस महोत्सवक मादे जे पढ़लहुँ ओहिसँ डा. मौनक व्यक्तित्व ओ कृतित्वक जिज्ञासा बेसी होमए लागल। बात 2002 ई. पटनाक काशी प्रसाद जयसवाल शोध संस्थानक प्रांगणमे केओ सूचित कयलनि जे डा. मौन वैह छथि। डा. ओम प्रकाश पांडेयक संग पाटलि वृक्षके ँ निहारैत हम श्रद्धाभिभूत भऽ गोर लगलियनि ओ अपन परिचय सेहो देल। ओ सहज भावें आर्शीवाद देलनि—हम अहीं सन उर्जावान युवक सभके ँ खोजि रहल छी—तारानन्द वियोगी, रवीन्द्र कुमार चौधरी, सुभाष चंद्र यादव, मेघन प्रसाद, अशोक कुमार मेहता आदि। अहाँ सभ जे जतेक साधना कऽ रहल छी, प्रशंसनीय अछि। मुदा हम एम्हर मिथिला ओ मैथिलीमे अपनाके ँ असगरे बुझैत छी। तथापि हमरासँ जे जतेक सामर्थ्य अछि, कऽ रहल छी—'एकला चलो रे।' डा. मौन अचोके अपन मोनक पीड़ा सुना देलनि।

हमरा स्मरण आबि रहल अछि जे ओ हमर 'कारिख लोकगाथा' (मूलपाठ)क मादे लिखने छलाह—कारिख पंजियारक मूल गाथा 'कारिख लोकगाथा' एकटा लोक संकलित ग्रंथ थिक। मूल गाथा चारि खंडमे कथा गुंथित अछि। (पटना 18-11-2002 ई.) अछि ग्रंथक लोकार्पण 7 दिसम्बर, 2002 ई. के ँ साहित्य अकादमी, दिल्ली द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी, कलकत्तामे भेल छल। ओहि गोष्ठीमे डा. मौन सेहो आमंत्रित छलाह। हुनक सानिध्य पाबि मैथिली लोकगाथाक संदर्भमे ओ जतेक कहलनि ओ हमरा लेल संजीवनीक काज लएलक। लोकगाथा वस्तुत: 'लोक' ओ गाथाक समन्वित रूप थिक। ओ देवेतर, लौकिक एवं गेय आख्यान अछि, जाहिमे लोक जीवनचक्र प्राय: समस्त सांस्कृतिक तथा सामाजिक भाव आच्छादित अछि। ओ पूर्वावर रचित साहित्यसँ सेहो सम्बद्ध अछि—लवहरि कुशहरि भवभूतिक उत्तररामचरितसँ, लोरिक ओ चनैनी मुल्ला दाउदक 'चंदायन' सँ छत्तीसगढ़क पण्डवाणी महाभारतसँ सूत्रबद्ध अछि। लोरिकाइनक अधिकांश पात्र दुराचारी छलाह। दीनाभद्री ओ वीर

वसावनक प्रतिनायक सभ शोषक ओ स्वेच्छाचारी छलाह। सती बिहुलाक गाथा स्त्री विमर्शक आधार देलक। मैथिली लोकगाथाक मानवेतर पात्र सभ सेहो प्रखर ओ उर्जावान अछि। कलकत्ताक संगोष्ठीमे हमर आलेख पाठक पश्चात हमर माथ पर दुनू हाथे आशीर्वाद देलनि। हमर आलेख मैथिली लोकमंत्र पर केन्द्रित छल। डा. मौनक थारू लोकगीत (1968 ई.) मे हम हुनक 'मंत्रगीत पढ़ने छलहुँ।

कालांतरमे हम डा. मौनकेँ अपन जन्मग्राम खुटौनामे आमंत्रित कएने छलहुँ। कल्याण पथ सम्मानसँ हुनका तत्कालीन शिक्षामंत्री बिहार सरकार डा. रामलखन रमण'क हाथें सम्मानित कएल गेल छलाह। खुटौना ओ लदनियाँ नेपाल भारतक सीमांत क्षेत्र भूभाग थिक जे कहियो अन्त: वाणिज्य व्यापारकेँ केन्द्र छल। तत्पश्चात दरभंगाक मिथिला संस्कृत शोध संस्थानक विद्वदगोष्ठीमे एकटा सर्वसम्मत निर्णय लेल गेल जे संस्थानसँ मिथिला लोक संस्कृति केन्द्रित एकटा ग्रंथाकार प्रकाशन कएल जाय। तकर संयोजन ओ संपादनक दायित्व डा. मौनकेँ देलनि। अहि मे हमर आलेख 'लोकगाथाक दलित नायक' संकलित अछि। ओ दू भाग मे प्रकाशित अछि।

प्रखर युवा लेखक अश्विनी कुमार आलोक हमरा मोहनपुर कालेज मे आमंत्रित कएने छलाह। महनार जाएव, डा. मौनक साहचर्य एवं पोथीक लोकार्पण। पुन: मधुबनीक जे.एन. कालेज एवं आर.के. कालेजमे आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी सभमे सेहो डा. मौनक सानिध्य सुख भेल। एकटा निखरल व्यक्तित्व, तत्पश्चात जनकपुरमे आयोजित लोकसंस्कृतिक विषयक संगोष्ठीमे सेहो सुखद सानिध्यक लाभ लैत सदिखन तृप्त रहलहुँ। लागल जेना एकटा झमटगर पीपरक स्निग्ध छाहरि मे ज्ञानक लाभ लऽ रहल छी। हमरा मोन पड़ि गेलथि गौतम बुद्ध ओ हुनक भिक्षु लोकनि। हुनक सानिध्यमे गप-शप करैत चन्द्रेश, रमण, भ्रमर, परमेश्वर कापड़ि, अयोध्यानाथ, रेवती रमण आदि।

डा. मौनक सम्मान हुनक साधनाक सम्मान थिक। खाहें ओ मिथिला विभूति (दरभंगा 2002 ई.) मिथिला रत्न एवं (तिरूपति 2009 ई.) मिथिला श्री (काठमाण्डू 2010 ई.), मैथिली अनुवाद पुरस्कार (हैदरावाद 2005 ई.) इतिहास सम्मान (वीरगंज), संस्कृति साम्मान (जनकपुर) आदि हो, हुनक मन-स्थिति निष्काम कर्मयोगीक बनल रहल। एहन ओ चुपचाप काज करऽवला व्यक्तित्व डा. प्रफुल्ल कुमार सिंह मौन मौने छथि। ओ हमरा सभ ठाम सभ मोड़ पर उत्साहित करैत छलाह, आशीर्वाद दैत छलाह। सत्ये ओ धन्य मौन मूर्धन्य छथि आ हमरा सभ केँ धन्य बनबैत रहलाह अछि।

व्याख्याता, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, पूसा, समस्तीपुर

मो. 9162205484



परख

मैथिली रिपोर्ताजक प्रवर्त्तक

–डा. विनोद कुमार चौधरी

बड़ पीपरक ठाढ़ि सभसँ झिहिर-झिहिर बसातक तर बरहमक गहबर। देखल बरहम नीलकर्ण घोड़ा पर असवार। लालरंगक धोती। फूलदार शेरवानी। माथ पर पाग। गोल मुँह। घनगर कारी मोछ। भिन्न-भिन्न नाम। भिन्न-भिन्न कथा। आर हमर सभक साइकिल दरभंगा दिस उड़य लागल। सिवइ सिंह बनाम गजरथपुर इतिहासक एकटा अध्याय जकाँ पाँछा छुटऽ लागल।..................

प्रो. प्रफुल्ल कुमार सिंह मौनक मैथिलीक पहिल रिपोर्ताज संग्रह 'ब्रहमग्राम' (दरभंगा, 1972 ई.)केँ पढ़ैत नवस्फूर्तिसँ भरि जाइत छलहुँ। ग्राम गहबर ओ इतिवृतिक अन्हार पृष्ठकेँ आलोकित करएवला एक से एक प्रसंग, मनक आकाश पर वृत्तचित्र जकाँ अंकित भऽ गेल छल। बेर-बेर। मुदा जिज्ञासा नहि मेटाएल। नयन ने तिरपित भेल। अथाह सागरक सौंदर्य।

''क्षीणकटि कोसी कुमारि। अल्पवयसा कोसी। मुदा ज्ञात यौवना। भूस्पर्श करैत केशराशिकेँ सम्हारि ओ जूड़ा बन्हलनि। आ जुड़वा कुहुकै मजूर।'' रइया रण्पालकेँ पानक बीड़ा दैत कहलनि–मोरंगक भकुरा कोल आ गुंजन कोलकेँ साध ू। रणपाल ढाल-तरुआरिक संग घोड़ा पर चढ़ि कोशीक रूप लावण्य, उद्याम यौवन ओ स्वर माधुर्यकेँ स्मरण कऽ रणभूमिमे कूदि गेलाह। कौमार्यमे चंचलता ओ यौवनक उन्मुक्त प्रवाह। कोसीकेँ डेग-डेग पर बलि-भोग चाहियनि। ओ धसनाक तरमे रत्नू सरदारक छटपटाइत प्राणकेँ देखि कोशी मुस्काइत छलीह।

कोसीक बहिन कुमारि कमला। मुदा राजसी ठाठ-बाट। सोनाक मचिया पर बैसि केश विन्यासमे लीन। सोना के ककहिया कमला, नामी-नामी केस। मैनीगढ़ गहबरमे विश्रामरत कमला ओ हुनका चॉवर डोलबैत कोयला। ओहि कमलाक प्रवाहकेँ रोकनिहार के? मोरंगराज चमार (बदिला) आकि मोगला सरदार, आकि भीमसेन? कमला भक्त अमर सिंह चमराराजक गर्दनि तरुआरिसँ छोपि ओकरे सिंहद्वार पर टाँगि देलक। बहय कमला हिरिन-झिरिन। बहय कोसिका हिद्र जोरी। नदीक मानवी रूप-रंग, प्रणय, स्पंदित अंग-प्रत्यंग। मुदा स्वभावे भिन्न।

तथापि एक से एक रूप-रंगक लोभी पात्र सभसँ घेराइलि।

के कहैत अछि जे सांस्कृतिक 'मिथिलांचल'मे मारकाट, विजय अभियान शौर्य-पराक्रम आदिक कहियो साक्षात नहि भेल अहिंसाक पुभुत्वक कारणे। ब्रहम विधाक प्रभुत्वक कारणे। ओना तँ कहल गेल अछि जे वैदिक हिंसा न भवित' तखन हिंसाक परिभाषा की? 'सुन-सुन बेटा घुघुलिया' नूजागढ़, अमर सिंहक तरुआरि, देवलोक विजय, आदि रिपोर्ताज सभमे क्रमश: छलसँ मारल गेल रणपालक प्रतिकारक हेतु घुघली-घटनाक मार-काटसँ भरल युद्ध एवं छर माइ घटमा सभक संहार। नूजागढ़क नबाबक संग मीर सुल्तानक युद्ध, नूजागढ़क दिग्देश, इस्मालक नक्शा सैन्य शिविर, घोर युद्धक बाद नूजागढ विजय। कुमारि ब्रहमणी कमलाक संग विवाहार्थी बदिला चमारक सिलहटक अखाड़ापर मल्लयुद्ध एवं मोरंगराजक अंतकालमे बदिलाक बध। शिशवनी हाटमे लोकमंचपर अभिनीत 'देवलोक विजय'क प्रसंगे देवासुर संग्राममे महत्वाकांक्षी महिषासुरक बध की कहैत अछि? कंदर्पीघाटक लड़ाइ की कहैत अछि?

प्रो. मौनक खोजरथ नेपालक कोशी प्रदेशक अंतर्गत मोरंग जिलाक मुख्यालय बिराटनगरसँ बारह मील पूर्वक दिशामे अवस्थित रंगेली विभिन्न जातीय लोकनिक एकटा ललबम बनल बाजार अछि। बाजारसँ जोड़ाएल थारू, राजवंशी गनगाई (गणग्रामी), सत्तार आदिक बसोबाससँ अहि भूभागक संस्कृति बहुआयामी बनि गेल अछि। राजवंशी अहि मे प्रमुख छथि, जनिक स्त्रीलोकनि एकवस्त्रा होइत छथि। हाथक बुनल पेरानी छातीसँ ऊपर धरि। बंगलाक एकटा बोली-राजवंशी। नेपालक पूर्वी सीमा पश्चिम बंगालसँ मिलैत अछि। भाषा देखू-

आगो, पुरुवे बन्धना करू धर्म निराजन,
उत्तरे बन्धना करू काली मायेर चरण।
पश्चिमे बन्धना करू पीर पांच्छो भाइ,
दक्षिणे बन्धना करू गंगा मायेर चरण।
बन्दी लाम आम्रा सबैजन। पृ. 27

राजवंशी लोकनाच शांखो ओकार कथा'क दिग्पति वंदना थिक। वैह धर्म निरंजन, काली, पांचो पीर ओ गंगा हनुमान एवं नेपाली प्रभावें 'आम्रा' (हाम्रा) दर्शक लोकनिकेँ सेहो वंदन। अर्थात नाचक 'फ्रेम' जनपदीय थिक मुदा भाषा राजवंशी। प्रो. मौन राजवंशी लोकनिक एकटा जनपदीय (शांखो ओझार कथा ओ कमलासरी (कमलश्री) एवं दोसर पौराणिक (देवलोकविजय) कथानक नाट्य प्रस्तुतिकेँ आंखी देखल एवं भोगल क्षणकेँ शब्दांकित कएने छथि। शांखो ओझामे लोकप्रचलित अंधविश्वास (यमराजक प्रति अवधारणा)केँ उदघाटित कएल गेल अछि-'स्त्री

जातिक बुद्धि पर कोनो विश्वास नहि। शांखो ओझाकेँ जलाशयसँ निकालि यमराज लऽ जा रहल अछि आर कमलासरी पछोड़ धएने चीत्कार करैत अछि-'ओरे पंचमरसेर सामी धन।' रिपोर्ताजक अंत विलक्षण अछि-'नदीमे घाट छैक। घाटसँ जोड़ल बाट छैक। मुदा नैया नहिं।'

'ब्रहमग्राम'क दोसर रिपोर्ताज राजवंशी लोकनिक पौराणिक कथा पर आधारित लोकनाच अर्थात जनपदीय लोकनाट्य-

अछारि पछारि ओये युद्ध बाझिलो रे।
वज्रवाने दन्द्रराजा दैतार मारियो रे।।
जंभासुर माराइलो 'जय जय' शब्द हइलो।। पृ. 37

स्वर्ग लोक पर विजयक आकांक्षी जंभासुरक बधक उपरांत देवराज इन्द्रक जय-जयकार भेल। महिषासुर सेहो मारल गेल। नाच पर जनपदीय कीर्तनियां नाचक प्रभाव स्पष्ट अछि-प्रवेश ओ निस्सारक विधान, संवाद शैली आदि। अहि दुनू मैथिली रिपोर्ताजसँ ई संकेत भेटाइत अछि जे जनमानसक अभिरुचि मात्र पौराणिक परिवेश धरि नहि अपितु 'वर्तमान परिवेश'क कटुमधु'केँ समेटबाक चेष्टा कएल गेल अछि।

प्रो. मौन 'मैथिली लोकगाथा'क विशिष्ट अध्येता मानल जाइत छथि। लोक गाथाक संकलन हेतु ओ रने-बने बौअइलथि। गाथा गायक सभक नखरा बरदाश्त कएलनि। हुनक अनुभूति सभक साक्षात 'चानवेला आ चंपा डगराइन' एवं आहो राधेनाथ, मे देखना जाइछ-

-'कथी खोजै छी मड़र?'

-'चीलम' मड़रकेँ गीतक समाप्ति पर चीलमक सोंट अनिवार्य जकां छलनि। हम कहलियनि 'आइ हमरा दिससँ सिकरेट।'

-नहि हजूर। चीलमवलाकेँ सिगरेटसँ की होयतैक। समुन्दर सोखऽ वलाकेँ पोखरि की होयतैक?

''हम अपन प्रयोग पर लजित छलहुँ। हमरा भेल जे हम गाथागीत सभक समुद्र लग ठाढ़ छी। पृ. 83

दोसर रिपोर्ताज अछि-'चानवेला आ चंपा डगराइन' (पृ. 7-71)। नाका छल विदेहक सार्थवाह (नैका बनजारा)। चंदनवाला छलीह अंगदेशक राजकन्या। आ चानवेला-एकमा छल हुनक कर्मभूमि। आर मोरंगक अहि भूभागमे नैका बनजाराक सुनाओल कैकटा पोखरि एवं सिरुआक मेला चक्र। डा. मौनक 'बनजारा मन' एखनो चानवेला, पकड़ी, एकमा, बकलौल्ही, पंचायन, उगदी, सिमरिया आदि गाम सभ मे भटकि रहल अछि। चंदना अपनहर्ता दस्युराणक आतंकसँ मुक्त भऽ

नैकाक बाहुपाशमे बन्हि गेल छलीह। चानवेलासँ हमर सभक जीप सिमरिया दिस बढ़ल। बुद्धिमान जी हमरा सभक आगमनक हेतु प्रतीक्षित छलाह। (पृ. 71)

तेसर रिपोर्ताज अछि–'रेसमाक अतृप्त मन' (पृ. 72-78) ओ चूहरक भटकैत आत्मा। 'मोरंग ओ सिमरिया' केँ एक सूत्र मे बन्हैत अछि। तुलसी इनार पर एखनो ठाढ़ अछि रेसमा। उदास मुख। अतृप्त मन। ओकर चारूकात चूहरक आत्मा अहुरिया काटि रहल छलैक। (पृ. 78)। चारिम अछि–आहो राघोनाथ (पृ. 79-83)। कलूराम हुनक ग्रामदेवता छलनि। ओ महीसवार छलाह। ललिया-भुलिया नामक प्रिय महींसक पोषक। मुदा बघिनियाँसँ मारल गेलाह एवं लोकदेवता बनि गेलाह। गाथा नायक कोना लोकदेवता बनि जाइत अछि से देखू।

प्रो. मौनक 'ब्रहमग्राम'केँ पढ़ि पाठकके ँ सांस्कृतिक मिथिलांचलक सतरंगी आकाशक दर्शन ओइत अछि। डा. शैलेन्द्र मोहन झा (मिथिला वि.वि.)क अनुसार श्री प्रफुल्ल सिंह मौन इतिहासक कान्तारकेँ अपन अन्वेषणक पृष्ठ भूमि बनौलनि अछि। मिथिला ओ मोरंगक धरित्री हिनक पथ परिक्रमाक प्रेरक क्षेत्र सिद्ध भेल अछि। लोकगाथाक अविस्मरणीय पात्र, रोचक घटनाक्रम, नेहछोहक मनोरम अख्यान, पौरुष ओ पराक्रम उदाहरण, शील ओ संकोचक मर्मस्पर्शी चित्र सभक पुनर्वाचन जे आन्रंदक उत्स अछि ताहिसँ जनजनकेँ स्फूर्ति प्राप्त होइछ। वस्तुत: 'ब्रहमग्राम' लोकमानसक एकटा रचनात्मक पक्ष थिक। निसंदेह 'ब्रहमग्राम' मैथिली साहित्य क्षेत्रक अभिनव तीर्थ प्रमाणित होयत। (पृ. क-ख)

रिपोर्ताज वस्तुत: विभिन्न गद्यात्मक विधा सभक सामंजस्यसँ एकटा नव विधा बनि गेल अछि मैथिली साहित्यक। प्रो. मौन मैथिलीक रिपोर्ताज साहित्यक विहंगावलोकन करैत स्वीकार कएने छथि जे सम्प्रति मैथिलीक रिपोर्ताज साहित्य विकासोन्मुख अछि।

ओ 'ब्रहमग्राम'क माध्यमे सांस्कृतिक मिथिलाक एकटा ऐतिहासिक, भौगोलिक, सामाजिक, आर्थिक ओ भाषा-साहित्यक रूपरेखा प्रस्तुत कएलनि अछि। तकर विस्तार हुनक दोसर रिपोर्ताज संकलन 'वाल्मीकि देश मे (2005 ई.)मे भेल अछि। हुनक हिन्दी रिपोर्ताज सभ 'सुरसरी' (1977 ई.)मे संकलित अछि। फनीश्वरनाथ रेणु हिन्दी साहित्यकेँ आंचलिक कथा देलनि तँ दोसर दिस प्रो. प्रफुल्ल कुमार सिंह मौन हिन्दी ओ मैथिलीकेँ आंचलिक रिपोर्ताज देलनि, जे भारत ओ नेपालक पत्र-पत्रिका एवं संकलन, ग्रंथादिमे विवेचित अछि।

मैथिली विभाग, आर.एन.ए.आर. कालेज, समस्तीपुर



थारू संस्कृतिकेँ उद्घाटक

–अश्विनी कुमार आलोक

वाल्यावस्थामे मोरंगक नामगुण सुनि जखन प्रो. मौन मोरंग कालेज (बिराट नगर, नेपाल)क सेवा काल (1963-1973) मे एक दिस लोक जीवनमे रसि-बसि 'थारू लोकगीत' (पूर्वांचल पुस्तक भंडार, बिराट नगर, नेपाल, 1968 ई.) केँ बटोरलनि तँ दोसर दिस नागर जीवनमे अपनाकेँ साधि नेपालक मैथिली साहित्यक इतिहास (मैथिली परिषद, बिराटनगर, नेपाल, 1972 ई.) 'मोरंग पदावली' एवं त्रैमासिकी 'मैथिली' (1970-73 ई.)क संपादन ओ प्रकाशनसँ अपन जाहि दूर दृष्टिक परिचय देलनि ओ आब इतिहासक बस्तु बनि गेल अछि। ओ नेपाल तराइक वनवासी थारूक भाषा, साहित्य, गोंदना, कोहबर, नाचगान, समाजशास्त्रीय स्वरूप, धामी-झांक्री, तंत्र-मंत्र, आदिकेँ समग्रतामे उदघाटित कएलनि जे हुनक 'थारू लोकगीत' (1968 ई.) ब्रहमग्राम (1972 ई.) 'सुनसरी' (1977 ई.) एवं 'वाल्मीकिक देश मे' (2005 ई.) मे शब्दांकित अछि।

'थारू लोकगीत'क 'प्राक्कथन'मे ओ स्वीकारने छथि जे पूर्वांचलीय थारू सभक मैथिली लोकगीत हमरा बजौने छल। हम ओकर गीतक आंगनमे गेल छी, रमल छी एवं ओहि सभकेँ लिपिबद्ध कयने छी। हुनक भाषा 'पूर्वी मैथिली (मोरंगिया मैथिली) थिक। अहि गीताकाशक अंत: दिशा सभ हमरा बान्हि लेने छल, अत: भागि नहि सकलहुँ हुनक लोकगीतक समुद्र मंथनसँ जे विधायी गीतरत्न सभ प्राप्त भेल, तकर एकटा लघु कोश अछि 'थारू लोकगीत।'

प्रो. मौनक 'थारू लोकगीत'क प्रस्तोता छथि नेपालक पूर्व प्रधानमंत्री एवं नेपाल विद्याविद मातृका प्रसाद कोइराला ओ भारतीय लोकविद्याविद डा. ब्रजकिशोर वर्मा मणिपद्म।

श्री कोइरालाक अनुसार प्रो. मौन अपन उपनामक अनुरूप ह्दयसँ प्रफुल्ल छथि मुदा मुखसँ मौन (व्याखान कक्षकेँ छोड़ि)। हुनक लेखनी सदा मुखर रहल अछि। युगयुग सँ विस्मृत मोरंगक मुखसँ अज्ञानक मुखौटाकेँ हटाकए प्रथमत: प्रो. मौन एकर आंतरिक सौंदर्यकेँ वाहय जगतकेँ खोजक नव दिशा देलनि। थारू

लोकनिक मूल आबादी नेपालक भीतर एवं किछु आबादी सीमावर्ती भारतीय भूभाग मे सेहो निवासित अछि। आइ संपूर्ण थरूहटक भाषा मैथिली, भोजपुरी ओ अवधी अछि। नृतत्वक दृष्टिसँ ओ आकृतिसँ पहाड़ी (किराती एवं मंगोलीय) मूलक लगैत अछि मुदा भाषायी दृष्टि सँ आर्य छथि। 'थारू लोकगीत आब हुनक सांस्कृतिक संपदा बलि गेल अछि।

डा. मणिपद्मक अनुसार प्रो. मौन थारू लोकगीत सभक संकलन, अध्ययन ओ विश्लेषण बड़ श्रम साधनासँ केलनि। से एकटा बड़ पैघ मूल्यवान सेवा, विलक्षण काज ओ गौरवपूर्ण उपलब्धि भेल। अहि बहन्ने मोरंगक सांस्कृतिक वैभवकेँ इजोतमे आनवाक जतेक तप ओ कऽ रहल छथि से हिनकेसँ संभव। अत: श्री कोइराला ओ डा. मणिपद्मक अनुसार प्रो. मौनक 'थारू लोकगीत'क प्रस्तुति लोक संस्कृति ओ साहित्य जगतमे एकटा कीर्तिमान स्थापित कएलक।

प्रो. मौनक थारू लोकनिक समाजशास्त्रीय अवधारणा एवं वन प्रांतरक अस्वस्थ्यकर परिवेशमे रहनिहार हुनक सांस्कृतिक वैभवकेँ जाहि सूक्ष्मतासँ देखि अक्षर जगतक आगाँ रखने छथि, तकर पुनरावलोकन आवश्यक अछि। ओ थारू लोकनिक आकृतिसँ मंगोल एवं भाषासँ आर्य मानैत छथि। नेपालक थारू ओहिना मैथिली, भोजपुरी ओ अवधी बजैत छथि जहिना पाश्ववर्ती भारतीय भूभागक लोक बजैत छथि। पूर्वी नेपाल तराइक थारू अपनाकेँ पश्चिमसँ आगत अयोध्यावासी कोशला (कोचिला) मूलक छथि। राम हुनक अराध्य छनि। संभवत: कोशल पर काशीक काक्रमणसँ हिनक एकटा शाखा अहि दुर्गम किंतु सुरक्षिका क्षेत्रमे आबि कऽ बसि गेल हो। साक्य तँ सेहो कोशल छलाह। जनकलाल शर्मा थारू सभकेँ शाक्य वंशीय अवशेष कहने छथि। कपिलवस्तु ओ लुंबिनी थारू बहुल क्षेत्र अछि। श्री कोइराला थारूमे स्थविरवादी (थेर-थेरी तत्व) परंपराक प्रभावक साक्षात कएलनि। स्थविर थविरझथाउरक अहि व्युत्पत्तिक्रमक साक्षात पश्चिम चंपारणक थारू लोकनिक शाक्यवंशी थारू मे देखल जाइत अछि, जनिक आराध्य सहोदरा (यशोधरा) स्थानक मध्यकालीन भगवतीमे अवशिष्ट अछि। अहि स्थानसँ बहुतरास मध्यकालीन अभिलेख, प्रस्तरमूर्ति एवं स्थापत्यक अवशेष सभ प्राप्त अछि। अहि ठामक थारू अपनाकेँ शाक्यवंशी मानैत छथि।

प्रो. ईमान सिंह येमजोंग एकह कोचवंशी किरात मानैत छथि। मुदा कर्नल डाल्टन कोचकेँ द्रविड़मूलक कहैत छथि। पुराण ओ तंत्रशास्त्रमे 'कोच' जातिक लेल 'कुवच' शब्द प्रयुक्त भेल अछि। मुदा नेपाली इतिहासकार वालचंदं शर्मा थारू लोकनिमे वृज्जि सभक संपर्क सूत्रक संभावना देखने छथि। थारू लोकनिमे शाक्य जकां सगोत्र विवाह प्रचलित अछि। डा. कमला सांकृत्यायन थारू लोकनिक मूल मौनखमेर (किरात) मे देखलनि अछि, मुदा ओ मात्र बोक्सा थारूके छोड़ि अन्यान्य प्रशाखामे नहि देखना जाइछ। प्राचीन किरात वंशावलीक अनुसार (प्रेम बहादुर (लिंबू) थारू दोनवारकेँ थाङ दावक संतान कहल गेल अछि। दोनवार तँ थारूक अनुज छथि। थारू ओ दोनवार भारत-नेपाल एवं नेपाल-तिब्बतकेँ सूत्रवद्ध कहने छथि। 'दीनाभद्री' गाथाक रचनाकाल मे थारू ओ दोनवार श्रमजीवी मजदूर बनि गेल छलाह। नेपाल तराइक कोचे, मेचे, धिमाल किरात लोकनिक नवशाखा थिक। आकृतिसँ थारू मंगोल-किरात मूलक लगैत छथि, मुदा हुनक आचार, संस्कार, भाषा-साहित्य आदिमे आर्यत्व अधिक अछि, ई प्रो. मौनक धारणा अछि। जहिना आर्य लोकनिक अभियान पूर्वाभिमुख रहल अछि, तहिना नेपाल तराइमे थारू लोकनिक सेहो पूर्वाभिमुखी रहलाह। अहि क्रमे उत्तर ओ दक्षिणक जातीय संस्कृतिक मिश्रण स्वभाविके मालन जायत। ओ मधेसक राजवंशसँ सेहो सम्बद्ध छलाह। राजपूतक संपर्कसँ ओ राना थारू, कर्णाट वा सेन राज घरानासँ संपर्कक कारणे रजघरिया, मौनख्मेर वा किरातक संसर्ग सँ बोक्सा एवं जनपद विशेषमे वासित भेने ओ कोशला, (कोचिला), चितौनियां (चित्तौन : चित्रवन), सप्तरिया (सप्तरी), मोरंगिया (मोरंग), डंगोरिया (डांग-देखरी), नवलपुरिया (नवलपुर) आदि कहौलनि। अत: थारू एकटा मिश्रित रक्तक रहस्यमय जाति बनि गेल अछि। स्थान भेद, संस्कार भेद ओ धर्मभेदक कारणे ओहिमे भिन्नता देखना जाइछ। अत: विभिन्न जनपदीय थारू लोकनिक तुलनात्मक अध्ययनसँ मूल स्वरूपक अभिज्ञान संभव अछि।

प्रो. मौन थारू लोकनिक गहन अध्ययनक क्रम मे 'थारूजाति उत्पत्ति कथा (श्री जयगोपाल चोधरी), थरूहट के बउआ आ बहुरिया, शाक्य मुनि बुद्ध, सांची बरमास (राम प्रसाद राय) आदिकेँ खोजि निकाललनि। तदनुसार (थारू वंशावली) कोशला थारूक वसोवास सेतीसँ कोशीक बीच (सेतीसँ पूर्व ओ सम्पकोशीसँ पश्चिम) कोशला (कोचिल) थारूक अनुजवत दोनवार (पर्वतीय द्रोणक वासी) बनि गेलथि। सप्तरीमे द्रोणवार राजवंश (पुरादित्य गिरिनारायण)क अस्तित्व छलैक। मुदा थारू ओ दोनवार तराईक राजा लोकनिक अधीन सैन्यकर्मी ओ कृषिकर्मी छलाह। सलहेस ओ दीनाभद्रीक लोकगाथा एकर प्रमाण अछि।

पूर्वी थारू लोकनिक भाषाकेँ श्री कोइराला अंग मैथिली ओ डा. मणिपद्म विद्यापतिकालीन मैथिली कहने छथि मुदा प्रो. मौन 'मोरंग प्रदेश की भाषा' अर्थात 'मोरंगिया मैथिली' कहने छथि। नेपालक जनगणनामे भाषानीतिक कारणे थारू भाषाक रूपमे वर्गीकृत कएल गेल (2015) अछि जबकि हुनक भाषा क्षेत्रानुसार मैथिली, भोजपुरी, अवधी एवं कुमाऊनी अछि। प्रो. मौन 'थारू लोकगीत' मे परंपरित लोकगीतक अतिरिक्त किछु भणितांकित गीतकेँ सेहो संकलित कएने

छथि, किएक तँ ओ हिनका 'लोकसँ प्राप्त भेल छल। अहि तरहक गीत 'मोरंग पदावली' ओ विदापत (नाच पटना 2014 ई.) मे संकलित अछि, लोकगीतक वर्गीकृत अध्ययनक क्रममे प्रो. मौनक वर्गीकृत संकलन निम्न प्रकारक अछि—1. ऋतुगीत 2. स्तुति गीत 3.देवदेवी गीत 4. धामि गीत 5. नृत्य गीत 6. विरहगीत 7. संस्कार गीत 8. बालगीत 9. विविध गीत एवं मंत्रगीत। ऋतुगीतमे चांचर, बारहमासा, मलार ओ वसंत गीतकेँ समेटल गेल अछि, जबकि स्तुति गीतक अंतर्गत देवी काली, दुर्गा, त्रिपुर (सुंदरी) बामती, गहिल, गांगो जलेश्वरी राजा सलहेस, राजा ध नपाल ओ राजा विदापतिक गीत संकलित अछि। धामीगीतक अंतर्गत सरियो, सुब्बई, बिच्छू धामी ओ धमिआइन, नृत्यगीतक परिधिमे विदापत, रास, मयूर, झिझिया तथा विरहगीतक सीमामे सामान्य, युगल, हरवाह, महौत, हेमती ओ राधा विरह समाविष्ट अछि। संस्कारगीतक अंतर्गत सोहर, मंगल ओ निर्गुण तथा बालगीतक परिधिमे पालन ओ खेलगीत संग्रहीत अछि। विविध गीतक अंतर्गत कोशी, मधवलाल, पराती, प्रेम, गौरी परिणय (सम्मरि), सियहरण (लोक रामायण), आवन ओ चलंती (मृत्यु संस्कार) गीत सम्मिलित अछि। अहि लोकगीत संकलनक विशिष्ट वर्गीकृत पक्ष अछि—मंत्रगीत। मंत्र गोप्य होइत अछि मुदा पहिल बेर ओ प्रो. मौन द्वारा शब्दांकित भेल अछि। सृष्टि (काव्य), भूत निवारण, अंग बन्ही (अंग विन्यास) चाटी (सांप), माथा हाथ, देवी, पशुरोग, रक्तमाला, वामती, काली, नदीलाल, डैनीवाण, खालाकाट, भूतवाधा ओ हँसनी (खिझनी)।

'थारू लोकगीतक दोसर पक्ष अछि बिरह ओ बारहमासा गीत। बिरहक विस्तार हरवाह ओ महाओतसँ हेमती ओ राधा आभिजात्य परिवेश शब्दांकित अछि। तहिना बारहमासा यद्यपि ऋतु गीतक अंग थिक तथापि ओ अपन विभिन्न स्वरूपमे शब्दांकित अछि—सांची बरमास, पहु बरमास, हरिबरमास, साधु बरमास, जगरनथिया बरमास, केलि बरमास, नारी बरमास ओ चैतावली बरमास। संपूर्ण भारतीय लोक साहित्यमे बारहमासाक नानाविध स्वरूपक पहिल झांकी थारू लोकगीतक आकाशमे भेटैत अछि। बारमासागीतमे करूणाक मार्मिक अभिव्यंजना भेल अछि। एवं प्रकारें 'थारू लोकगीत' एकटा विशिष्ट मैथिली लोकगीत संकलन थिक, जे नेपालक वनवासी जाति थारू लोकनिक गीतक आंगनसँ बटोरल गेल अछि। आलोच्य पुस्तक हिन्दीमे विवेचित अछि मुदा लोकगीत मैथिलीमे अछि।

'मिथिला मिहिर'क संपादक सुधांशु शेखर चौधरी (मि.मि. 29 अप्रैल 1972 ई.) लिखने छलाह—'जे कार्य कऽ देवेन्द्र सत्यार्थी हिन्दीमे प्रतिष्ठित ओ सम्मानित भेलाह प्राय: तेहने कार्य श्री मौन मैथिलीक हेतु कऽ रहलाह अछि। डा. शैलेन्द्र नाथ झाक अनुसार प्रो. मौनक ई खोज अत्यंत महत्वपूर्ण अछि जे नेपालक आदिवासी थारू लोकनिक भाषा मैथिली थिक जनिका सँ प्रो. मौन 'मोरंग पदावली' ओ 'विदापत'केँ छानि निकाललनि। आधुनिक परिप्रेक्ष्यमे 'थारू लोकगीतक पुनर्मुद्रण आवश्यक अछि, संगे भोजपुरी ओ अवधी भाषी थारू लोकनिक लोकगीत सभक संकलनसँ एकरा समग्रतामे मूल्यांकन आवश्यक भऽ गेल अछि।

प्रो. मौन 'थारू लोकगीत' लिखि कऽ (1968 ई.) बैसि नहि रहलाह बल्कि स्वदेश लौटि थारू संस्कृतिक विभिन्न पक्ष सभक अनुशीलनमे लागि गेलाह। थारू जीवनक आंखी देखल एवं भोगल क्षण सभकेँ समेटि कऽ 'ब्रहमग्राम (दरभंगा, 1972 ई.) 'सुनसरी' (1975 ई.) एवं 'बाल्मीकिक देशमे (2005 ई) मे राखि देलनि। ओ सभ कथा—रिपोर्ताज शैलीमे अभिव्यंजित अछि—अठारह राजा: बहत्तर पोखरी (धर्मयुग, 7 नवम्बर 1965 ई.) दोहाय राजा धनपाल (धर्मयुग, 29 मई 1966 ई.), मोरंग-मोरंग मै सुन्यौं (धर्मयुग, 28 मई 1972 ई.) सोना केर दियरा (आज वाराणसी, 10 मई 1974 ई.), एक नदी की प्रणय गाथा (साप्ताहिक हिन्दुस्तान, दिल्ली-19 अक्तूबर 1975 ई.) यात्रा थारू ग्रामंचल की (ज्ञानोदय, कलकत्ता, नई कलम अंक आदि।

प्रो. मौनक समस्त लेखनक आधासँ बेसी नेपाल विषयक अछि। थारू लोक संस्कृतिसँ सम्बद्ध निम्नलिखित हिन्दी ओ मैथिली आलेख सभक शीर्षक अछि—1. थारू लोकगीत (माध्यम, इलाहाबाद, अगस्त 1968 ई.) 2. थरूहट की लोकचित्र शैलियां (लोककला, उदयपुर राजस्थान, जनवरी 1970 ई.) 3. मोरंग की मैथिली लोकोक्तियां (परिषद पत्रिका, पटना, अप्रैल 1973 ई.) 4. थरूहट के गोदने (रंगायन, उदयपुर, दिसम्बर 1976 ई.) 5. थरूहट की लोककथाएं (परिषद पत्रिका, पटना जुलाई, 1981 ई.) मोरंगके लोक देवता राजा धनपाल (रंगायन, उदयपुर, दिसम्बर 1982 ई.) 7. मिथिलाक नजरि : मोरंगक रूप (वैदेही, दरभंगा, मई 1964 ई.) 8. मैथिली लोकगाथाक नेपालीय संदर्भ (वैदेही, मार्च 1990 ई.) 9. मिथिलांचलक थारू (वैदेही दिसम्बर 1999 ई.) 10. थरूहट का लोकसाहित्य (भारतीय लोकसाहित्य कोश 6. नवकी दिल्ली, 2010 ई.) इत्यादि।

अंतत: ई निसंकोच स्वीकार्य अछि जे प्रो. प्रफुल्ल कुमार सिंह मौन राहुल सांकृत्यायन, रघुवीर ओ देवेन्द्र सत्यार्थीक यायावरीक परंपरामे पूर्वी नेपालक थरूहटक जमीनी सर्वेक्षण कऽ गिरि-गहबरमे विशृंखलित ज्ञान राशिके बटोरि अक्षर जगतक आगाँ राखलनि, जे हुनका नेपालक संदर्भमे चिरस्मरणीय बना देलक अछि।

मो. पत्रकार नगर, महनार, वैशाली



'बाल्मीकिक देश मे' बिहरैत बनजारा मन

–अरुण कुमार पाठक

प्रो. मौनक 'बाल्मीकिक देशमे' (2005 ई.) सूत्रक माध्यमे कहल गेल मैथिली आख्यानक गुलदस्ता थिक। अहिमे कतहु अंतः साक्ष्यक परिप्रेक्ष्यमे, कतहु घटना–दुर्घटनाक परिवेशमे, कतहु गामघरक आंगनसँ द्वारि धरि तँ कतहु मसानघाट धरि प्रो. मौनक बनजारा मन बिहरैत देखाइत अछि। आलोच्य ग्रंथमे जतेक ते किछु कहल गेल अछि ओ अपन कालखंडसँ सूत्रबद्ध अछि। जानकी जन्मभूमि जनकपुर (राजा जनक पतिया लिखि भेजल)सँ बाल्मीकि आश्रम (बाल्मीकिक देशमे) धरि आख्यानक माध्यमे अहि विशाल सांस्कृतिक भूभागक एकटा स्वरूप ठाढ़ करबाक सार्थक प्रयास कयल गेल अछि। संकलित आख्यान सभमे तत्कालीन समाजक एवं देश–कालक यथार्थ चित्रण वृतचित्रक भांति देखाइत अछि।

'बाल्मीकिक देशमे' प्रो. प्रफुल्ल कुमार सिंह मौनक अविभाजित मिथिला (सांस्कृतिक मिथिला)क आख्यान शैलीमे लिखल गेल एकटा ऐतिहासिक दस्तावेजह बनि गेल अछि। ओला प्रो. मौन अहि विधाकेँ रिपोर्ताज मानैत छथि। संकलित आख्यान सभमे मिथिलांचलक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक परंपरा, भौगोलिक परिवेश, गाथा गीतक प्रसंग, लोकानुरंजनक परिवर्तित स्वरूप, नृत्यवाटिका (वैले) आदिक तत्व ओ तथ्य सभकेँ समन्वित कऽ ओकरा जीवंत रेखाचित्रक रूपमे प्रस्फुटित (ब्लूम) कयल गेल अछि।

उपक्रमणिकाक अनुसार आलोच्य पुस्तकमे निम्नलिखित आख्यान सभ समाविष्ट अछि–1. राजा जनक पतिया लिखि भेजल, 2. जयवर्धन सलहेस, 3. पंचायनधाम, 4. दोहाय कामरूकामाख्या, 5. बनजारामन, 6. पहिल सपना हो केवल, 7. मांजरिक अभियान, 8. 416 डाउन, 9. गाम कहियो अनाथ नहि होयत, 10. बाल्मीकिक देशमे एवं 11. बकसि देहू रानू केर प्राण। 'राजा जनक पतिया लिखि भेजल (नेपालमे (जनकपुर क्षेत्र) लोकप्रिय बनि पाठ्यक्रममे सम्मिलित भऽ गेल, विवाह पंचमीक अवसर पर जनकपुर ग्लोबल विलेज (विश्वग्राम) बनि जाइत अछि। देशी–विदेशी धर्मपात्री ओ पर्यटक सभक विश्वग्रामक यात्राक लेल कोनो

औपचारिक पत्रामंत्रणक आवश्यकता नहि। अपन घर आंगन जकाँ लागत जनकपुर।

'जयवर्धन सलहेस' मे मैथिली लोकगाथा नामक अश्वारोही जयवर्धन सलहेस ओ प्रेयसी कुसमा मालिनक प्रेमकथाक गायिकी एवं ग्रामीण मंच पर खेलाइत सलहेस नाच। संदेश अछि–'धनि छी वनदेवी, करुणामयी कुसमा। लौकिक प्रेमकेँ त्यागि देश प्रेमकेँ अपन जीवन धर्म बनौनिहारि मालिक श्री।

'पंचायन धाम' मे गाथानायक नैका बनजारा, राजकुमारी चंदना ओ दस्युराज कालबज्रक त्रिकोणमे विन्यस्त अछि कथावृत्त। ''हमर बनजारा मन ढूहामे डीह–डाबर मे, दैता बांध पर, वनप्रांतरक झाड़ीखंडमे किछु खोजि रहल अछि। ''कालाबंजर नवका आवादीक क्षेत्र, वर्षक पहिल दिन सिरूआक मेला चक्र। पंचायन माने पंचदेवोपासक भूमि। भैरव धामीक टिनहा मंदिर। डिम–डिम डिमाक्। उगदी–एकमा चानवेला–सिमरिया–पकड़ीमे मेलाचक्रक पड़ाव। दारूक निसामे डूबल सत्तन सरदार। हाथी पर चढ़लि जमीदारक सुआसिन,–एक से एक स्थूल छायाचित्र सभक अलबम बनल अछि पंचायनधाम मे।

'दोहाय कामरूकामच्छा' मे कामरूप–कामाख्याक' मायावी लोक चित्रित अछि। कामाख्याक कदलीवनक कामा योगिनीक बहिन नैना–मैना तिरहुतक गामे–गाम बलि पुरुषक संधान मे छिछिया रहल अछि। कदलीवनक कामा योगिनीक कामपाशमे फंसल छलाह ज्योतिष पंजियार। दिनमे पिंजड़ा बंद सुगा बनल वा खूटा मे बान्हल भेड़, मुदा रातिमे साक्षात मनुक्खक लीलालोक थिक कामाख्या कामक्रीड़ाक लेल। योगिनी सभकेँ नित नव पुरुषक साहचर्य सुख चिन्हित छलैक। जाग मछंदर गोरथ आया'क तर्ज पर 'जाग ज्योतिष कारिख आया' विन्यस्त अछि। बबुआ घुरल परौली राज। कामरू रिटर्न। धनि कारिख पंजियार। धनि मिथिलाक सिद्ध सपूत कारिख पंजयार।

'बनजारा मन' वस्तुतः स्वभावमे बिहरैत एक ठामसँ दोसर ठाम। डारैपर डेरा। सिरकी खसाउ आ पसारु अपन नट खेल। अहिमे प्रो. मौन नवका बनजारा बनल छथि–'कान्हसँ लटकल, ओहि मे डायरी, कलम, कैमरा ओ टेपरिकार्डर। आर मन मिथिला सँ मोरंग धरि बनिज कयनिहार फेकूराम। आमक गाछीमे पड़ाव। लदनियां बरदक जेर। वनिजसँ दुनू जनपदकेँ जोड़ैत। पहिने मोरंग बनजारा लोकनिक स्वर्णभूमि छल, आब तस्कर सभहक गढ़ बनि गेल अछि। अपन कामोधान मे कुसुमा मालिनक भोगक लेल एकटा आहुति सहजे भेटि गेल मिथिलाक नव बनजारा फेकूराम। कुसमाक चक्रगृहक साधनामे छटपटाइत फेकूराम–सार्थवाह सभकेँ कहि देवनि–मोरंग नहि आउ। हमरा संग मर्मांतक छल भेल। अहिसँ बचू।

'पहिल सपना हो केवल'क आख्यान विलक्षण अछि। केवल बाबा'क

गाथा गायक लक्खी गांजा ओ चिलमक योग बैसबैत मानरि पर शुरू भऽ गेल–दोहाय बाबा केवल! मलाह लोकनिक गाथा नायक पहिल सपना हो केवल, सैरा (घाट) असलान। दोसर सपना हो केवल मुरलीवन। तेसर सपना हो केवल मोरंग राज।' लोकदेवी ओ देवता सभक लीला भूमि मोरंग। एकटा रहस्यमय लोक। जीवन यात्राक एक-एकटा लक्ष्य। उद्देश्य जनित यात्राक संदेश। सैरा घाटक विषाक्त जलाशय। नाग-नागिनक क्रीड़ास्थल। प्रो. मौनक संदेश छनि–'सपना केँ साकार कयल जाय जँ संकल्पदृढ़ हो आर ओकरा लेल इमानदास प्रयास हो।

'मांजरिक अभियान' सेहो लक्ष्य प्राप्तिक लेल दृढ़ संकल्पित प्रयत्नक बानगी थिक। वस्तुत: ओ मीरसुल्तानक नूजागढ़ विजय अभियान थिक। मिथिलाक एकमात्र मुस्लिम लोकगाथा। मांजरिक पुरुषवेशमे घोड़सवारी, नूजागढ़क नवाब ओ मीरसैयद (मुसलमान)क बीच भीषण संघर्ष भेल छल।

अहि सभसँ सर्वथा भिन्न अछि–'416 डाउन' आधुनिक परिवेशमे मानवीय मूल्य ओ संवेदनाकेँ झकझोंरैत एकटा मर्मस्पर्शी रिपोर्ताज। बदलाघाटक गागमतीक पुलकेँ पार करैत 416 डाउन रेलगाड़ी जोरगर झटकाक संग नदीमे खसि पड़लैक। सैकड़ो लोगक जलसमाधि आर बांचल लोग सभक संग छीना झपटी, लूटपाटि, मारपीट बलात्कार, अपहरणक दृश्य, बाप रे बाप! युद्ध स्तर पर राहत ओ बचाव कार्य मलहमक काज करैत अछि। आकाशमे एकटा शिलालेख टंगि गेल–पुल सं. 51 पर 416 डाउन सवारी गाड़ी दुर्घटनाग्रस्त भऽ गेल छल।

'गाम कहियो अनाथ नहि होएत' सेहो आधुनिक परिवेशक द्वंद्व प्रतिद्वंद्वक बीच मारकाटक घटना आम भऽ गेल अछि। मुदा गामक लोहबाक कोटमे फरियाद पहुँचिते लोहवाक फैसला सार्वजनिक भऽ जाइत अछि। मुदा लोहबा भोरेभोर मारल गेल गोलीसँ। ओकर समाधि पर तुलसीक गाछ रोपैत ओकर बेटा संकलित भेल–'गाम कहियो अनाथ नहि होयत।'

पुस्तकक नामकरण भेल–'वाल्मीकिक देशमे'। सार्थक छैक। अहि देशमे राजरानी सीताकेँ वनवास, देश प्रेमी सलहेस, केवलक सपना, मांजरिक अभियान, आर धसनाक तरमे औनाइत रत्नू सरदारक प्राण, आदि एकसे एक जीवंत, प्रेरणास्पद ओ मर्माहतक कथाभूमिक क्षेत्र। डा. रमानन्द झा रमण सत्ते कहने छथि– 'प्रो. मौन मैथिलीक एकटा सजग साहित्यकार छथि जे वर्तमान आक्रांत युगकेँ जीवन रस प्रदान करबाक हेतु परंपरा ओ इतिहाससँ उच्च सांस्कृतिक मूल्यक आसव छानि छानि कऽ मुक्त हस्ते वितरित कऽ रहल छथि।

विक्रमपुर, सहदेई (वैशाली), मो.-09135895244



निबन्ध

कथा सृजन आ कलात्मक बोध

–चन्द्रेश

बहुमुखी प्रतिभाक धनी डा. प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन' मैथिली साहित्यक इनल-गिनल रचनाकारमे छथि। हिनक साहित्यिक अवदान विभिन्न विधामे रहल अछि। खासकऽ निबन्धकारक छवि-छटा लऽ कऽ लोक साहित्यमे हिनक स्थान सुरक्षित अछि। नेपालक मैथिली साहित्यक इतिहास हिनक अमूल्य धरोहर थिक। एतबे नहि, विभिन्न प्रकारक विभिन्न मन:स्थितिक रचना हिनक स्वस्थ साहित्यक मानसिकताक लक्षण थिक। ओना ओ कथा कम लिखने छथि। मुदा, जतबे लिखलनि, जैह लिखलनि से जँ परिमाणात्मक कमे हो आ गुणात्मक दृष्टिएं सोचबाक हेतु विन्दु बनैत हो तँ सैह कोन कम थिक?

आब प्रश्न उठब स्वभाविक अछि जे की कारण जे कथाकारक उत्स हिनका निबन्धकार दिस जोड़ि लेलकनि। एहि तहमे जयबा सँ पहिने हिनक कथा दिस नजरि घुमबय पड़ैत अछि।

ओ कथा कहैत छथि ने, कथेक स्वादमे कथा रचैत छथि। यैह आस्वादन कथा-रसमे बदलैत अछि। बिना कोनो ताम-झामके ँ ओ कथाक प्रस्तुति करैत छथि। त ँ कथाक तानी-भरनीमे कोनो तेहन ओझराहट नहि भेटैत अछि। ओ वातावरणक निर्माण करैत छथि, मुदा अत्यल्प वा आवश्यकतानुकूल। वातावरणमे बौआयब कथाकारके ँ ततबे दूर धरि पियरगर छनि जतेक दूर धरि पात्रक उन्मुक्ततामे बन्हन नहि बूझि पड़य। ते ँ स्वाभाविक अछि जे वातावरण पात्रक चरित्र-चित्रणमे सहायक सिद्ध होइत अछि। किएक तँ स्थितिके ँ तटस्थतासँ चित्रित करबाक भरपूर प्रयास कयल अछि। जे ँ कोनो असार-पसार बेसी नहि अछि ते ँ यथार्थ सत्यके ँ प्रकट कयल अछि। प्राय: ई देखल जाइत अछि जे हिनक समसामयिक कतिपय कथाकारक कथा मे वातावरणक प्रति अतिरिक्त सजगता देखाय पड़ैत अछि। मुदा, हिनक रचना सोझ डारिएँ चलैत अछि आ एहि दैखिक गतिमे गतिशीलताक यथार्थ रूप प्रकट होइत अछि।

ई कोनो कथा बौद्धिताक छल मे ने तँ पाठकके ँ भरमाबय चाहैत छथि

आ ने शब्दक जालमे ओझराबय। जँ ई कोनो बातकेँ दू टूक कहय चाहैत छथि तेँ ठाइ-पठाई हिनक कथ्य टनटन बजैत प्रतीत होइत अछि।

ई अपन कथामे जे कोनो समस्याकेँ उठबैत छथि से नितान्त परिचित रहैत अछि। मुदा, कथ्यकेँ जाहि विन्दु पर लऽ आनैत छथि से परिचित होइतो उपरिचित भऽ नव स्वाद दैत अछि। ई टटका अनुभूति कथा-संसारक अपन एकटा दुनिया बनबैत अछि।

हिनक कथामे विकास आ परिवर्तनक गति ततेक क्षिप्रताक सङ नहि ओइत अछि। हिनक कथाक 'टोन' 'माइल्ड' रहैत अछि। खासकऽ मानवीय करुणाक व्याप्तिमे सामाजिक अन्तर्विरोध उभरैत अछि। तेँ आक्रोशक स्वर उभरितो परिवर्तनक सहज, स्वाभाविक आ सूक्ष्म प्रक्रिया परिलक्षित होइत अछि।

कथाकार अस्तित्वक धरातल पर मौलिकताक किछु एहन प्रश्न छोड़ैत छथि जे पाठककेँ छिलमिला दैत अछि। मानवीय संवेदनासँ उभारि कऽ एकटा प्रश्न ठाढ़ करैत छथि। एक दिस जँ आर्थिक संकटसँ जूझैत सामान्य जनजीवनक प्रतिबिम्ब अंकित अछि तँ दोसर दिस अपसंस्कृतिक बढ़ैत दबाबक फलस्वरूप विखण्डित मानवीय मूल्यक परिलक्षित प्रभाव दृष्टिगत होइत अछि।

हिनक कथामे विविधता एकटा आकार नेने रहैत अछि। ई दृष्टि बदलैत जीवन-मूल्य मानवीय त्रासदी, सेक्स, असंतोष, खौंझ, पीड़ा आदिकेँ अपन संस्कार बनबैत अछि। समकालीन समयक जीवन यथार्थसँ अपरिचितकेँ परिचित करबैत छथि। खासकऽ व्यक्ति आ समाजक बहुस्तरीय सम्बन्धकेँ अभिव्यक्ति देबाक सार्थक आ सफल प्रयास कयल अछि। खूजिकऽ व्यंग्यधर्मी स्वरमे कोनो बातकेँ सटीक राखब हिनक कुशल कौशलताक परिचायक बनैत अछि।

मनुक्ख अपन स्थितिक उपयोग कतेक चतुरता आ धूर्ततामे करैत अछि तकर सटीक प्रयोग 'भगवती आबि गेली' मे (11 सितम्बर 83, मिथिला मिहिर-19) भेल अछि। एहि मध्य ई देखाओल गेल अछि जे व्यक्ति अपनाकेँ सर्वोपरि भूखण्डक चित्रण होइतो संपूर्णताक आकार नेने सम्पूर्ण राय द्वारा प्रतिभा चोरायब आ सात समुद्र पार विदेशमे बेचबाक लेल पचीस हजार टाकाक लोभे कलकत्ताक चक्रवर्ती गोदाममे पहुँचायब। कहि सकैत छी जे एही छोट छीन घटनाकेँ नव रंग-टीप प्रदान कयल गेल अछि। एक दिस धार्मिक भावनाक पक्ष उभारल गेल अछि तँ दोसर दिस आस्तिकताक एहि मुद्दा पर एकटा प्रश्न चेन्ह सेहो ठाढ़ कयल अछि।

व्यवस्थाक एहि प्रश्न पर सक्रिय गिरोह सेहो कम नहि अछि। ओ प्रशासनक आँखिमे धूरा झोंकिते टा नहि अछि प्रत्युत दू हाथ लैतो अछि। यैह संशय आ आशंका एकटा असुरक्षा भावबोधकेँ जन्म दैत अछि। एकर दोषी के? संरक्षण देमऽवला के अछि? अर्थात् समाजक घातक लोक के? बूझियौक। अनबूझ बनब ओहि व्यक्तिक पर्दाफाश करैत अछि ई कथा जे सामाजिक व्यवस्थाक अढ़ मे छिरहरा खेलाइत अपन स्वार्थ सिद्ध करैत अछि। एहने व्यक्ति समाज आ राष्ट्रक कोँढ़केँ हिला दैत अछि।

ई सत्य अछि जे संरक्षणे देनिहार ओहि वर्गक बनैत अछि जे समाजक कोढ़ थिक। तेँ ओ गिरोह सक्रिय भऽ तेनाकऽ उठि जाइत अछि जे ककरो माथकेँ अपन लातसँ दाबिकऽ राखि पयबामे नहि हिचकैत अछि। विभिन्न आधुनिक अस्त्र-शस्त्रक बुत्ता पर भने ओ एकछत्र सत्ताक दावेदारी बूझय, मुदा अन्याय अन्याये थिक आ न्यायक जीत होइते छैक। हँ, संघर्षमे कतेक पापड़ बेलय पड़ैत छैक एहि दिस कथाकरक आँखि चौकन्न रहल अछि।

कुमर जी, मि. मित्रा, मि. उराँव, मि. प्रदीप आदिक सक्रिय सहयोगें जतय भगवती सुरक्षित भेटैत छथि आ गेट पार करवाकाल भगवतीवला ट्रक टाइमबमक निशानसँ बँचि जाइत अछि। ई वर्तमानक भयावहतामे आतंकित भविष्य दिस इंगित करैत अछि। कथाकारक यैह सजग चेतना आ मानसिकता जीवनक प्रामाणिक यथार्थ रूपमे सोझाँ-सांझी पाठकक समक्ष अबैत अछि। जे समयक सत्यता समकालीन यथार्थक विश्वसनीयताकेँ रेखांकित करैत अछि तेँ कथा प्रभावोत्पादक बनैत अछि।

पीड़ा आ यातनाक दु:ख-दर्दमे जीवैत 'चुटकी भरि नोन' (10 सितम्बर 78 मि.मि.-12) कथा एकटा फराक आ समानान्तर संसार रचैत अछि। मुदा, ई संसार कोनो आन लोकक नहि अछि प्रत्युत एकटा खास भूखण्डक चित्रण होइतो एकटा आकार नेने सम्पूर्ण नाच मानक आन्तरिक मन:स्थिति आ अन्तर्द्वन्द्वक भौगोलिक परिवेशक चित्रण थिक। एहि मध्य परिवेश आ समाजक टकराहटि व्याप्त अछि। ततबे नहि, एकटा नव समीकरणमे स्थितिक विश्लेषण करैत 'चुटकी भरि नोन'क माध्यमे सम्पूर्ण सामाजिक व्यवस्थाक विरोधक कथा थिक। एहिमे कथाकार स्थितिकेँ तटस्थ भावेँ चित्रित करैत गहराइमे पकड़बाक जे प्रयास कयल अछि से अनुभूतिगत सत्यताक दस्तावेज बनैत अछि। कारण, नव शिल्पक विकासमे नव आयाम अपनाओल गेल अछि। आमलोकक एकरस जिनगीसँ गुजरैत एकरसताक उबाउपन मे समसामयिक जीवन यथार्थक फोटोग्रैफिक प्रस्तुति थिक ई कथा।

एक दिस महानगरीय, बोधक ललक लोकक मोनमे अपना दिस गछारने रहैत अछि तँ दोसर दिस गामक माटि-पानिक सुगन्धि बरबस अपना दिस

आकर्षित कयने रहैत अछि। ई सत्य अछि जे गाम-घरकेँ ओहने व्यक्ति डेबने अछि जे अपन संस्कृतिकेँ जोगओने अछि। एक दिस गमैया लोक संस्कृति मूल्य पर आधारित जीवन व्यतीत करैत अछि तँ दोसर दिस इलीट वर्गक लोक मुखड़ा चढ़ौने अछि जे किनसाइत पोल ने खूजि जाय। एहि दूनू वर्गक प्रतिनिधित्वक झलकी एहि छोट छीन कथामे भेटि जाइत अछि।

निम्नवर्गीय परिवारक 'मुरिया गाम'क कल्पित स्वप्न चहटगर स्वाद पर टेकल अछि। ओकर मनोरथ पूर होयबा पर छैक। ओकर आशाक टकटकी पाड़ीक मटकीक करेजी पर टेकल छलैक। मुदा, नोनक कमी? 'रौदी'क देल पाँचटा पाइ हाथ अबिते ओकर मोन सातम आकाश पर टिकि जाइत छैक। ओ हुलसित 'बीजल'क दोकान पर पाँच पाइक नोन मङैत अछि। मास दिन पहिने पाँच पाइक नोनसँ की फोरन हेतौक!' अर्थात् पाँच टके नोन? महगीक ई स्थिति जे कहियो नोन सभ जिनिससँ सस्त छल आ एकर सैरियतक चरम महत्ता छल। आइ नोन आकाश की ठेकल अछि जे ओकर जीभक स्वाद बदलि जाइत छैक। मुदा, ओकर अस्मिता सुषुप्तावस्थामे नहि रहि पबैत छैक। ओकर जागल अस्मिता-बोध नव भविष्यक संकेतमे फूटि पड़ैत छैक–'चुटकी भरि सेनूर रहतैक तँ चुटकी भरि नोनसँ काज चलि जयतैक।' एहि प्रकारेँ आर्थिक संघर्ष आ चेतनाक धरातलमे कथाक चरम परिणति होइत अछि। आस्थानादी दृष्टिकोण आ दायित्वबोधक प्रवल भावमे एहि कथाक मूलविन्दू यथार्थ चेतनाकेँ सही परिप्रेक्ष्यमे उद्घाटित करैत अछि। एहि कथाक भाषा सजीव आ पात्रानुकूल अछि जे परिवेशक निर्माणमे सबल सिद्ध होइत अछि। खासकऽ 'मुरिया माय'क चित्रणमे नारी-मोनक आन्तरिक मन:स्थिति आ अन्तर्द्वन्द्वक जे यथार्थ रूप स्वत: प्रकट भेल अछि से आजुक मानवीय जीवनक मानसिक अन्तर्द्वन्द्व आ कुण्ठाकेँ यथार्थपरक दृष्टिएँ व्यञ्जित करैत अछि। एहि कथाक छोट छीन 'कैन्वास' (पसार) पर चरित्रक रेखा स्पष्टतया उभरि कऽ विस्तृत क्षेत्रकेँ द्योतित करैत अछि। अपन प्रभावान्वतिमे ई एकटा बेजोर कथा थिक जे पाठकक संवेदनशील मोनकेँ छिलमिला कऽ रचि-बसि जाइत अछि।

'भदवाक झण्डा' (25 सितम्बर 76, मिथिला मिहिर-14) कथा बाल मजूरी प्रथा पर आधारित अछि। एहिमे बाल मोनक चित्रण नीक ढङे भेल अछि। 'बिलटा'क माध्यमे कथाकार ई देखयबाक प्रयास कयल अछि जे जीवनक पीड़ा आ दर्दमे मानवीय चेतनाक विकास स्वत: सिद्ध होइत अछि। ओना सामाजिक रूढ़क अढ़मे छिरहरा खेलाइत अन्धविश्वास कोना कऽ सहैत रहैत छैक आ भरमा कऽ स्वार्थ सिद्धिमे सहायक होइत अछि। एहि रूढ़ि आ भ्रष्ट संस्कारक प्रति विद्रोहक भाव 'विलटा'क मोनमे बैसि की जाइत छैक जे ओ बाजि उठैत अछि–'आब हम अपनेसँ सभटा झण्डाकेँ उखाड़ि कऽ गाम चल जयबै।'

ओकर बाल मोन पर 'भदबाक झंडा' भयक संवेदना अवश्य जगबैत अछि, ओ डेरायल अछि आ दिन पर दिन खेपने चल जाइत अछि। मुदा, जखन ओकर भरोस टूटि जाइत छैक आ ओ बूझि जाइत अछि जे ई रूढ़ वर्जना अपने नहि टूटतैक आ ओकरा स्वयं तोड़य पड़तैक तँ ओ उथत्त भऽ जाइत अछि। ओकरा सुविधावादी संस्कृति लोभ जकड़ि नहि पबैत छैक आ गाम-घरक सोह होइतहि मोन अउना उठैत छैक। एहि कथामे घटना आ चरित्र गौज रहितो आन्तरिक संवेदना ततेक मुखर अछि जे कथाकेँ जीवन्त बनबैत अछि। एहिमे तीव्रतासँ आजुक परिवेशमे विकसित होइत विकास आ परिवर्तनकेँ देखाओल गेल अछि। मार्मिक वेदनाक बोल देब एहि कथाक मुख्य स्वर अछि।

'उधियाइत' (26 जुलाई 76, मिथिला मिहिर-21) भावुक मोनक कथा थिक। एहि कथाक वस्तु आ चरित्रमे कोनो नवीनता नहि अछि। 'रीता'क माछमे कथाकार परिवेशकेँ उभारि कऽ स्थितिक पाछाँ नुकायल अमानवीयताकेँ देखार कयल अछि। विवशताक पीड़ामे पनुगैत एक दिस भावनात्मक जीवन-मूल्यक चित्रण अछि तँ दोसर दिस पुरुषक कमजोरी आ नैतिक मूल्यक स्खलनक सजीव चित्र अछि। जेँ कि कथाकार जहिनाक तहिना नारी मोनक अनुभवकेँ रखलनि अछि तेँ भावुकतासँ बाँचि नहि पओलनि अछि। एहि भावुकतामे स्थितिक द्वन्द्व पूर्णरूपेण नहि उभरि पाओल अछि। सरलतासँ कथ्यकेँ सम्प्रेषित करबाक क्रममे मांसल सौन्दर्यकेँ उभारबामे सफल होइत अछि। मुदा, नारी मोनक मर्मकेँ सूक्ष्मतासँ उद्घाटित नहि होयबाक फलस्वरूप सामाजिक परिवर्तनक स्पष्ट आभास खूजि कऽ उभारि नहि पबैत अछि। ओना पुरुष प्रधान समाजमे व्यवस्थाजन्य विसंगतिक पोल केँ उधेसैत अछि। खासकऽ शीर्षक सटीक आ सार्थक अछि। देहक गर्म आँचमे वासनाकेँ उभारि कऽ सेक्स-भावक निमाहता कुशलताक संग कयल अछि। 'रीता'क जुआन देह आ आँखिक भूल कोना कऽ काज सुतारि लैत अछि तकर सार्थक अभिव्यक्तिमे सम्बन्ध आ मूल्यक भीतर अन्तर्निहित अर्थक मोल-भाओ प्रकट होइत अछि।

आश्वासन आ आशावाद पर टेकल कथा 'मुदा आश्वासन' (20 मार्च 1977, मिथिला मिहिर-19) मात्र फूसियेक आश्वासन स्वाद नहि दैत अछि। प्रत्युत 'फतिंगा' सन व्यक्तिक माध्यमे ओकर कथा वस्तुक दबाबमे लिखल गेल कथा थिक। यथार्थ आ जीवनक स्वप्नसँ टकराइत प्रेम आ मानवीय संवेदनाक समन्वय एहि कथामे भेल अछि। मृगतृष्णामे बौआइत जतय 'फतिंगा'क मोह

एखनो नारीक लेल आशाक टकटकी लगौने अछि ततय कथाकारक सचेत दृष्टिक कथन–'सेवासँ सकारल जाय, मुदा आश्वासन........? जीवनक सत्यकेँ जगजियार करैत अछि।

गीतक मुखराकेँ मोन पाड़ैत 'लखिमा' (13 सितम्बर 81 मिथिला मिहिर-21) कथा सृजित भेल अछि। लोक कथा आ लोक गाथाक माध्यमे वेदनाक उत्स निहित अछि जे परम्पराक भीतरसँ उगैत आ पनुघैत अछि। एहि कथामे 'लखिया' आ 'गोविन्दा'क माध्यमे जतय गोविन्दामे आदर्शक चरम रूप प्रकट भेल अछि ततय 'लखिया' जीवन यथार्थक साक्षात् नग्न रूप थिक। खास कऽ मानवीय नियतिक सार्थकताक प्रश्न उठाकऽ जीवन सत्यसँ साक्षात करायब कथाकारक उद्देश्य रहल अछि। आ एहि दृष्टिकोणेँ कथाक सार्थकता सिद्ध होइत अछि।

समस्याक समाधान नहि कऽ कऽ अपन रचनात्मक स्तरकेँ उपर उठयबाक निमित्त 'अन्हार पसरि गेल' (सितम्बर 87, मिथिला मिहिर-1) कथाक सृष्टि भेल अछि। दोहरी मानसिकतामे जीवैत 'सोगरथा आ मुखियाजी' पात्रक सृष्टि कऽ आजुक फोकिला व्यवस्था पर कसगर चमेटा कसल अछि। एहि कथामे बौद्धिक दृष्टिकोण आ विचार प्रधान हावी होइतो आजुक युगीन जीवनक समस्याकेँ चीन्हि-परेखि कऽ जीवन सत्यक अनुभूतिसँ परिचित कराओल अछि। आइ-काल्हिमे शिक्षा-व्यवस्था महज एकटा नाटक बनि कऽ रहि गेल अछि। खास कऽ वयस्क शिक्षासँ मात्र एकटा औपचारिकता थिक। भूखण्डक चित्रण होइतो संपूर्णताक आकार नेने सम्पूर्ण कहियोकाल निरीक्षणक क्रम मे लालटेन बारि देब मात्र खानापूरी थिक आ हाकिमो सभ तँ एतबे लेल ललाइत रहैत अछि। संगहि, गामक मुहपुरुषक आगाँ मुँह के फोलत? एही समस्याकेँ लऽ कऽ जे नट-खेल खेलाओल जाइत अछि तकर सार्थक अभिव्यक्ति एहि कथामे भेल अछि। एहि प्रकारेँ गमैया छल-छद्म आ तिकड़मकेँ पर्दाफाश कऽ विवशताक एकटा मौन टीस छोड़ि जाइत अछि आ कथाक अन्त पाठककेँ छिलमिला दैत अछि। एहिमे कथाकारक मानवीय आदर्शक भाव निहित अछि। तेँ संवेदनाक भीतर धँसि कऽ आदर्शमूलक स्वर उभारैत अछि। भौतिक सुविधा सम्पन्न वर्ग अपन स्वार्थी आ बहुरूपिया चरित्रक बलेँ मानवीय संवेदनाकेँ अपन चाङुरमे गछाड़ने आर्थिक दृष्टिएँ विपन्न व्यक्तिक गरा लहूलुहान कयने रहैत अछि। एहि संवेदनाशून्य दृष्टिकेँ उभारि कऽ कथाकारक ई कथा समाजक जाग्रत भूमिकामे सचेतकक काज करैत अछि।

बगुला भगतक कथा थिक 'कंठी' (अक्टूबर 88, मिथिला मिहिर-18)। एहि मे कथाकार ओहि स्थितिकेँ सहजताक संग उभारलनि अछि जे परिवेश आ परिस्थितिक भीतरसँ उगैत अछि। वस्तुतः सिद्धान्त आ व्यवहारमे अन्तर होइत अछि। सैद्धान्तिक व्यक्ति जँ मात्र सैद्धान्तिके रहि जाय तँ व्यावहारिकताक अभावेँ ओकर कोनो मोल नहि रहि जाइत छैक। ताहिमे मछखौकाकेँ। अर्थात् मानसिक स्थितिक परिवर्तनक परिप्रेक्ष्यमे लिखल गेल ई कथा कंठीक चारू कात घूमैत दू गोट प्रश्नक बीच केन्द्रित अछि। एक दिस अछि 'महंथदास'क देल 'सुकना' केँ कंठी आ दोसर दिस अछि 'मोहना'क माँछ। अर्थात् दारू, दारूक संगी माँछ आ माँछक संगी जिवछी माय माने 'मंगरी'। गराक कंठी आ जीहक लुतुक–एहि दुनूक सन्धिविन्दू पर मानवीय आस्था आ विश्वासक भुरभुरी जमीन पर अछि आदर्शवादी यथार्थक मिश्रण।

मूल्य आ अपसंस्कृतिपर कसगर चाट कसैत अछि–'भरि जिनगी फेटैत रहू, गुलाम बादशाह नहि भऽ सकत'। यैह प्रश्न जीवन पर मात्र व्यंग्ये नहि कसैत अछि प्रत्युत सोच पर बल दैत संवेदनाक आँचकेँ उकसाबैत संवेदनशून्य जिनगी पर कसगर प्रहार करैत अछि।

रिपोर्ताज शैलीमे 'मुड़कट्टा' (17 अगस्त 80, मिथिला मिहिर-7) कथा अछि। पेटक लेल मनुक्ख कोनो काज करबासँ नहि हिचकैत अछि। हिएक तँ पेटक आगि ओकरा मजबूर कऽ दैत छैक आ विवश व्यक्ति नहियो चाहि कऽ कोनो काम-धन्धा करबाक लेल बाध्य भऽ जाइत अछि। तेँ धन्य अछि मनुक्ख! ओकरा सँ कोना काज करब नहि। आब ओ मनुक्खक मूड़ीक सेहो कीन बेच करऽ लागल। भोलबा शम्भुआ डोम तीनू मुड़कट्टा थिक। मूड़ी काटि कऽ बेपार करब आ धन उपार्जित करब। जुआन-जहान मुर्दाक मूड़ी जाहिमे बत्तीसी सुरक्षित हो ताहि लेल तीन सयसँ पाँच सय टाका धरि।

भूखल पेटक सुधा शान्ति करक हेतु शम्भुआ गैंग लीडर बनि कऽ ई धंधा करैत आ करबैत अछि। ओकरा एतबे डर छैक जे 'अपने रोपल गाछी अपने लेल भुताहि भऽ जेतैक' अर्थात् ओकर लाइसेन्स छीना जेतैक आ ओ अपने भातिज 'भोलबासँ हारि जायत। भोलबाकेँ लाइसेन्स भेटबाक उमेद भऽ गेल छैक। ओ जखन उमेदे पर अछि तखन ओ गब्बर सिंहकेँ प्रमाण पत्रमे कोन कागत देखौलक? यैह प्रश्न अविश्वसनीयताकेँ पनुगबैत अछि। कथाकारक सचेत ध्यानसँ ई बात हटल बुझाइत अछि आ विश्वसनीयता खण्डित भऽ जाइत अछि। ओना सामाजिक समस्याकेँ लऽ कऽ लिखल गेल ई कथा एकटा प्रश्नचिन्ह ठाढ़ करैत अछि जे सभटा लोक पेटक खातिर करैत अछि आ यैह युगीन यथार्थ थिक। सामयिक परिवेश मे लिखल गेल एहि कथाक तात्कालिक प्रभाव पड़िते अछि,

मुदा स्थायित्व जँ नहि रहि पबैत अछि तँ अचरजे कोन?

एहि प्रकारेँ हिनक किछु आर कथा अछि–मुर्दा उघबा काज (मिथिला मिहिर, 28-4-74(सेवा (12-9-82, मिथिला मिहिर) जुता चाङुर, गामक चांदनी चौक अछि। जे किछु, तात्कालिक उपजल कोनो विषय वस्तुकेँ पकड़ि कऽ अपन कला-कौशल आ आस्थाक फलस्वरूप तत्क्षण कथा लिखल हिनक दम रचनाक परिचायक थिक। खास कऽ मनुक्खक जीवनसँ जुड़ल अस्तित्वक प्रश्न स्पष्टत: उभड़ि घुमड़ि कऽ ठाढ़ होइते अछि।

कथाकार संघर्षशील चेतनाक बल पर लोकजीवनसँ कथारस सींचैत छथि। ईहो स्वाभाविक अछि जे तात्कालिक आवेगमे लिखल गेल कथामे चरित्रक विकास सहज ढङे विकसित नहि भऽ पबैत अछि। ईहो नकारल नहि जा सकैत अछि जे शिल्पक दृष्टिएँ हिनक कथा वैचारिक भऽ हाइत अछि। मुदा, विचारक ई द्वन्द्व कथाकारक मूलत: भीतरक द्वन्द्व थिक जे विस्तृत आयाममे विविधताक पसार दैत अछि। हिनक कथाक भाषा जीवन्त अछि। खास कऽ भाषाक स्वाभाविक कथ्य प्रभावशाली ढङे व्यञ्जित करैत अछि। हिनक कथाकर्मीक आग्रही नहि अछि तेँ कलावादी नहि अछि आ से कथा लेखकीय सजगताक प्रमाण थिक। जीवन आ समस्याक गहनतम पकड़मे समग्र सामाजिक चिन्तन बोध कथाकारक लेखनीक प्रतिबद्धता थिक। कथाक लघु आकारमे व्यापक कैनवास (पसार) अछि। जीवन-मूल्य पर बल दैत नव कोणसँ विचार प्रस्तुत करब कथाकारक अद्भुत कलाकारिता थिक। यैह कारण थिक जे कथाकारक कथाक महत्ता नव तेवरक फलस्वरूप नव दृष्टि उपस्थापित करैत मैथिलीक कथा साहित्यमे अपन फराक स्थान सुरक्षित करऽ लैत अछि।

मनमीत कुटीर, मौलागंज, राजपूत कालौनी,
दरभंगा-846004 (बिहार), मो. 09430640883



<u>शोध बोध</u>

'विदापत'क अन्वेषी

–विजय कुमार, शोधार्थी

'विदापतक अर्थ भेल विद्यापति एवं विदापतनाचक अर्थ भेल विद्यापतिक राधाकृष्ण लीला विषयक लोकधर्मी नृत्य नाट्य।' बड़ सहज रूपें शोधाचार्य डा. मौन हमरा कहि देलनि। मन आश्वस्त भेल ओ काज जे आगाँ बढ़लहुँ। डा. मौन नेपाल प्रवासमे मोरंगक अहल्या अरण्य भूमिसँ विलुप्त होइत 'विदापतनाच'क परंपराकेँ खोजि निकाललनि। फणीश्वरनाथ रेणु सेहो अपन साहित्य मे विदापतक चर्च कयने छथि। मुदा व्युत्पतिक क्रमे पं. गोविन्द झा 'विदापत'क मूल मे ज्योतिरीश्वारक 'वर्णरत्नाकर'क 'विदाओत'केँ संपादित कयने छथि जे संस्कृत 'विदापत'क पयार्य जकाँ व्यवहत भेल अछि। डा. जयकांत मिश्र ओ डा. कांचीनाथ झा किरण विदापतक नाचकेँ प्रकारांतरसँ नेपालक संगीतक ओ मिथिलाक ग्रामांचलमे लोकप्रचलित कीर्तनियां नाचक ग्राम्य रूप कहने छथि। मुदा डा. प्रफुल्ल कुमार सिंह मौन सभकेँ समेटिकऽ जे स्थापना देलनि, ओ निम्नवत अछि।

''लोकनाट्यक मूलभिति संगीत थिक। नृत्यक माध्यमसँ एकरा प्रदीप्त कयल जाइछ। संगीत ओ नृत्यसँ संवाहक संचरण आर शब्दक संप्रेषणीयता बढ़ैत अछि। यद्यपि संगीत ओ नृत्यक प्रधाानताक कारणे लोकनाट्यक कथानक ओ चरित्र पक्ष गौण भऽ जाइछ, तथापि एकर लोकरंजकता बढ़ि जाइछ। अहि तरहक लोकनाट्यकेँ 'संगीतक' (यूरोपीय ओपेरा जकाँ) कहब अधिक श्रेयस्कर होयत।''।–लोकधर्मी नाट्य परंपरा ओ विदापत, प्रो. प्रफुल्ल कुमार सिंह मौन, (मैथिली अकादमी, पटना, 2014 ई. पृ. 8) संगीतकक सर्वप्रथम उल्लेख 'उमयाभिसारिका) (4-5म सदी, वररूवि) कयने छथि। चौदहम-पंद्रहम सदी धरि सकर स्वरूप राजकीय परिवेश मे (नेपालक मल्ल शासनकाल) स्थिर भऽ गेल छल। मिथिला, नेपाल ओ असममे भाषा संगीतक अधिक रचना भेल।

आचार्य मौनक कहब नीक लगैत अछि–संगीत ओ नृत्य लोकनाट्यक प्रा थिक। नृत्य जखन संगीत जकाँ संवाहक रूप ग्रहण कऽ लैत अछि तखन

अडसन लगैत अछि जे गीत नृत्य बनि गेल ओ नृत्य गीत बनि गेल। अहि विशिष्ट नाट्य शैलीमे प्रवेश ओ निवास (निष्क्रमण) सेहो गीतात्मक संवाद ओ नृत्यक विशिष्ट पदचापक भंगिमाक संग होइत अछि। 'विद्यापति (1360-1480 ई.) अपन 'पुरुषपरीक्षा'मे नृत्यविद्याविद् ओ गीतविद्याविदक स्वरूपके ँ कथाक माध्यमे विवेचित कयने छथि।

ओ पिद्यापति नेपालक मोरंग जनपदमे देवत्व मंडित भऽ लोकदेवताक रूपमे 'राजा' आस्पदक संगे लोकपूजित छथि। हिनक रस ओ रासमाय गीत परंपरामे विद्यापतिक संगे उमापति, कृष्णदास, सरसराम, इसरनाथ, हर्षनाथ, प्रेमानन्द, साहेबराम, चंद्रनाथ, जोसनाथ, धरमनाथ, भानुनाथ आदिक जनपदीय विदापत नाच'क पांडुलिपि सभमे छिड़िआएल छल, जे आब 'मोरंग पदावली'क रूपमे 'मिथिला मिहिर' (पटना), मैथिली (विराटनगर, नेपाल) एवं 'भाखा' (पटना) मे प्रकाशित अछि। आब ओ अपन पूर्णता मे 'विदापत' (पटना, 2014 ई.) मे संकलित भऽ गेल अछि।

आब देसिल वयना'क कवि विद्यापति देवत्व मंडित भऽ लोकदेवताक रूपमे मोरंग जनपदक धामी समाजमे लोकपूजित छथि–कत गुण सुमिरव तोर रे राजा विरदापति थारू लोकगीत (प्रो. मौन, विराटनगर, नेपाल, 1968 ई. पृ. 70) एवं चेतना समिति पटनाक स्मारिका (1990 ई.)मे प्रकाशित अछि। ई एकटा सुखद आश्चर्य अछि जे नेपाल तराइक 'पतरि'म कर्णाटवंशी राजा हरिसिंह देव सेहो देवत्व मंडित भऽ लोकपूजित छथि। दरभंगा राजक एकटा राजा ओ रानी सेहो मिथिलांचलक गामघर (मधुबनी) मे लोकदेवी-देवताक रूपे ँ लोकपूजित छथि।

पं. गोविन्द झा ई निःसंकोच सकारने छथि–'हमरा जनैत विदापत नाचके ँ पहिने अहीं उजागर कयल। विदाओत विदापंतक अपभ्रंश थिक। हमरा जनैत एही विदाओतक परंपरामे प्रचलित विदापत नाच मोरंग ओ मिथिलामे आइ धरि जीवित अछि।' मोरंगक अपन इतिहाससिद्ध अस्तित्व ओ सांस्कृतिक परंपरा अछि। अहि संदर्भमे आचार्य मौनक निम्नलिखित गहन अध्ययन-अनुशीलन प्रकाशित अछि। 1. 'मोरंग का इतिहासवद्ध मैथिली साहित्य' (परिषद् पत्रिका, पटना, अक्तूबर 1969 ई.) 2. 'लोकधर्मी नृत्य नाट्य विदापत (परिषद् पत्रिका, पटना अक्तूबर 1984 ई.) एवं 3. मोरंगमे सुन्यौ (धर्मयुग, बम्बई, 28 मार्च 1972 ई.)। ओ मिथिलाक नजरिसँ मोरंगक रूप (वैदेही, दरभंगा, मई, 1964 ई.)के ँ सेहो विवेचित कयने छथि।

आचार्य मौन स्वयं मोरंगक गाम-गाम घूमि विदापत नाच'क परंपरित

रूप देखने छलाह, जे आलोच्य ग्रंथक 'पूर्वरंग' (पृ. 1-4)मे प्रकाशित अछि। ई हिनक नेपाल प्रवास (1963-73 इ.)क एकटा सारस्वत उपलब्धि थिक। तदनुसार 'दुलाइ जवानीक दिन मे विदापतक मूलगैन (मूलगायक) छलाह। ....कुहेली विदापत दू दिनसँ कमेमे खतम नहि होयतैक। ....विदापत : थारूनाच, किशुनजीक मंच पर प्रवेश भेल–जय हरिमाधव लेल परवेश। हाथ बासुरी जय नट भेस। राधा सेहो मंचस्थ भेलीह। राधाक पहिरब दछिनक चीर। पीत वसन सोभे सामु शरीर।' आर विपटा (विदूषक)क बात सुनि पूरा सामयाना खिखिआय लागल–यैह कारने किसुनजी बदली कराकए किशुनगंज आबि गेलथि। एकदम नजदीक। आइ खाम (लिफाफ) खसाउ काल्हि 'सियोर पहुँचि जायत। विपटाक रंगस्थली छोड़ि सुनसरी दिस भागल–तोंही बासुरी चोरइने छही।. ....सुनसरी हँसैत हँसैत दोहरा भऽ गेलीह। विपटाक एहि प्रतिक्रियासँ पूरा थरुहट आह्लादित भऽ गेल। विपटा तँ विपटे होइत अछि। नाच मे ओ अपनाके ँ बिसरि जाइत अछि। सिर्फ नकली नाचके ँ असली बनयबाक लेल। एहि सभसँ 'विदापत'क भावभूमि तैयार होइत अछि।

विदापतक नाट्यशिल्प, गीतयोजना, मूलगैन, विपटा आदिक स्वरूप, राधाकृष्ण विषयक लीलानाट्यक पृष्ठभूमि ओ परंपरा एवं लोकनाट्यक व्याकरणक संग विशेष अध्ययन-अनुशीलन विषय बनि जाइत अछि। अहि क्रममे आचार्य मौनक 'मोरंगक आंगन मे मिथिलाक नृत्यगीत विदापत (मिथिला मिहिर, पटना 18 सितम्बर 1966 ई.) पूर्वांचलक नृत्यनाट्य विदापत (मिथिला मिहिर, पटना5 सितम्बर 1976 ई.) एवं 'भाक्षा' (मैथिली मासिक, पटना 1988-89 ई.)क चारिटा अंकमे धारावाहिक रूपें प्रकाशित अछि–1. लोकनाट्य पृष्ठभूमि ओ परंपरा, 2. पूर्वाचलक राधाकृष्ण विषयक नाट्य, 3. विदापत आर मोरंग पदावली। फलतः एकर प्रकाशनसँ शोधकर्मी ओ रंगकर्मी सभक विशेष ध्यानाकर्षित भेल। 'लोकधर्मी' नाट्य परंपरा ओ विदापत (मैथिली अकादली, पटना 2014 ई.)क पुनरावलोकित प्रकाशनक औचित्य अक्षर जगतमे बढ़ि गेल। आलोच्य ग्रंथक 'पूर्वरंग'सँ एकटा भावभूमिक निर्माण होइत अछि।

आचार्य मौन आलोच्य ग्रंथमे लोककलाक उन्नत प्रतिमान : लोकनाट्य, लोकनाट्यक प्राणतत्व : संगीत ओ नृत्य, रासनृत्यक विस्तार, अभिभावक स्वरूप, विपटा : विदूषक एवं रंगस्थलीक पश्चात दोसर अध्यायमे मिथिलांचलक लोकध र्मीनाट्य, लोकसंस्कृतिक सारस्वत प्रतिफलन, अनुष्ठान मंडित संस्कार, गाथाध ारित लोकनाट्य, लीलापरक लोकनाट्य, महिला लोकनिक लोकनाटक, हास्य-व्यंग्यमूलक लोकनाट्य, नाच, नाट ओ नाट्य नाचक लोकधर्मिता वैष्णवध

र्मी लोकनाट्य, कीर्तनियाँ, पारिजात हरण, असमक अंकिया, बंगालक यात्रा नेपालक संगीतक नारदी नाच एवं गोपलीला यात्रा विवेचित अछि।

तेसर अध्यायमे लोकधर्मी नाट्य विदापत विस्तारसँ विवेचित अछि। अहिमे नामकरण, विदापतक आरंभ, पात्र प्रवेश, विदापतक तीन तत्व (गीतं वाद्यनर्तनं व त्रयं संगीत मुच्यते), कथानक, राजवंशी विदापत, विदापतक चरित, उद्देश्य, संवाद ओ भाषा शैली, रंगस्थली बनाम रंगभूमि, मूलगैन अर्थात् सूत्रधारक अलावा चारिम अध्यायमे विदापतक नाच परंपरासँ प्राप्त 'मोरंग पदावली'क संपादित स्वरूप अक्षर जगतकेँ प्राप्त होइत अछि।

आचार्य मौनक ई आलोच्य पुस्तक वस्तुत: 'गागर मे सागर' समेटने अछि। ओ यथासंभव सूत्ररूपमे लिखैत छथि। भाषा शोधार्थी लोकनि करथि। अत' छोटछीन कथामे (कुल पृष्ठ 71) चिंतनक शिखर, सागरक गहराई ओ वैचारिक छितिजक विस्तार देखना जाइत अछि। दोसर शब्दावलीमे ओ अपनामे 'लघुशोध'क गरिमा समेटने अछि। अहि गुरु गंभीर आचार्यक सानिध्य मे जे जतेक ज्ञानसुख प्राप्त भेल, ओ वर्णनातीत अछि।

टाड़ा, मोहिउद्दीननगर, (समस्तीपुर)
मो. 09525955488



प्रो.'मौन'क संग विताओल किछु क्षण

–अयोध्यानाथ चौधरी

ओइ अन्वेषक, ऐतिहासिक व्यक्तित्व, संस्कृतिपुरातत्व वेत्ता, भाषाविद, मूर्धन्य विद्वानसाहित्यकार, इतिहासकार, यायावर आ सव मिलाकए महामानवक वात कतऽ सँ शुरु करी। ओ महेन्द्र मोरंग कालेज, विराटनगर (नेपाल) मे ई. झढटघ सँ झढठघ धरि एकटा अति विशिष्ट हिन्दीक प्राध्यापकक रुपमे कार्यरत रहलाह से ओतुक्का लोकक हेतु महत्वपूर्ण वात भऽ सकैछ। हुनकर विद्वता आ व्यक्तित्वसँ प्रभावित भऽ स्वयं नेपालक तत्कालीन प्रधानमंत्री स्व. मातृका प्रसाद कोइराला हुनकर साहचर्य चाहैत छलाह आ हुनका समयसमय पर सम्मानितअभिनन्दित करैत रहलथिन से बात त' जरुर महत्वपूर्ण भेल। मुदा हमरा जे सवसँ महत्वपूर्ण बात बुझायल जे मात्र दस वर्षक अवधिमे ओ जे नेपालीय मैथिली साहित्यक उन्नयनमे जे अपूर्व योगदान कएलनि से। हिन्दीक प्राध्यापन एवं नेपाली भाषाक परिवेशमे अपन भाषाकें बचायब, प्रतिपाल करब, उन्नयन करब हुनका लेल पक्का चुनौतीक विषय छलन्हि हैत। आ से ओ सहर्ष स्वीकार कएलनि। तैं हुनक अवदानक कथा स्वर्णाक्षरमे अंकित छन्हि आ अनन्तकाल धरि रहतनि।

जे से, नाम त' सुनल छले। हम हुनका तहिया जनलियनि जहिया हमरा एकटा पोस्टकार्ड भेटल। 1969-70क आसपास। 'मैथिली' पत्रिकाक हेतु आलेख, कविता, कथा आदि पठाबी से उल्लेख छलै। मोन प्रसन्न भेल। तहिया एकदूबेर मात्र छपल रही। ओहनमे अतिरिक्त उत्साह भरि आयल। कोन अंक मे से नइ मोन अइ। मुदा एकटा अंकमे ''एकटा परिवोधन आ शेष कविता'' शीर्षकक एकटा कविता एकदम शुरुमे प्राथमिकताक साथ छपल। दोसर अंकमे 'घुमानवाट' शीर्षकक कथा छपलओहो प्राथमिकताक साथ। लेखनदिशक प्रवृति आ ओइ रहस्यमय संपादक व्यक्तित्व सँ भेट होइत से आकांक्षा प्रवल भऽ आयल। साल, तिथि, मिति, दिन कुछ ने मोन अइ। सशक्त कथाकार रामभद्रजी, महान नाटककार मलंगियाजी आ हम करीबकरीब सव दिन जनकपुरक जानकी पुस्तक केन्द्र पहुँचबे करी। एक दिन अप्रत्याशित रुपसँ एकटा प्रभावशाली व्यक्तित्वकें दोकानक भीतर स्व. मैथिली

सेवी योगेन्द्र प्रसाद 'नेपाली' जी क बगलमे दोसर कुर्सी पर विराजमान देखलहुँ। सहजहिँ जिज्ञासा भेल। तहिए चिन्हलिअनि प्रो. प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन'कें। ओ वेशीकाल मौन नहि रहि सकलाह आ तुरन्त प्रफुल्लित होइत स्वागत कएलनि आ एक घंटा धरि उत्साहित करैत रहलाह ''लिखू ...... खूव लिखू .... नीक लिखैछी .... पठाओल करु।'' नव हस्ताक्षर के आर की चाही। मोन गद्‌गद्‌ भेल। बीच मे चायपान भलैक। ओ त' योगेन्द्रजीक ओहिठाम सव दिन मैथिली साहित्यकारक हेतु उठैने रहैक। हुनकर दोकान पुस्तकेटाक केन्द्र नहि रहैक, मैथिली साहित्यकारोक। धन्य छलाह योगेन्द्र 'नेपाली'। आव के ओहन जन्म लेत।

ओइ दिनक वाद, प्रायः तीन वर्षक बाद, एक दिन अचानक पता लागल जे प्रो. "मौन' विराटनगर (नेपाल) छोड़ि बैशाली (भारत) चलि गेलाह। बड़ा कचोट भेल। मैथिली टूगर भऽ मरि जइती विराटनगर क्षेत्रमे से चिन्ता दिमाग सँ हटबे ने करए। मुदा जकरा भारतसन विशालविकसित देशमे नोकरीक जोगार भऽ जेतैक ओ एहि गरीवअविकसित देशमे किएक कर्म कूटत? तकर वादे बुझलिए जे ओ भारते के छथि। ओना नेपालो मे ओ विशिष्ट रुपें सम्मानित भऽ रहलाह। मुदा लोक के सम्मानेटा नइ चाही, ओकरा जीवनयापन के हेतु ठोस आधार से हो चाही। विराटनगरक मैथिली ठीके टूगर भऽ कऽ रहि गेलै, मुदा वांचल छै एखन धरि।

प्रो. 'मौन' स्वदेश त' चलि गेलाह लेकिन मैथिलीकें आ मैथिली साहित्यकार के बिसरलाह नहि। तकर वाद बरोवरि भेट होइत रहल। भारत आ नेपालमे आयोजित होमए वला प्रायः प्रत्येक कार्यक्रममे हुनक अनिवार्य आ विशिष्ट उपस्थिति रहैत आयल अछि। कथा गोष्ठी, कवि गोष्ठी, कार्यशाला, समीक्षात्मक कार्यक्रम, अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन, अनुसन्धान सम्बन्धित गोष्ठी आदि मैथिली भाषा विषयक कोनो गोष्ठी मे कतौ अध्यक्ष, कतौ प्रमुख अतिथि, कतौ विशिष्ट अतिथिक रुपमे देखल जा सकैछ। नेपालमे रहि ओ इतिहासपुरातत्व, लोक साहित्यक संपदा संवर्द्धन, साहित्यिकसांस्कृतिक अनुशीलन, रिपोर्ताज, यात्रा वृतान्त, संस्मरण आदिक क्षेत्रमे जे काज कएलनि तकर प्रमाण हुनकर दर्जनों पुस्तकमे देखल जा सकैछ। 'मैथिली' पत्रिकाक सम्पादनप्रकाशन त' मीलक पाथर साबित भेले अछि। ओ नेपाली आ हिन्दी भाषा मे से हो विपुल रचना कऽ ओहू दुनू भाषाक साहित्यकारक बीच ओहने सम्मानितपूजित भेलाह। भारत मे गेलाक बाद हूनका आर वेशी समय, साधन आ सुअवसर भेटलनि जकर सदुपयोग करैत ओ कीर्तिमान स्थापित कएने छथि। एहिठाम एखन धरिक हुनक कृति आ अनुसन्धान विधाक पोथीक नाम गनायव हमर अभिष्ट नहिं भेलाक कारणें किछु अनुभूति जन्य वात स्मरण करायव मात्र आवश्यक बुझैछी।

हमरा जनैत ओ कहिओ विराटनगर मे छलाह वा एखन वैशाली मे छथि, मुदा हुनकर एकटा घर जनकपुरो मे छन्हि। ओ साहित्यकार राम भरोस कापडिघ्क घर होइन्ह वा कोनो होटल, मुदा ओ जनकपुर अयलाक बाद 'अपनेघरमे' (at home) अनुभव करैत छथि। हुनका गेलाक वाद हमहुँ सव ई अनुभव करैत छी जे हमरे सभक एकटा आप्त किछु वेशीए दिनक हेतु कतौ विदेश गेलाह अछि। अबैत होयताह। अपन घर छोडिघ् जयताह कत ?

एकटा प्रसंग मोन पड़ैए। 2009 ई.मे तिरुपति मे हुनका 'मिथिला रत्न' सम्मान सँ सम्मानित होयवाक अवसर। हम सव मूंच पर रही। हमरो 'मिथिला रत्न' सम्मान ग्रहण करबाक छल। मुदा हम जावत तक हुनका लग बैसल रही, हुनका आगाँ हीनतावोध सँ ग्रसित रही। ई एतेकटा बटवृक्ष ...... ई एतेकटा विशिष्ट विद्वान .... आ एकटा हम। मुदा हुनकर नम्रता कखनो हुनकरसंग नहि छोड़ैत भेटत। कनिओ अहम्क लेश नहि। सदरि वातावरण के सहज वनेवाक प्रयास करैत रहताह आ हुनक मैत्रीपूर्ण भाव कोनो तरहक दूरी नहि बनऽ देत। ओ विशिष्ट साधक छलाह। एहिठाम डा. महेन्द्र नारायण रामक उक्ति एकदम समीचीन बुझाइत अछि ''डा. मौनक सम्मान हुनक साधनाक सम्मान थिक। खाहे ओ मिथिला विभूति (दरभंगा 2002 ई.) मिथिला रत्न, (तिरुपति 2008 ई.), मिथिला श्री (काठमाण्डू 2010 ई.) मैथिली अनुवादक पुरस्कार (हैदरावाद 2005 ई.), इतिहास सम्मान (वीरगंज), संस्कृति सम्मान (जनकपुर) आदि जे हो, हुनक मनस्थिति निष्काम कर्मयोगीक बनल रहल।''

प्रसंग त' बहुत छैक। मुदा एकेटा आर प्रसंगक उल्लेख करी। दरभंगा मे अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिषदक दिश सँ प्रो.कृष्ण कान्त मिश्रक स्मृति दिवसक आयोजन रहैक। मुख्य वक्ताक रुपमे प्रो. 'मौन'कें प्रो. मिश्रक व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर वजबाक रहनि। से विना कोनो टिपोट के अनवरत दू घंटा धरि अपन संस्मरण सुनबैत रहि गेलथिन एवं अपन विद्वतापूर्ण अभिव्यक्तिसँ अनेको आमन्त्रित सवकें आकृष्ट कएने रहि गेलथिन। एकटा बहुत गम्भीर माहौल रहैक। कार्यक्रम समाप्त भेला पर चाह पान होयबा काल पुछैत छथि

''आइ काल्हि की लिखैत छी ?''

''आइ काल्हि गीत लिखैत छी।''

''कतेक गीत लिखि चुकलहुँ ?''

''पचास टा सँ उपर। मुदा सय पुरेबाक योजना अइ।''

''देखब, गीत ने हो तीत।''

''नइ सर, छै जे अगवे प्रीत।''

''मीत, तखन निश्चय हैत अहाँक जीत।''

आ दुनूगोटे खूब हँसऽ लगलहुँ। ओना गप्पक क्रममे एकवेर हमरा बुझायल जे हुनका हमरा प्रतिभा पर किछु सन्देह भेलनि तैं तीतबला गप्प कएलनि। मुदा अन्तमे अबैतअबैत ओएह सदाबहार हासपरिहास बला व्यक्तित्व हमरा सामने मे चुस्की लैत हँसि रहल छल, तखन हम हल्लुक भऽ गेलहुँ।

प्रो.मौन क नामक क्रम आ व्यक्तिक्रमक माँदे किछु गप्प करी। ओ अपने प्रफुल्ल छथि, तैं सवके। प्रफुल्लित कएने रहैत छथि। ठठ वर्षक ई कुमार, युवावस्थामे निश्चित रुपें राजकुमार सश छल होयताह से हमर अमिट विश्वास। सिंह सन एकलव्यक्तित्व साहित्यकार होइतहुँ ई जंगल मे एसगर नहि रहि सकैत छथि हिनका छोटपैछ सभ संगे सहमेलू आ मिश्रित भऽ रहवाकक अभ्यास छन्हि नितान्त नम्रतापूर्वक। मौन त' हिनका हम आइ तक नहि देखलसदा सर्वदा साहित्य चर्चा आ ज्ञानगुन बँटैत। तखन पुरातत्व आ संस्कृतिक खोजमे लीन जरुर मौन रहैत छल होयताह। सर ! माफ कएल जेतैक। हमरो की एकटा परिहास फुरा गेल। अपने सन हासपरिहास करैवला व्यक्तित्वक छाप हमरो पर किछु कोना ने परओ।

आव ठठ वर्षक ओ व्यक्ति 'अपना घर' आब सँ कतराइत रहैत छथि। अशोथकित होएव स्वाभाविक। एम्हर एखन ट्रेन बन्द भऽ गेल छैक। ओना भारत सरकारक सहयोग सँ ब्रोडगेजक काज द्रूतगति पर छैक। बसक बाट बड़ बेजाय छैक। स्वस्थो लोकक देह चूरचूर भऽ जाइत छैक। तथापि कोनो ना चलिए अबैत छथि। हमरा सभक भाग्य। किएक त' प्रो. मौन क समस्त लेखनकक आधासँ वेशी विषयवस्तु नेपाल विषयक अछि। हम सभ गौरवान्वित होइत रहैत छी। एकेटा कामना जे ओ शताधिक जीबथु। किएक त' जावत तक सांस, तावत तक मैथिली के आश।

जनकपुर- 12

□

'बहुआयामिक प्रतिभाक भण्डार : मिथिलाक डाँ. फ्रुल्लकुमार'

–डॉ. गङ्गा प्रसाद अकेला

सबसँ पहिले 'यथा नाम : तथा गुण :' सन अपन विशिष्ट प्रतिभा, क्षमता तथा स्वाभाविक गुणसँ अपरिचित तकके पहिलके भेटमे अपन खिलखिलाइत मुस्कराहट आ सम्मोहन शक्तिसँ प्रभावित करएवला व्यक्तित्व डा.प्रफुल्लकुमार सिंहओसँ हम कहिआ आ कतए परीचित भेलौं ताहि सम्बन्धमे कतबो प्रयास कएलाक बादो ई निश्चित नहि कए सकलौं जे ओ कोना हमर अन्तर्मनमे एहि तरहें समा गेलथि जे देशकों पूर्वसँ राष्ट्रीय आ अन्तराष्ट्रीय स्तरक गोष्ठी तकमे अपन साहित्य आ संस्कृति सम्बन्धी कार्यपत्र प्रस्तुत करबाकाल तथा अभिव्यक्ति देवाक क्रममे हुनका कहिओ नहि बिसरि सकलौं आ ने हुनक चर्च करबाँस सेहो नहि चुकलौं अछि ! भ सकैछ जे साहित्य आ संस्कृतिसँ प्रारम्भहि कालसँ जुड़ल रहैत आएल छी ,मुदा आनो लोकसभक हुनकाप्रति तेहने अनुराग आ लगाव हुनकासभक रचनाक माध्यमसँ देखलाक बाद ई प्राय : स्पष्ट भए जाइछ जे ओ जेना हम शुरु मे कहलौं अछि 'यथा नाम : तथा गुण :'सँ सम्पन्न विशिष्ट व्यक्तित्व छथि, ताहि तथ्य : के प्राय :केओ नहि नकारि सकै छथि?

डाँ.प्रफुल्लकुमार सिंह ''मौन'' जीसँ हम कहिआ पहिल बेर भेटल छलौं? तहि सम्बन्धमे कतबो ठिकिऔलाके बादो किछु स्थान, यथाकृजनकपुर, बिराटनगर, काठमाण्डू मेसँ कोन ठाम पहिले भेटल छलौं से स्पष्ट भ नहि रहल अछि आ भेटक समय! मुदा, जखन सबस बेशी समयधरि सँगे रहवाक प्रसँग अबैछ तखन हमर श्रद्घेय गुरुवर त्रिभूवन विश्वविद्यालयके हिन्दी विभागके विभागाध्यक्ष आ 'नेपाल हिन्दी साहित्य संगम, काठमाण्डू' के संस्थापक अध्यक्ष स्व.डाँ.कृष्णचन्द्र मिश्रजीक विशेष प्रयास आ भारतीय राजदूतावास, काठमाण्डूक तत्कालीन प्रेस, सूचना तथा संस्कृति संकायक प्रमुख एवं प्रथम सचिव श्री अखिलेश मिश्रा जीके सहयोग एवं

‘नेपालकृभारत मैत्री संघ, विराटनगरक संयुक्त आयोजनमे विराटनगरमे आयोजित ‘रेणु स्मूति साहित्य संगोष्ठी’ २-५२ साल (१६-१७ सितम्बर, १९९५ ई.) क क्रममे हमरालोकनि ४ दिन विराटनगरक अतिथि सदनमे साथे रहल छलौं आ सेहे समय डाँ प्रफुल्लकुमार सिंह ”मौन“ जीक सँग साहित्यिक कार्यक्रमक क्रममे हमरासभक भेटघाटक सभसँ पैघ समय रहल छल ।हमरा मोन अछि, एक दिन बातचीतके क्रममे हुनका पुछियो देने रहिअन्हि -‘डाँ.साहब ! अपने सदिरवन सभक साथे हंसते, मुस्काईते बतिआइत रहैत छी, लखन अपने ‘मौन’ क विशेष पदवी किए रखने छी? तखन हुनक जबाब छलन्हि ‘‘मौन’’ त लोक कखनोकाल रहिते अछि ने, त एकरा ताहि रुपमे बुझि लिअ!’ आ तकर बाद हम फेर नहि किछु पुछि, आश्वश्तजकाँ भए गेलौं । तकर बाद, जनकपुर आ काठमाण्डू मे मैथिली साहित्य सम्मेलन, संगोष्ठी, कवि गोष्ठी आदिक क्रममे सेहो हमसब संगे रहल छलौं मुदा सभसँ पैघ समय धरि हमरासभ हिन्दी साहित्यबला ‘रेणु स्मूति साहित्य संगोष्ठी’ क क्रममे विराटनगरमे संगे रहल छलौं, से त निश्चिते अछि ।

डाँ प्रफुल्लकुमार सिंहजी १९६३ ई .मे तत्कालीन महेन्द्र मोरंग कालेजमे हिन्दीके प्राध्यापकके रुपमे आएल छलाह आ १९७३ ई. धरि ओहि ठाम रहल छलाह, मुदा हुनक मुख्य कार्यक्षेत्र मैथिली लोकसाहित्यक विविध क्षेत्र-यथा, लोकगाथा, लोकनाट्य आदिक अन्वेषण, मैथिली पत्रकृपत्रिकाका प्रकाशन, ग्राम्य लोकर्सस्कृति जन्य कार्यक संकलन, अन्वेषण एवं प्रकाशन आदि रहल छलन्हि जे अद्यावधि प्रवहमाने छन्हि। तहिना हुनकासँ २वर्ष पूर्व सन् १९६१ ई.मे डा.‘धीरेन्द्र’ जनकपुरक तत्कालीन आर.आर. डिग्री कालेजमे मैथिलीक प्राध्यापकके रुपमे आएल छलाह, मुदा ओ हिन्दीके प्राध्यापकके रुपमे आएन छलाह, मुदा ओ हिन्दीके प्राध्यापकके रुपमे सेहो खासकए हमरा वास्ते किछु वर्ष प्राध्यापन कएने छलाह, तकर कारण एहो भए सकैछ जे हिन्दीक प्राध्यापक द्वय प्रो.ताराकान्त मिश्र जीके स्वदेश प्रस्थान आ हुनका पश्चात् डा.कृष्णचन्द्र मिश्रजी कैँ ओहि कालेजसँ त्रिभुवन विश्वविद्यालय, काठमाण्डू प्रस्थान कएलाक बाद हमर विशेष आग्रह पर ओ स्नातक कक्षाधरि हिन्दीक एक गोट पत्रक प्राध्यापनमे सेहो संलग्न रहल छलाह। हिन्दीक विद्यार्थी होइतहुँ डा.‘धीरेन्द्र’ द्वारा जनकपुरमे स्थापित ‘मैथिली स्कूल’ क हमहुँ एक विद्यार्थी छलहुँ, तकर कारण ई छल जे हुनका अएवासँ पूर्व हम हिन्दी विषय राखि लेने छलहुँ, मैथिलीक उपयुक्त शिक्षक नहि होएवाक कारण।

एतए नेपालक ओहि समयक शिक्षा प्रणालीक सम्बन्धमे सेहो चर्च करब उपयुक्त बुझैव छी। ओना त त्रिभुवन विश्वविद्यालयक स्थापना भए चुकल छल,मुदा पाठ्यक्रम पूरे पटना विश्वविद्यालयक छल आ तै प्रायः२-२१ सालधरि नेपालक

शिक्षाक माध्यम हिन्दी भाषा रहल छल । आई.ए.(प्रमाणपत्र) तक अनिवार्य विषयमे अंग्रेजी ३ पत्र (३00 अंक) आ रचना (ख्मचलबअगबिच मे ५0 अंक हिन्दी आ ५0 अंक नेपाली) १00 अंक आ तीन गोट ऐच्छिक पत्र(२00 अंकक प्रत्येक) अर्थात् ६00 अंक सहित कुल- १000 अंक आ बी.ए. (स्नातक) तक अनिवार्य विषयमे अंग्रेजी ३ (३00 अंक) आ रचना (ख्मचलबअगबिच मे ५0 अंक हिन्दी आ ५0 अंक नेपाली) १00 आ २ गोट ऐच्छिक पत्र (३00 अंकक प्रत्येक) अर्थात् ६00 अंक सहित कुल कृ१000 अंकक विषय विद्यार्थीसबके पढ़ए पड़ैत छलैक आ अन्तिम परीक्षा देशभरिक विद्यार्थीकै काठमाण्डूमे जा क देबए पड़ैत छलैक । तहिना विद्यालय स्तर सँ महाविद्यालय आ विश्वविद्यालय स्तरक शिक्षक आ प्राध्यापक लोकनि भारतेस आनि नियुक्त कएल जाइत छलाह । शिक्षालयमे पढाईक माध्यम हिन्दी होइतहुँ मिथिला क्षेत्रक प्रायः प्रत्येक ठामक शिक्षकलोकनि सामाजिक आ ग्रामीण वातावरणमे मैथिली बजैत छलाह आ मैथिल संस्कृतिक प्राचीनकालसँ प्रचलित सांस्कृतिक गतिविधि, यथा-लोकनाच, लोकनाट्य, लोकनौटंकी आ लोकसंकीर्त्तन क्रममे पारम्परिक विधि-व्यवहारक अनुरुप जनकपुरमे डाँ.धीरेन्द्र आ विराटनगर मे डाँ.प्रफुल्लकुमार सिंह ‘मौन’ जी मैथिली लोकगाथा, लोकगीतसँ सम्बद्घ कार्यक अन्वेषण संगहि मैथिली पत्रिका आ पुस्तक प्रकाशनक क्रममे जतेक काज कएलिन्ह से नेपालक मैथिली भाषाक विकासमे महानतम् उपलब्धि मानल जा सकैछ डाँ. धीरेन्द्र त्रिभुवन विश्वविद्यालयमे मैथिली विभागक संस्थापक विभागाध्यक्षक कीर्त्तिमान कायम कयलिन्ह त डाँ प्रफुल्लकुमार सिंह ‘मौन’ नेपालक मैथिली लोकगाथा, गीत क्षेत्रक प्रमुख अन्वेषक आ प्रचारक रुपमे अद्यापि कार्यरत रहल छथि ।

जहाँधरि डाँ.प्रफुल्लकुमार सिंह ‘‘मौन’’ क मैथिलीक लोकगाथा, लोकगीत आदिक क्षेत्रमे योगदानक बात थीक, ताहि सम्बन्धमे डा.दुर्गानाथ झा ‘श्रीश’ अपन मैथिली साहित्यक इतिहासमे एहि शब्दमे व्यक्त कएने छथि- ‘‘मैथिली गाथागीतक रचना मिथिला -नेपालक-सीमा-क्षेत्रमे अधिक भेल । एकर करण छल एहि क्षेत्रक सांस्कृतिक, सामरिक एवं ऐतिहासिक घटना-चक्र ,ज ाहिसँ ई क्षेत्र सदैव चेतनासम्पन्न रहल । गाथाकारलोकनि ओहि चेतनाकें लोक कृस्वर प्रदान कए ओकरा युग-युगक हेतु सजीव ओ साकार कए देलैन्हि एवं एहि प्रकियामे अनेक अविस्मरणीय चरित्रक अवतारणा करलौन्हि। प्राचार्य श्री प्रफुल्लकुमार सिंहक शब्दमे - ‘‘ई विस्तृत भू-भाग लोरिकक वीरभूमि, सलहेस कुसुमदोना ओ काजरि-माजरिक रंगलोक, नैका-बनिजरा, शोभा-बनिजारा, शंभु-बनिजारा आदिक व्यवहार-क्षेत्र, महाचोर चुहरक परीक्षा स्थल, राजा धनपाल ओ रइआरणपालक विलासभूमि, विजयमल, अमरसिंह, जयसिंह आदिक रणभूमि, कुंवर विजोभानक आखेट-केन्द्र, दुलरादयाल, चम्पाडगरैनी, माघोसिंह,

कनक सिंह सरियों, सुब्बइ, झुरे, बंठा चमारआदि तान्त्रिक लोकनिक सिद्घभूमि, बख्तौर, बसावन, कारी, भुइंआ, दयाराम, रघुनाथ, कालुरान आदिक विलास क्षेत्र रहल अछि ।''............मौनजी उदाहरण दैत लिखैत छथि जे- ''लवहरिकृकुशहरि'' मे एक दिश रामकमव्यक परम्पराक विकास, 'धनपाल', 'रणपाल' ,'विजयमल','सलहेश', 'कुँवर 'विजोमान', 'अमर सिंह', 'केवल सिंह' आदिमे मध्यकालीन शौर्य पराक्रम, 'अनंगकुसुमा' मे रोभांस, 'दुलरादयाल' मे मैथिल भगीरथक अभियान, 'दीनाभद्री' मे शोषणक विरुद्घ श्रमिकक संघर्ष, नैकाबनिजारादिभे मिथिलाक वाणिज्यकृव्यापार, 'माहिली सुलतानु','सती माँजरि' आदिमे मुस्लिम समाजक जीवनकृसौन्दर्य, 'कारिखकृपंजियार', 'वंशीधर बाभन', 'गोपीचन', 'मरुअनि' आदिमे मूलत : वीरकृश्रृंगार ओ करुणाक अभिव्यक्ति भेल अछि । "एहि कारणे डा. बज्रकिशोर वर्मा 'मणिपद्म', 'लोरिकाइन', 'सलहेस', 'अंनगकुसुमा ', 'दुलरा दयाल', 'नैका बनिजारा', 'दीनाभद्री' एवं 'रड्आरणपाल' कें मैथिली गाथारत्न मानैत छथि, जकरा निःसंकोच विश्वक उत्कृष्ट लोकसाहित्यक श्रेणीमे परिगणित कएल जाए सकैत अछि ।''

(डाँ. श्री दुर्गानाथ झा "श्रीश'':-मैथिली साहित्यक इतिहास',पृष्ठ-३८-४०)

एहि तरहें मैथिली लोकसाहित्यके निःसंकोच विश्वक उत्कृष्ट लोकसाहित्यक श्रेणीमे पहुँचौनिहारमे अग्रज डाँ.प्रफुल्लकुमार सिंह ''मौन'' अग्रणी रहि सदैव हमरालेल प्रेरणाक श्रोत रहैत अएलाह अछि, छथि आ जीवनपर्यन्त रहताह ताहिमे कोनो शंका नहि। ओहुना लोकसाहित्य आ लोहसंस्कृतिसन जीवनसँ निरन्तर आबद्घ रहल विधा हमरा जीवनक प्रारम्भिक अवस्थेसँ जुड़ल रहैल आएल अछि आ अग्रज डाँ.प्रफुल्लकुमार सिंह ''मौन'' ओहि सभक अग्रणी सूत्रधार रहैत अएलाह अछि तैं जतए कतौ हमरालोकनि रहब हमर हुनकासँ आत्मीयता आ तदात्मयता बनले रहत् । ओ शताब्दीधरि एहि तरहें आगाँ बढ़ैत रहथि आ हम सेहो हुनकासँ सदैव उत्प्रेरित रहैत आगू बढ़ैत रही ताहि अभीष्टक पूर्त्ति हेतु हुनक चिरस्वस्थ्य जीवनक कामना करैत एखन एहि ठाम विराम लेवए चाहैत छी हुनक सुदीर्घ, स्वस्थ्य आ प्रफुल्लित यशश्वी जीवनक शुभकामनासाथ ।

सन्दर्भः

(१) 'रेणु-स्मृति साहित्य संगोष्ठी २०५२ विराटनगर (सितम्बर १८-१७,१९९५ ई.)

(२) डाँ. दुर्गानाथ झा 'श्रीश'-'मैथिली साहित्यक इतिहास-१९९१'

(३) 'आँजुर' कृजेठ आषाढ,२०७२ (जुन-जुलाई, २०००)

(४) लेखकक प्रारम्भिक कालसँ एखनधरिक प्रत्यक्ष अनुभूति ।

जनकपुरधाम-९,नेपाल, सम्प्रति-काठमाण्डू।



ज्ञानवृद्ध आचार्य मौन

–डॉ. अयुब राईन

सबेरे दरभंगासं महनारक लेल बाइकसं प्रायः एक सय कि.मी. क यात्रा आरम्भ करबासं पहिने हेलो, आदावक औपचारिकता भ गेल छल। संगमे छलाह भाई चन्द्रेश। मैथिलीक एकटा प्रखर चिन्तक ओ समीक्षक। रास्ता तँ आहेमाहेमे कटि गेल। महनारक प्रोफेसर कालोनी, उपनगरीय गहमागहमीसं अलग, किन्तु गाछ विरीछक हरियालीसं आवृत ई कालोनी अनुमंडलीय कार्यालयसँ सटले दक्षिण। आचार्य लोकनिक आवासीय खंड।

स्वेत रंगी विशाल प्रवेशद्धार पर प्रतीक्षित ऋषितुल्य एकांत साधक आचार्य प्रफुल्ल कुमार सिंह मौनक स्नेहिल सत्कारसँ सभटा थकान मेटा गेल। अर्थात अचार्यके देखि हम सभ प्रफुल्ल भ गेलहुँ आ ओ आसन पर बैसि मौन भ गेलाह। शीतल पेयक पात्र मेज पर आबि गेल छल। मेजक शोभा कागजी फुल सभसँ भरल गुलदान बढा रहल छल। मुदा परिसरक क्यारी सभमे गुलाब, गंधराज, शंखपुष्पी आदिक संगे मेगनोसियाकसंग आम्रपालीक लदबद गाछ वातावरणके गुलाबी बना देने छल।

आगा छल किछु जिज्ञासा सभक प्रश्न जाहिसँ हुनक मौन भंग भ सकय अहाँ तँ मूलतः हिंदीक आचार्य थिकहुँ, मुदा कोन परिस्थितिजन्य आवेशमे मैथिली, नेपाली ओ बज्जिकाक घरआंगनमे बिहरय लगलहुँ ?

मातृकुलक भाषा : मातृभाषा मैथिली पर पुस्तैनी अधिकार स्वतः प्राप्त भ जाइछ। शेष नेपाली आ बज्जिका परिस्थितिजन्य उपार्जित भाषा थिक। राष्ट्र भाषा हिंदी सभके एक दोसराक संग जोडैत अछि। स्नात्तकोत्तर स्तर धरि हिंदी पढलहुँ आर स्ष्ट कहि दी तँ हमरा लग मैथिलीक कोनो विद्यालीय अथवा महाविद्यालीय प्रमाण पत्र नहि अछि, मुदा हमर मैथिली लेखनके ल.ना. मिथिला विश्वविद्यालय हमर व्रह्मग्राम एवं त्रिभुवन विश्वविद्यालय (काठमाण्डू, नेपाल), नेपालक मैथिली साहित्यक इतिहासके पाढ्यक्रममे स्थान देलक। पत्रपत्रिकादिमे हमर सताधिक रचनासभ सादर प्रकाशित भेल। आकाशवाणी (पटना एवं दरभंगा) सँ मैथिलीमे प्रसारण भेल।

हम मैथिली जगतक प्रति आभारी छी। मैथिली हमर मातृभाषा थिक।

एम. ए. शिक्षाक उपरान्त हम म.मो. कालेज, विराटनगर (नेपाल) मे एक दशक (१९६३-१९७३) धरि रहि हिंदीक अध्यापन कयलहुँ। जंगल, नदी, पहाडक गोदीमे बसल थारु सभक घर आंगनसँ मैथिली लोकगीत सभके वटोरि क थारु लोगगीत (हिंदी,१९६८ ई.) क प्रकाशन भेल। संगे संग ओहिठामसँ त्रैमासिकी मैथिली (१९७०-७३ ई) क सम्पादन प्रकाशनमे लागि गेलहुँ। नेपालक शिलोत्कीर्ण मैथिली गीत, नेपालक मैथिली साहित्यक इतिहास, सेन कालीन मैथिली अभिलेख, विदापत, मोरंग पदावली, धर्मराज युधिष्ठीर आदि, विराटनगरक मैथिली सारस्वत उपलब्धि मानल गेल।

दस वर्षक सानिध्यसँ नेपालीक प्रति अभिरुचि, अभ्यास एवं लेखनसँ धीरेधीरे नेपालीक साहित्य जगतमे प्रतिष्ठित भेलहुँ। नेपालीमे लिखल रचनासभ गोरखापत्र, मधुपर्क, प्रज्ञा, सिंहावलोकन,हिमालचुली, प्रज्ञापृष्ठ, देउसी, गुराँस, एंसुलु, डम्पूउ, धुम्को आदि सभमे यथासमय प्रकाशित भेल। विराटनगरसँ विरचनाक सम्पादक हम छलहुँ। हालेमे नेपालीक एकटा विकलांग झमक घिमिरेक नेपाली उपन्यासक हिन्दी अनुवादक संपादक हेतु मूल सहित नेशनल वुक टस्ट इंडिया (नई दिल्ली) सँ प्राप्त भेल छल। हम काज पुरा क टष्टके पठा देलियैक।

रहल बज्जिका बात। अ. बिहार विश्वविद्यालय मुजफ्फरपुरमे स्नात्तकोत्तर अध्ययनकाल (१९५९-१९६१ ई), महनार कालेज (वैशाली) क सेवा (१९७३-९१ ई) एवं विश्वविद्यालयमे पदस्थापन (१९९१-९८ ई) क्रमे अहि भूभागक बज्जिका भाषा ओ साहित्यसँ साक्षात भेल। किछ अभिनव करबाक बलबती इच्छासँ बज्जिका साहित्य का इतिहास, बज्जिकांचलक संपादन एवं बज्जिका माधुरीक साहचर्य आदिकसँ बज्जिका व्याकरण ओ बज्जिका हिन्दी शब्द कोषक संपादनसँ उत्साह वर्धन भेल। मुदा मैथिली जगतके हमर बज्जिका प्रेम नीक नहि लगलनि। फलतः हमरा विरुद्ध एकटा अप्रत्यक्ष वातावरणक निर्माण आरम्भ भेल। परिणाम भेल हम साहित्य अकादमी पुरस्कारसं वंचित क देल गेलहुँ। जे हमरा अखन धरि खलि रहल अछि, मुदा अहिसँ एकटा अभिज्ञान भेल जे मैथिली माने महान, महान माने अगाध ओ अगाध माने गोनू झा। आइ हमर बज्जिका लोकसाहित्य भारतीय लोक साहित्यकोष (भाग५९ नई दिल्ली) क ज्ञानवर्द्धन क रहल अछि।

छोटछीन प्रश्नक विस्तृत आत्मकथासँ आचार्य मौन बेस गंभीर भ गेल छलाह। मेज पर चाय आवि गेल। सहज भेने हमर दोसर जिज्ञासा छलमैथिली सेवाक लेल अहाँके जे जतेक राष्ट्रीयअन्तर्राष्ट्रीय सम्मान देलगेल ओहिसँ अहाँ कतेक सन्तुष्ट छी?

ओना हम पुरस्कारक लेल नहि लिखैत छी, कियेक त आब ओ जोगारु संस्कृतिक अंग वनि गेल अछि। मैथिलीक सेवाक सन्दर्भमे विद्यापति सेवा संस्थान, अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन आदि सँ हमरा दरभंगा तिरुपति (भारत) ओ काठमाण्डू (नेपाल) में क्रमशः मिथिला विभूति, मिथिला रत्न, ओ मिथिलाश्रीसँ अलंकृत कएल गेल। ओहिसँ आत्मबोध भेल। नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानक सभाघर (काठमाण्डू) मे नेपालक राष्ट्रपति माननीय डा. रामवरण यादवद्धारा प्रदत मिथिलाश्री एवं साहित्य अकादमी दिल्लीद्धारा आयोजित हैदरावाद (आन्ध्र) सभागारमे डा. गोपीचन्द नारंगक हाथे मैथिली अनुवाद पुरस्कार (२००५ ईर२००६ ई.) हमर जीवन यात्राक महत्वपूर्ण उपलब्धिक स्मरणिय क्षण छल। ओना तँ नेपालक वीरगंज, जनकपुर, सिरहा, राजविराज आदिसँ सम्मान सेहो प्राप्त भेल छल, जाहिसँ उत्साहक अपेक्षा अपन दायित्वक बोध भेल।

हमर तेसर जिज्ञासा छल मैथिली लोकगाथाक सन्दर्भमे डा.जाँर्ज ग्रियर्सन ओ डा. मणिपद्मक वाद अहाँके गंभीर अध्येता मानल जाइत अछि। अहाँ एकरा कतेक धरि स्वीकार करैत छी? आचार्य मौन गंभीरताक संग उत्तर देलनि। डा. जार्ज ग्रियर्सनके भाषा सर्वेक्षणक क्रममे मैथिलीक किछु लोकगाथा हाथ लागि गेलनि, जकरा ओ भाषा वैज्ञानिक दृष्टीये देखलनि। हुनक संकलित सलहेस, दीनाभद्री ओ नेवारक वैह लोकगाथा आई आधारभुत एवं अपरिहार्य सामग्री बनल अछि। मुदा डा. मणिपद्मक संकलन ओ अध्ययनक दृष्टी भिन्न छलनि। ओ मैथिली गाथा रत्न सभके बटोरि मैथिलीक अपन उपन्यासक रम्य कथाभूमि बनौलनि।

मैथिली लोकगाथाक संदर्भमे हमर दृष्टी अहिसभसँ भिन्न अछि। हम लोकगाथा सभके समग्रतामे प्रस्तुत करबाक अभियानमे लागि गेलहुँ। फलतः साहित्य ओ संस्कृतिक संदर्भमे राजा सलहेस, लोरिक ओ दीनाभद्री प्रकाशित अछि।

अर्थात ओहिसँ सन्दर्भित अध्ययन अनुशीलन सभके नव नव धरातल पर मूल्यांकित कयल गेल। अहिसँ प्रेरित भ नेपालोसँ सेहो सलहेस एवं दीनाभद्रीक प्रकाशन भेल। मुदा मैथिलीक मुल गाथाक प्रकाशन अनिवार्य अछि। सम्प्रति हम लवहरि कुवाहरिक गाथानुशीलन कयने छी। साहित्य अकादमी दिल्लीक सौजन्यसँ हमर मैथिली लोकगाथा अनुशीलन (२०१५ ई.) मे प्रकाशित अछि।

साक्षात्कारक्रमक अल्प विरामक अवधिमे आचार्य श्रीमौनसँ बहुत किछु जानल तथापि एकटा हमर जिज्ञासा भेलअहाँ कोन कोन विधामे लिखलहुँ आ ककरा अपन प्रिय विधा मानैत छी?

आचार्य मौन तत्परताक संग जनौलनिप्रायः प्रत्येक रचनाकारक वीज कविताक रम्य भाव भूमिमे अंकुरैत अछि। उम्र ओ अनुभव बढला बाद अन्यान्य

विधामे छिडियाबैत एक विधा विशेषमे केन्द्रित भ जाइत अछि। लेखन यात्राक आरम्भमे हमहुँ कविता, कथा, नाटक आदि लिखलहुँ मुदा हमर प्रिय विधा अछि आंचलिक कथा रिपोतार्ज। फनीश्वरनाथ रेणुक आंचलिक कथाउपन्याससँ कनेक भिन्न हमर आँचलिक कथा रिपोर्ताजकें धर्मयुग (मुम्बई) क सम्पादक धर्मवीर भारती प्रोत्साहित कयलनि। फलतः धर्मयुगमे हमर कैक्टा सचित्र आंचलिक कथा रिपोर्ताज शैलीमे प्रकाशित भेल। ओ समकालीन लहर (अजमेर) उत्कर्ष (लखनऊ) साप्ताहिक हिन्दुस्तान (दिल्ली) ज्ञानोदय (कलकता) आदिमे प्रकाशित भ पाठक लोकनिके एकटा नव स्वाद भेटलनि, ओ सभटा सुनसरी (१९७७ ई.) में संकलित अछि।

तहिना मैथिलीमे सेहो उत्साहित भ आंचलिक कथाशैलीमे लिखल रिपोर्ताज सभ मैथिली (विराटनगर) ओ मिथिला मिहिर (पटना) मे प्रकाशित अछि। आब ओ सभ ब्रह्मग्राम (दरभंगा, १९७२ ई.) एवं वाल्मीकीदेशमे (महनार २००५ ई.) मे संकलित अछि। मैथिलीमे रेडियो नाटक सभ आकाशवाणीसँ प्रसारित एवं मेरे रेडियो नाटक (१९९१ ई.) में संग्रहित अछि। हिन्दी, मैथिली ओ नेपालीमे हमर किछ कथा सभ मैथिली कथाकोश (डा. मेघन प्रसाद) में विवेचित अछि। साहित्य, संस्कृति इतिहास ओ पुरातत्व विषयक निबंध लेखनमे अग्रगण्य श्रेणीमे स्थापित भेलहुँ। (मैथिली साहित्यक इतिहास, डा..श्रीश (दरभंगा,पृः.३९७)। मुदा आंचलिक शैलीमे रिपोर्ताज लेखन हमर सर्वप्रिय विधा अछि।

चन्द्रेश जी बीचमे एकटा जिज्ञासा राखि देलनिएतेक लिखवापढबाक पलखति कोना भेटैत अछि ?

आचार्य मौन बड सहजतासँ कहलनिहमरा सभके चौबीस घण्टा समान रुपसँ प्राप्त अछि। आब अहाँ सुति क विताउ अथवा जागि क, गपटीवी, मटर गस्ती आदिक संग बिताउ आकि किछ रचनात्मक काज करु। जीवन अमुल्य अछि। अतः ओकर एक एक पलके राहुल सांकृत्यायन ओ महात्मा गांधी जँका सदुपयोग करु। रचानात्मक क्षेत्रमे दुनु विभूति अपन उत्कर्ष पर छलाह। हुनक कृतित्वे हुनका महान बनौने अछि। सेवानिबृत पश्चात हमर दैनिक कार्य नियमित रुपें अनुशाशित बनल अछि। हमर कहब अछि जे ज्ञानक सागर अथाह ओ चिन्तनक क्षितिज अनन्त अछि। तखन ओहि अथाह ओ अनंतके वामन वनि साधवाक प्रयास करु।

अगिला जिज्ञासा छल भारत ओ नेपालक बीच अन्तःसम्बन्धक विषयमे किछु कहल जाय, किएक तँ अहाँ प्रायः पचास वर्षसँ अहि सम्बन्धक गवाह छी।

नेपालक पहिल पदयात्रा हम १९५२ ई.(हाई स्कूलक छात्र)मे कयने छलहुँ। गामघरमे मोरंगक जादुटोनाक आनन्द पसरल छल। नेपालक प्रवास (१९६३-७३ ई) मे ओहि मोरंगक खोजमे लागि गेलहुँ। आइ दुनू देश इतिहास, भूगोल, कला संस्कृति, नायाँ साहित्य, रोजीरोटी, उद्योगवाणिज्य आदिक सन्दर्भमे एक दोसराक लेल अपरिहार्य ओ अभिन्न वनल छथि। नेपालक पशुपतिनाथ ओ भारतक विश्वनाथ, नेपालक जानकी ओ अयोध्याक राम, लुम्बनीक बुद्ध ओ मगधक अशोक सम्राट, सिमरौनगढक हरिसिंह देव ओ मिथिला मधेशक विद्यापति अहि अन्तर सम्बन्धके सूत्रबद्ध करैत अछि। हालक भूकम्पसँ त्रसित, नेपालके जे सहोदरासं सद्भाव प्राप्त भेल ओ अद्धितीय सिद्ध भेल अछि।

अन्तिम प्रश्न छलवर्तमान पीढीक लेल सन्देश।

सन्देश तँ कोनो महारथी, सिद्ध सन्तमहात्मा एवं ज्ञानवृद्ध आचार्यसँ लेव श्रेष्कर होयत। हम तँ अपनाके एकटा जनसाधारण बुझैत छी तथापि सन्देश अछि जे कोनो व्यक्तिके वाह्यक अपेक्षा हुनक अन्तःहक साक्षात करु आर ओहिसँ प्राप्त ज्ञान नवनीतके मुक्त हस्ते वितरित करु, यैह जीवनक सार्थकता थिक।

धन्य छथि ज्ञानवृद्ध आचार्य श्री मौन। तृप्त भ गेलहुँ।

दरभंगा



'मिथिलाक सीमा झासँ वागमतीधारि होएवाक चाही' भाषा तथा संस्कृतिविद् डा.मौन

–श्यामसुन्दर शशि

डा.प्रफुल्लकुमार सिंह 'मौन' मैथिलीक अध्येता लोकनिक वास्ते नव नाम नहि थिक। सत्तरके दशकमे विराटनगरके केन्द्र बना ओ मैथिलीक ऑतरपॉतरके बढौलनि। कोशीस वामगमतीक बीचमे सिमीत मैथिलीक कैनभासके झापा आ मोरंगधरि घुसकौलनि। पूर्वक नेपालीय मैथिलीक खोजी कार्यमे हुनक अहम योगदानके केओ विसरि नहि सकैछ। जहन जनकपुरके केन्द्र बना डा.धीरेश्वर झा 'धीरेन्द्र' स्कूल कलेजसंगहि मैथिलीके जन जनस' जोडवाक अभियान चला रहल छलाह ताहि अवधिमे डा.मौन पूर्वमे छिडिआएल आ भोतियाएल मैथिलीक साहित्य रुपि मोती चूनि रहल छलाह।

२० जनवरी १९३८क विहार राज्यक समस्तीपुर जिल्ला अन्तर्गत हसनपुर गाममे जन्मग्रहण कएनिहार प्रफुल्लकुमार सिंह हिन्दी विषयमे एम ए आ विद्या- वारिधी कएलाक वाद सन् १९६३मे विराटनगर बजाओल गेलाह। महेन्द्र मोरंग कलेजक हिन्दी प्राध्यापकके रुपमे। ओ एहि कालेजमे सन् १९६३स' ७५धरि काज कएलनि। हुनक प्रेरणा आ संयोजनकारी भूमिकाक प्रतिफल छल जे सन् १९७०मे विराटनगरमे मैथिली साहित्य परिषद गठन भेल आ परिषदके मुखपत्रके रुपमे १९७०हिस 'मैथिली नामक त्रैमासिक पत्रिकाक प्रकाशन सेहो सुरु भेल। डा.मौनके शब्दमे हुनक एहि अभियानके सर्वश्री लक्ष्मण शास्त्री, गणेशलाल कर्ण आ पूर्व प्रधानमन्त्री मातृका प्रसाद कोईराला सदृश्यक भाषा अनुरागी लोकनि भरपूर सहयोग कएने छलनि। मात्र आठ अंकधरि(जाधरि मौनजी विराटनगर रहलाह) प्रकाशित भेल मैथिली त्रैमासिकमे डा. रामदेव झाक नेपालक शीलोकीर्ण मैथिली गीत (शीलालेख आदिमे अंकीत मैथिल गीतसभक संकलन), स्वयं मौन द्वारा लिखित नेपालक मैथिली साहित्यक ईतिहास, पंण्डित लक्ष्मण शास्त्रीक धर्मराज युद्धिष्ठिर महाकाव्य, थारु लोकगीतआदिक प्रकाशन भेल। मैथिली त्रैमासिकमे प्रकाशित ई ग्रन्थसभ पॉछा पुस्तकाकार रुपमे सेहो बाजारमे आएल। ई ग्रन्थसभ मैथिली साहित्यक अमूल्य निधीसभ अछि।

खासक मैथिली आ थारु भाषा बीचक अन्तरसम्बन्ध, थारु लोक गीत एवं लोक जीवनपर मिथिला मैथिलक प्रभावआदिक विषयमे कएल गेल हुनक अनुसंधान आजुक परिस्थितीमे विशेष महत्वक अछि। हुनक दावी छनि जे थारु भाषा साहित्य एवं जीवन शैली मैथिलीस' मिलैत अछि। ओ ईहो दावी करैत छथि जे पूर्वक थारुलोकनिद्वारा बाजल जायवला भाषा मैथिलीएक बोली अछि।

२०६६साल चौत ११गतेस' १४गतेधरि जनकपुरमे आयोजना भेल मिथिला महोत्सवमे सहभागी होवए आएल डा. प्रफुल्ल कुमार सिंह मौनसंग श्यामसुन्दर शशिद्वारा कएल गेल बातचितक प्रमुख अंश

प्रश्न : अपन नेपाल आगमनके प्रशंगमे की कहबै ?

उत्तर : हम हिन्दीमे एमए आ डिलिट कएलाक बाद कामक खोजीमे रही। एहि बीच विराटनगरमे महेन्द्र मोरंग कलेज खुजलै। मौका भेटल। काज करए वास्ते आवि गेलहु।

प्रश्न : विराटनगरके करीव १२वर्षक प्रवासके कोना मूल्यांकण करैत छी ?

उत्तर : आह्लादक। जहन हम २६वर्षक छलहु तहन विराटनगर आएल रही। तात्पर्य जे सर्वाधिक उर्जावान समय हम नेपालमे बिताएल अछि। युवा रही, काज करबाक जोश रहय आ सहृदयी संगीसभक सहयोग सेहो। संगहि मातृकाप्रसाद कोईराला सश्यक राजनितीक वरदवृक्षक छाह सेहो छल। एहि बारह वर्षमे हम जतेक घूमल अछि। जतेक पढल अछि आ जतेक गुणल अछि तकर वर्णन नहि क सकैछी। एक शब्दमे कही त हमर विराटगरमे बितल १२वर्ष हमरो वास्ते आ मैथिलक वास्ते सेहो फलप्रद अछि।

प्रश्न : अपने अपन विराटनगर प्रवासक उपलब्धीके ठोस रुपमे वर्णन करए पडए त कोना करबै ?

उत्तर : कहवे कएलहु, हमर विराटनगर प्रवास दुनू रुपे लाभप्रद रहल। एहि उपलब्धीके ठोस रुपमे कहल जाय त नेपालक मैथिली साहित्यक ईतिहास, नेपालक शीलोत्कीर्ण मैथिली गीत संग्रह, लक्ष्मण शास्त्रीक धर्मराज युधिष्ठिर महाकाव्य, थारु लोकगीत आदिक प्रकाशनके मैथिली साहित्यक अध्येतालोकनि विसरि नहि सकैत छथि। संगहि मिथिला आ मैथिलीक ईतिहास, भूगोलके खोजी कएल। एहि क्षेत्रक शासक लोकनिक गढ, लोकनायक लोकनिक ऐतिहासिक आ पुरातात्विक निसानी सभक खोजी सेहो कएल जे अत्यन्त महत्वक अछि।

प्रश्न : मिथिलाक लोकनायक सलहेसके विषयमे अपनेक काज प्रमाणिक कहल जाईत अछि। अपने सलहेसके कार्यकालके विषयमे की कहैत छीऐ?

उत्तर : हमरा जनैत सलहेसके कार्यकाल पॉचम वा छठम् शताव्दी होएवाक चाही। दोसर बात सलहेसके विषयमे जहल जाईत अछि जे ओ राजा छलाह सेहो सत्य नहि कारण ओ लडाका छलाह। हुनका मिथिलाक सिमान्त प्रहरी कहव वेसी नीक होएत। बेसीस 'बेसी ओ तत्कालीन राजाक सेनापति भ सकैत छथि। सलहेस गाथास' सम्बद्ध फुलवारि पतारि, महिसौथा, मानिक दहआदिक पुरातात्विक आ ऐतिहासिक अध्ययनस' सेहो ई बात सावित भ सकैत अछि। ओहि समयके जे काला पोलिस(लयचतज दयिअपभम उयष्िदृभॉके वर्तन आदि प्राप्त भेल अछि ओ सभ प्रमाणित करैत अछि जे सलहेस छठ्म शताव्दीक छलाह।

प्रश्न : यदि सलहेस राजा नहि छलाह त हुनक जे लोक तस्वीर प्राप्त होईत अछि से हाथीपर चढल किए अछि। कारण सेना त घोडापर चढैत अछि?

उत्तर : अहॉक जिज्ञासा ठीक कारण सामान्यतया सेना वा सेनापति घोडा पर चढैत छथि मुदा भेल ई छै जे जहन दुसाधलोकनि वा अन्य मिथिलावासी लोकनि सलहेस के राजा मानए लगलाह त हुनका घोडास उतारि हाथीपर बैसा देलकनि। अपने सलहेस गाथा नीक जकॉ देखू हुनकर मिथिलाक सीमान्त प्रहरीक रुपमेमात्र वर्णत भेल छनि। विभीन्न ईतिहास आ लोकगाथासभमे वर्णत भेल अछि जे सलहेस कंचनगढके राजाक सेनापति छलाह। हुनका मातहातमे सातसय प्रहरी छल।

प्रश्न : छठम शताब्दीमे सलहेस सदृश्यक लोकनायकके जन्म होईत छैक आ विद्यापति हुनक चर्च कतहु नहि करैत छथि जहन कि विद्यापति तेरहम शताब्दीमे गप्तवासमे नेपाल आएल छलाह। ई कोना भ सकैत छैक?

उत्तर : अहॉक सवाल जायज अछि मुदा अहॉके ईहो बुझल होएवाक चाही जे विद्यापति कोनो खुसी मनावए किंवा आम जनस 'भेटघाट करवा वास्ते पुरादीत्यक दरवारमे नहि आएल छलाह ओ अपन मित्र शिवसिंहके पत्नी लखिमादेवीके संरक्षण देवएवास्ते एतए आएल छलाह। एहना अवस्थामे विद्यापतिके आम जनस' थोर सम्बन्ध छलनि। एतएधरि जे ओ राजा पुरादित्यस' सेहो बहुत कम भेटैत छलाह। एहना अवस्थामे हुनका सलहेसके विषयमे जानकारी नहियो भ सकैत छनि।

प्रश्न : मुदा विद्यापति नेपाल प्रवासके क्रममे लिखनावली, शैवसर्वस्व सार, मदभागवत गीताक अनुवाद आदि एक दर्जनस' वेसी पुस्तक लिखलनि। सलहेस कोना छूटि गेलाह ?

उत्तर : अहॉ ठीक कहल ओ नेपाल प्रवासक क्रममे एक दर्जनस' वेसी पुस्तक रचना कएल मुदा सभके सभ पुस्तक यात भक्ति रसक अछि कि त विरहके पदसभ अछि। जहॉधरि लिखनावलिक सवाल अछि त ओ अपन आश्रयदाता राजा पुरादित्यक वास्ते लिखने छल। लिखनावलि राजकाज संचालन सम्बन्धी पुस्तक अछि।

प्रश्न : प्रशंग बदली। अपने थारु भाषाके मैथिलीक वोली कहैत छिऐ? कोना प्रमाणित करवै एहि बात के?

उत्तर : देखू पूर्वक थारुलोकनिक मुखाकृति मंगोल जकॉ छनि, रंग आदिवासी जकॉ आ संस्कृति मैथिलीक छनि। ओसभ अपनाके शिव पार्वतीक सन्तान मानैत छथि। जहनकि मध्यक थारु लोकनि अपनाके रामजानकीक वंशज मानैत छथि आ अवधी भाषा बजैत छथि। पश्चिमके थारुलोकनिक भाषा राणा थारु छनि। एहि प्रकारे हम कहि सकैत छी जे थारुसभक विशेषता अछि जे ओ जाहि ठाम रहैत छथि ओहि ठामक भाषा आ संस्कृतिके अवलम्बन करैत छथि। रहल बात भाषाक त अहॉ थारु भाषाक वाक्य वनावटिस' ल लोकगीतसभके देखि लिय। सब मैथिली जका अछि।

प्रश्न : नेपाल एखन राज्य पुर्नसंरचनाक दौरस' गुजरि रहल अछि। मिथिला राज्यक बात सेहो उठि रहल छैक। अपनेक विचारमे मिथिला राज्यक सीमाना की होएवाक चाही?

उत्तर : देखू राज्य पुर्नसंरचनाक सवाल राजनितीक अछि। हम राजनितीक बात नहि कहव मुदा सैध्यान्तिक रुपस कहल जाय त राज्यक सीमांकनके बहुत रास आधार अछि जाहिमध्य भौगोलिक आधार जाहिमे नदी नाला,पर्वत, षि, भूमि, पाद प्रदेश आदि अवैत अछि। तहिना ऐतिहासिक पोखरी, गाछी, ताल, तलैया आदि आ ऐतिहासिक, धार्मिक वा चमत्कारिक स्थलआदिक आधारपर राज्यक सीमांकन होईत अछि। जेना देखू मिथिला राज्यक प्रष्ट प्रारुप हमरालोकनि देखि सकैत छी।

प्रश्न : अपनेक हिसावस' मिथिला राज्यक सीमाना की होएवाक चाही?

उत्तर : यदि सांस्कृतिक आ भाषाक रुपस' कहल जाय त मिथिलाक सीमा पूर्वमे महानन्दा तिष्ठा(झापा)स' पश्चिममे वागमतीक बीच होएवाक चाही। कारण एहि बीचमे मैथिली भाषीक संख्या सर्वाधिक अछि आ मिथिलाक पुरान परम्पराक सुगन्धि चहुदिस प्राप्त क सकैत छी।

श्यामसुन्दर शशि, जनकपुरधाम



महनारक सन्तक संग किछुक्षण

–राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर'

पता नहि कोन सन्दर्भ रहैक, विवाहपञ्चमी वा रामनवमी अथवा आने कोनो प्रसंग, प्रो. मौन सपत्नि हमरा ओहि ठाम आएल रहथि। शायद १९७५/७६क गप्प भऽ सकैछ। ओ माय आ पत्निक संग आएल रहथि। हं, प्रायः मंदिर सभके दर्शन करबाक हेतु। तीर्थाटन सन्दर्भ।

तहिये हुनक पत्नि हमरा आग्रहपूर्वक कहने रहथि महनार अबियौ। प्रो. 'मौन' टटके महनारमे 'काज' ज्वाइन कएने रहथि। हम अएबाक बात कहने रहियनि। एहि विच अनेको प्रसंगमे दर्जनों बेर हम सभ भेटलहुँ। नित्य प्रायः दूरभाष सम्वाद होइत रहल। मुदा हम महनार नहि जा सकलहुँ। बादमे ओ अघेत्तहि बसि गेल छलाह।

१५ अगस्त २०१५ कऽ जखन एकाएक सूर चढ़ल आ भाइ चन्द्रेश आ डा. बुचरु पासवानक संग महनार पहुँचलहुँ त मोन उद्वेलित भऽ गेल। एत, आब' मे हमरा चालिस वर्ष लागि गेल! ह, केहन हमर नियार अछि। पटना त सालमे एक आध बेर टहलिए अबैत छी, मुदा पटनासं ४० कि.मि. क दुरी परक ई नगर हमरा लेल पहुँचब पराभव भऽ गेल छल।

सांच बात त ई अछि एहि चालिस वर्षमे डा. मौनसं हमर सम्पर्क निरन्तर बनल रहल अछि। कहियो हुनक खगता हमरा महशूस नहि भेल। जखन खोजल तखन हाजिर, से जनकपुर, काठमाण्डू, सिरहा, राजविराज, लहान कतौ होइक। शायद तएँ घरमे जा सम्पर्क करबाक खगता टरैत गेल।

मुदा चूक त भइए गेल। हमरा जनिका लेल जएबाक छल, तनिका आगां जाएब जरुरी रहए, आ तएँ आइ जखन हम मौन निवास पहुंचौत छी हमर एहि उच्छवासक प्रत्युत्तरमे जे 'हम अन्ततः चालिस वर्षक नियारक वादे आइ एत्त आबि सकलहुँ' ओ भावुक होइत बजलाह हं, अएलहुँ त मुदा जे बरोबरि अएबा लेल कहैत रहलीह से जखन अहां अएलहुँ त नहि छथि।

हम एक क्षणक हेतु विचलित भऽ जाइत छी। ई सत्य थिक हमर ई यात्रा वहुत किछु गमा देलाक बाद भेल अछि। ओ वात्सल्य आ प्रेम भावक आगां ई निरस उपस्थितिक की अर्थ! मीठ चाहक संग मीठगर पकवान जेना तीत लाग' लगैत अछि। जं कि हमरा संग दू गोट सहयात्री बन्धु लोकनि छथि, हमर भावुकता आ एकग्रताके खण्डित हएवामे सहायक बनैत छथि। हुनका सभक जिज्ञाशामे ओझरायल डा. मौन बेसी निजी सन्दर्भमे डुबि नहि सकलाह। हम हल्लुक होइत अपन गप सपकें जल्दी समाप्त करबाक आग्रह करैत छियनि। हमरा एहि ठामसं दरिभंगा आ तकरा बाद जनकपुर। नमहर सफर छैक। तखन निजी गाड़ी रहने आशा अछि समय पर घर पहुंचिए जाएब।

प्रकाश्य सामग्री सभ लैत छी। डा. मौनक नव प्रकाशित पुस्तक सभ सेहो हुनका हाथें प्राप्त करैत छी। समय बड़ छोट भेटल ४५ मिनट मात्र। मुदा ततबे मे हम बहुत किछु प्राप्त कऽ चुकल छी। प्रो. 'मौन'क साधनापर 'आंजुर'क नवका अंक आबि गेल अछि। लगैए दोसरो खण्ड लाबही पड़त। पता नहि कहिया...!

आइ हमरा मौन जी कोनो निर्जन बनमे तपस्यारत् सन्त जकां भावविहिन, ध्यानमुद्रासं जागल बुझाइत छलाह, जे अपन शिष्य सभकें जीवनक गुरकिल्ली सभसं अवगत करा रहल हो।

जनकपुरमे भेटैत ठहाक्का लगबैत, बातबातमे अर्थकें सोझरबैत अपनो आ दोसरोकें प्रफुल्लित करैत डा. मौनक ई शांत मुद्रा बोधिसत्व प्राप्तिक बाद बुद्धक गुरु गंभीर मुद्रा जकां तं ने भऽ गेल छन्हि। सांच बात त ई छैक बुद्धक जीवन दर्शनक प्रभाव हिनको कम नहि पड़ल छन्हि। आ तएँ राहुल श्रीभद्र बनल ओहु महासागरमे कम नहि हथोरिया देलनि।

जे से हम मैथिलीक स्वार्थीलोक, हमरा शांत आ गंभीर मुद्रा नहि चाही। हमरा अनुकूल दानी, अपन सभ एकाकीक पीड़ाकें पिबैत अनका हेतु ठहक्का मार' बला 'मौन' चाही। आ से ई रहलाह सभ दिन। सभ दिन मैथिली लोक साहित्यक भेद, प्रभेदक पाछां बेहाल रहलाह। नेपालक पहाड़, थरुहट, अभिलेखालय आ साहित्य भण्डारकें उद्धारमे दिन राति एक कएलनि। मुदा तैयो की भेटलनि! कोनो तीरंदाज, चेला चपाटीके बलपर बाजी मारि लेलकनि आ ई छुच्छे कागजक सिंटल पन्नाके छातीसं भिरौने हा नेपाल, हा मैथिली' रटैत रहलाह।

एह, जखन से नहि तं ई सन्त कोना होइतथि। महनारक प्रोफेसर्स कॉलोनीमे सभसं उत्तरबारी कातमे एकांत साधनामे रत्। दुत, सेहो कहां रह' देलकनि। अपन एकांत, ध्यान मग्न तपस्याक हेतु एहि ठामक चुनाव कएलनि से कहांदन जंगलक शांत, साधनास्थलकें सिआर, हुडारक खौंजाहटि विखण्डित करैत रहैत छनि। जं एतेक पीलनि तं ओहो पचाइए लेताह आ अपन साधनाक निरन्तरतासं

हमरा सभकें मार्गदर्शन करैत रहताह।

चन्द्रेशक संग इशाराबाजी चलि रहल अछि अर्थात् समय भऽ गेल, निकली। से हाथ जोड़ि विदा लैत छी पुनः एक गाही पुस्तक लेने विमोचन समारोहमे भेटबाक बचनबद्धताक संग।

